रचयिता और प्रकाशक—

काव्यकलाभूषण, कीर्त्तनकलानिधि

कविरत्न पं० राधेश्याम कथावाचक

बरेली.

चौथी बार ४००० | सन १९२५ | मूल्य बारह आने

प्रकाशक-
पं० राधेश्याम कथावाचक
अध्यक्ष-श्रीराधेश्याम पुस्तकालय
बरेली,
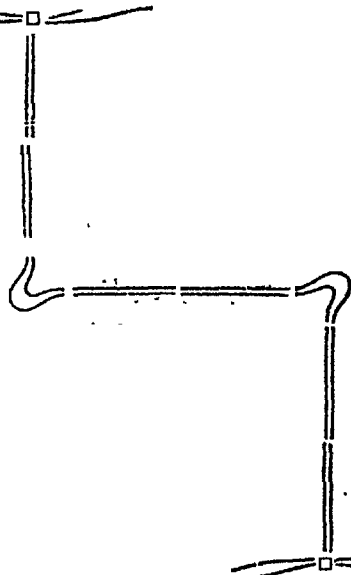
मुद्रक-
पं० रामनारायण पाठक
श्रीराधेश्याम प्रेस
बरेली.

भूमिका
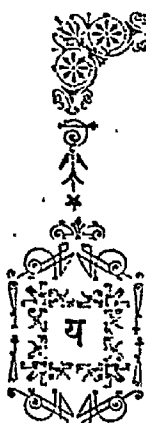
यह असार संसार विचार कर देखने से अपार व्याधियों का भण्डार है। जो इसको सत्य और अपना मानते हैं वे सार असार को नहीं जानते। वे रोते हैं और जिस तरह अपनी चौरासीलक्ष योनियाँ बेकार खो दीं–उसी तरह इस मुक्ति-निसैनी–रूप अमूल्य मनुष्ययोनि से भी हाथ धोते हैं। और जो सज्जन हैं, जिनके पिछले पुण्यों का समूह उदय हुआ है, वे इसमें से सार वस्तु को चुनकर अपने परम पदको प्राप्त होतेहैं।

निजस्वरूप का आनन्द तभी प्राप्त होता है कि जब अन्तःकरण शुद्ध करलिया जाय। और वस्तुतः देखा जाय तो अन्तःकरण शुद्ध करने का उपाय केवल हरिभजन है। कुछ माला ही सटकाने को भजन नहीं कहते। हाथ में माला को रस्सी की तरह बट रहे हैं, जुबान से मेलट्रेन छोड़ रक्खी है और मन कलकत्ते के बजाज़खाने में कपड़ा ख़रीद रहा है। इसका नाम भजन नहीं है। किसी कवि ने कहा है–

माला फेरत युग गया, मन का मिटा न फेर।
कर का मनका छांड़ के, मन का मनका फेर॥

भजन इसको कहते हैं, कि अपने प्यारे श्रीकृष्णचन्द्र का मन में ध्यान करते हुए, प्रेम सहित जिह्वा से "हरे कृष्ण गोविन्द नारायण वासुदेव" उच्चारण करते हुए, एक एक गुरिया बढ़ायी जाय।

यही भजन है, यही मुक्ति का साधन है। और इसी भजन का एक अङ्ग यह भी है कि "उसके गुणों का गायन करना–उसके प्रेममें मग्न होकर उसीका कीर्त्तन करना"। देखिये, भगवान् ने नारद से स्वयं कहा है–

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद॥

फिर, रामायण में भिलनी के प्रति नवधा-भक्ति जो वर्णन की है उसमें भी कहा है-

"चौथि भक्ति मम गुणगण, करै कपट तज गान"

तथा भागवत में भी लिखा है-

श्रवणं, कीर्त्तनं, विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्।
अर्चनं, वन्दनं, दास्यं, सख्यमात्मनिवेदनम्॥

हाँ! समय के प्रभाव से अब न वे विशेष भजनानन्दी नज़र आते हैं और न वह भजन ही देखनेमें आता है। अब तो जीवों का समय "लाउ लाउ" "खाउ खाउ" का स्तोत्र रटते ही व्यतीत होता है।

जिस भजन और प्रेम के कारण स्वयं श्रीभगवान् ने 'प्रह्लाद' की प्रतिज्ञा-पूर्ति के वास्ते खंभ फाड़ कर दर्शन दिया था, जिस भजन और प्रेमके कारण एक छोटेसे बालक "ध्रुव" ने अचल पदवी पाई थी-आज न वह भजन है न वह प्रेम!

एक बिचारा 'गायन' ही शेष रह गया था। सो उसकी भी यह नौबत आगई कि नीचों ने ग्रहण कर लिया, और उच्च कुल वालोंने "यह तो कलाउँत और मिरासियों का काम है" कह कर उसका तिरस्कार कर दिया।

भाइयो! इस बातको झूठ न मानो, क्योंकि मुझको भी इस बातका इत्तफ़ाक़ पड़ चुका है। अर्थात् जब मेरे पिताने मुझे इस गायन, हारमोनियम, कथा-प्रकरणमें डाला था तो मेरे पिता से अनेक इष्ट मित्र कहा करते थे कि-'पण्डित जी, लड़के को यह क्या 'गाना बजाना' सिखलाते हो! इसको तो बी० ए०—एम० ए० बनाओ'।

हा! नाद तेरी यह दुर्दशा कि अब तेरा नाम 'गाना बजाना' भी घृणायुक्त समझा जाता है! समय की बलिहारी! मैं आज प्रथम उन उच्चकुल वालोंसे निवेदन करता हूं कि उनकी बड़ी भूल है जो गाने बजाने को बुरा और नीच-कर्म्म बतलाते हैं। शास्त्र कहता है--

"ब्रह्मा के चारों मुख से चार वेद निकले और वेदों से आयुर, धनुर, गान्धर्व, स्थापत्य नामक चार उपवेद निकले"।

अन्य उपवेदों की बात छोड़ कर आज हमको 'गान्धर्व' ही से मतलब है। जब यह सिद्ध है कि गान्धर्व 'उपवेद' है तो हम सवाल करते हैं कि, क्यों जी, वेदों का पठन-पाठनादि कार्य्य कौन करते हैं, उच्चकुल वाले द्विज या शूद्र ? (त्रयोवर्णाद्विजातयः)। यह तो हुआ तर्क, अब स्वयं भगवान् क्या कहते हैं ? सुनिए—

"वेदानां सामवेदोऽस्मि"

इसीलिये हम कहते हैं कि गायनको निषिद्ध न बतलाओ। जिस तरह ईश्वर सर्वव्यापक है उसी तरह सप्तस्वर भी सर्व देशों में समान व्यापक हैं। नहीं, नहीं, वरन् ईश्वर ने भी सृष्टि स्वर के ही बल से रची है। इसलिए गायन (सप्तस्वर) माननीय हुआ।

अच्छा, गाना तो तय हुआ, अब 'बजाना' को देखिये। यह बात सर्वसाधारण जानते हैं कि बिना आधारके कोई काम ठीक नहीं होता। इसीलिये नारद ने वीणा धारण की है, और इसीलिये वाद्य (साज़) रक्खा गया है।

गायन से प्रेम होता है, प्रेमसे अन्तःकरणशुद्ध होता है, अंतःकरण शुद्ध होने पर महात्माओंके वचनों पर अमल होता है, महात्माओं के वचनों पर अमल होने से जीव मोक्षको प्राप्त होता है।

अब रही 'मीरासी कत्थक' वाली बात, सो यह तो हमारी आप की ग़लती से ऐसा हुआ। वह रत्न जो वास्तविक रत्न है कर्मवश अथवा कालवश निषिद्ध जगह चला गया तो क्या रत्न नहीं रहा ? किसी उर्दू कवि ने एक शेर कही है—

खाक होकर आबरू ज़ेरे फ़लक जाती नहीं।
लालकी मिट्टी में मिलकर भी चमक जाती नहीं॥

अस्तु, वह वास्तविक रत्न ही है और उसकी क़द्र करना चाहिये। देखिये, सोचिये, विचार कीजिये कि आपके छोड़ते ही गायन भी आप को छोड़ बैठा। आज उस गायन का जिसको मीराबाई इत्यादि प्रेम से गाते थे शूद्रों के मुख में पड़ने से रूपाँतर होगया। अब राग रागिनी तो कोई गाता ही नहीं है। अब तो लैला मजनूं शीरीं फ़रहाद, हीरारॉझा, इन्दरसभा, प्रभृति प्रभृति की धूम है। जिधर जाइये-

जिधर-देखिये-जिधर सुनिये-यही तान आरही है--"तोरी हलबल है न्यारी तोरी कलबल है न्यारी, तोरे नैनों की लागी कटरिया जान" इत्यादि इत्यादि।

मुझे इन गानों से शुरू ही से नफ़रत थी। विचारता था कि किस तरह यह गिरी हुई चीज़ उठकर अपने उच्च पद को प्राप्त हो। इतनेही में प्यारे श्रीकृष्ण की प्रेरणा से खयाल हुआ कि यदि इन भद्दे गानों की जगह हरि सम्बन्धी गाने बनें तो अच्छा हो। लय, ताल, धुन सब नाटक की हो, परन्तु भाव, रस, उद्देश्य नन्दनन्दन ब्रजराज की तरफ़ हो। कारण कि जब बालक का कर्ण-छेदन होता है तब उसके मुंह में मीठा खिला देते हैं। इसी तरह इन चटकीली तर्ज़ों का मीठा खिलाकर संसारी बन्दों का कर्णछेदन किया जाय अर्थात् उपदेश दिया जाय।

इन्हीं सब बातोंको सोचकर मैंने तुकबन्दी करना शुरू की। होते होते वह एक पुस्तक होगई। तब अपने इष्ट मित्रोंके आग्रहसे क्रमशः छपवानी शुरू करदी। वह पुस्तक यही "राधेश्याम विलास" है:—

जितनी मोहब्बत एक चक्रवर्ती नरेश को अपने सम्पूर्ण राज्य से होती है उतना ही प्रेम एक घसियारे को अपने खुरपे और जाली से होता है। जितनी उलफ़त एक महारानीको अपने ऐश्वर्य्यवान् बेटे से होती है उतना ही अनुराग एक चरखा कातने वाली को अपने भिक्षुक पुत्र से होता है।

पुस्तक में जिस तर्ज़ पर जो चीज़ लिक्खी गई है उसका वज़न भी वहीं लिख दिया है। यदि आप महानुभाव इस पुस्तक को पढ़कर कुछ भी भगवद्--गुण--गान के अनुरागी हुए तो मैं अपने परिश्रम को सुफल समझूंगा।

—०—

हरियाली तीज }
संवत् १९६२ }

विनीत--
राधेश्याम.

॥ ॐ ॥

मोहन !

बाल्यावस्था ही से तुम्हारी मोहिनी मूर्त्ति आंखोंमें बसी थी। सबसे पहले उस छोटे से "मोहिनफ्लूट" हार्मोनियम पर तुम्हारा ही गीत गाया था। १२ वर्ष के बालक ने वृन्दावन की साँकरी गलीमें तुम्हें पुकारा, तुम नहीं आये, तुम्हारी उसी निठुराई को देखकर बालक मथुरा चला आया। उसी रोज़ से तुम्हारी वंशी के बदले में धनुषवाण तुम्हारे हाथों में देकर मनका दूसरा संस्कार कर दिया।

बालक ने तुम्हें बिसारा पर तुम बालक को नहीं भूले, तुम्हारे उसी वात्सल्य के कारण यह तुम्हारी चीज़ —जो प्रायः उन्ही दिनों की कृति है— तुम्हें ही समर्पित की जाती है:-

हमारे तुम पियारे हो, तुम्हारे हम पियारे हैं।
"बुरे हैं या भले हैं" तुम हमारे हम तुम्हारे हैं॥

श्रावणी }
१९७४ }

राधेश्याम

भूल सुधार

प्रेस कर्मचारियों की ग़लती से
१५४ न० के गाने से जो चौथा
खण्ड शुरू होता है वह
नये पेज से नहीं
शुरू हुआ
है।
पाठक १५४ न० के गाने से इस
पुस्तक का चौथा खण्ड
समझें।

पहला खण्ड

[इस खण्ड में, ख़याल या लावनियाँ प्रकाशित हैं]

श्रीगणेश, वरेश, रक्षा कर हमेश, कलेश टार ।
सुर,सुरेश,दिनेश,शेषहु,वन्दि,करत महेश प्यार॥
चार-भुज-धारी,अघहारी, ब्रह्मचारि;दयावतार ।
भ्रष्टमति को श्रेष्ठ करिए, कष्ट नष्ट उमा-दुलार ॥

भिखारी आपके दरका हूं, दुखारी अपने घर का हूं ।
गणों के ईश नमामि नमामि, गुणों के ईश नमामि २ ॥
सुधारो 'राधेश्याम' वानी,करो काव्येश मेहरवानी ।

लावनी नम्बर, २

महादेव, महाराज, निखिल-भुवनेश्वर, श्रीअखिलेश्वर।
बाल चन्द्र है भाल सुशोभित, दीनदयालु, कृपालम् ॥
भूषणव्याल, व्याधि, भय, नाशक, काल-कराल, करालम् ।

मन्मथ मारम्—श्रीभूतेश्वर ॥ १ ॥

नीलकण्ठ, वाहन है नन्दी, डमरू हाथ विराजे।
तन मसान की भस्म रमी, गल मुण्ड-माल छवि छाजे ॥

नाथ काशी के श्री विश्वेश्वर ॥ २ ॥

आक, धतूरा, भांग चबावें, कर त्रिशूल शिर गङ्गा।
राम-नाम-मन लीन, नैन हैं तीन गौरि अर्धङ्गा ॥

महा महिमामय, श्रीगोपेश्वर ॥ ३ ॥

प्रणतपाल, सब हाल जानते जन का अन्तर्यामी।
स्वामी, वेग दया करिए, कहे राधेश्याम अनुगामी ॥

लाज रख लीजे, श्रीयोगेश्वर ॥ ४ ॥

लावनी नम्बर, ३

[इस लावनी में 'पवर्ग' का कोई अक्षर नहीं है,आदि अन्तमें 'ग' है]

गङ्गा का कर ध्यान, अरे नर! राखे जो तू चित चङ्गा ।
गाले यार गले से इतना, जय गंगा जय जय गंगा ॥
गौरीश्वर के शीश लसत है, गंग-धार हो अनुरागी ।
गरुअ दुःखनाशनयहजननी, ज्योतिसदाअगजगजागी ॥
गौर अंग सुन्दर तरंग है, किन यह सुघड़ गोद त्यागी ।
गाल चलाता है क्यूं ? गाले, गंगा का गुण खट रागी ॥
गर आनन्द चाहता है, तो छोड़दे गंगा तट दंगा ।

गाले यार गले से इतना० ॥ १ ॥

गृहस्थ है तो गंगा न्हाले, योगी है तो न्हा गंगा ।
गोरा है तो, काला है तो, रोगी है तो न्हा गंगा ॥
गुणी है तो दुर्गुणी है तो, संयोगी है तो न्हा गंगा ।
गर है सुखिया तो न्हा गंगा, सोगी है तो न्हा गंगा ॥
गाते, खाते, आते, जाते, रईस हो या हो नंगा ।

गाले यार गले से इतना० ॥ २ ॥

गधा यहीं घोड़ा होता है, जान रहे हैं लाखों लोग ।
गणिका यहीं गऊ होती है, कर देखो गंगा तट योग ॥

गोली दुःखों की गंगा-जल, गला दिया जाता है रोग ।
गञ्जनकलि-दुख, रञ्जनजन-चितनाशनसबलजगतकासोग ।
गज, रथ, धन, संसार, सकल सुख, कुछ न जाय तेरे संगा ।

गाले यार गले से इतना० ॥ ३ ॥

गाओ तो गंगा को गाओ, छोड़ो तो छोड़ो खटराग ।
गर करना है तो करलो चल, गंगा के तट से अनुराग ॥
गुनाह गर्दन से उतार दो, खोटों की संगति दो त्याग ।
गाई यह गंगा की गाथा, चेत चित्त जल्दी से जाग ॥
गायाअधर ख्याल 'राधे' ने, 'गा' का इधर उधर रंगा ।

गाले यार गले से इतना० ॥ ४ ॥
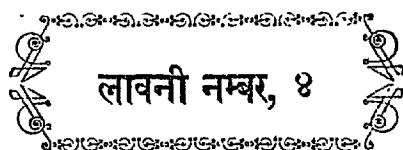
लावनी नम्बर, ४

आस लगी इमदादकी अकरम, इस्तिक़ाल आतम जानो ।
बासिर बाक़ी बना बास से, बेक़रार बरहम जानो ॥
पायमाल पाजी पारीदन पोच पलीद पिशेमां हूं ।
तबाह तर-दामन तरसिन्दह तरसनाक और तरसां हूं ॥
समरो सबतो सबूत बद है सबात ख्वाहां सनायां हूं ।
जानी जां बलब जाहिल जाया भुला जूद का जोयां हूं ॥

ख़ाशी ख़ावी ख़ायज ख़ामिल ख़ायफ़ ख़ायब ख़ासिर हूं ।
दर्दमन्द, दहक़ानी, दमग़ख़ुद, दवां ददाने दरदर हूं ॥
ज़ेल ज़नब से तर है तिसपर ज़लील पेशये ज़म जानो ।

आस लगी० ॥ १ ॥

रू-सियाह, रंजूर, रज़िल हूं रुसवा हूँ, रँजीदह हूँ ।
ज़हमत-ज़दह ज़बूनो,ज़हुरफ़,जिश्तेज़मां ज़ारीदहहूं ॥
सौगवार, सौदाई, साक़ित, सरापा सितम दीदह हूं ।
शनेअ,शिशदर,शूम,शक़ावत,शैदगी शोरशिमीदह हूं ॥
सज़ीर,सारिख़,सलब,सवारिफ़,सुक़रत जिस्म सरगद हूं ।
ज़ार,ज़ाल,ज़िद्दी,और ज़ाया,जेक़ो ज़ोफ़-ज़र्गीं हूं ॥
तालिह,तामिअ,तुग़ियानो,तय्याशो तुआमेग़म जानो ।

आस लगी० ॥ २ ॥

ज़ालिम, ज़ुल्म भरा है,बातिन ज़हीर ज़ामीज़ाहिरहूं ।
आजिज़,आसी,अबद,अनागीं,इक़ाबउश्शुलआमि हूँ ॥
ग़िल्ल,ग़मज़दा,ग़िब्ता ग़ुर्बा ग़ुरूर ग़ाफिल ग़ादिरहूं ।
फ़ासिक़,फ़ासिद,फ़ाहिश हूं फ़र्यादी,फ़रेबी,फ़ाजिरहूँ॥
क़बीह.क़हिबा क़ुनूत हूं क़ल्लाशो क़ासिर.क़ासिर हूं ।
काहिल,काज़िब.कीनाकश.कम्बख्त,कमीना,कमतरहूं॥
गुनहगार, गन्दा, गिरियां हूं गोयाई भी गुम जानो ।

आस लगी० ॥ ३ ॥

लियाम.लूचो लग़ो,लालची लाग़िर, लरज़ां लेनम हूं ।
मुतासिबोमुतवल्लिद मांदा मायन महिज़ूं मुजरिमहूं ॥

नातराश, नाशाद, नातवां, नादां, नालां, नादिम हूँ।
वाशी,वाजिफ़,वजल,वाज़ूं,वहशी,वाही,वाहिम हूँ॥
हाज़िर, हासिद, हानिस,हुमको हज़ीं हक़ीरो हैरां हूँ।
याज़ी, यावी अक़लो मुज़तर, मुतहैयरो परेशां हूँ॥
सब कुछ नहीं, मगर इतना है 'राधेश्याम' इस्म जानो
आस लगी० ॥ ४ ॥

लावनी नम्बर, ५
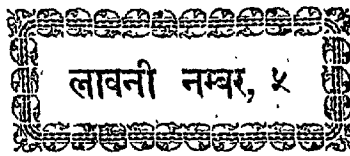
जगके कर्ता, दुख के हर्त्ता,कृष्ण कन्हैया तुम्हीं तो हो।
मथुरा जाये, गोकुल आये, धेनु चरैया तुम्हीं तो हो॥
अघ-बक-तृणावर्त्त-कंसादिक प्राण हरैया तुम्हीं तो हो।
तियन,टोककर, गैल रोककर,दान लिवैया तुम्हीं तोहो॥
मूसलधार वारि वर्षा से ब्रज के बचैया तुम्हीं तो हो।
नख पर गिरिवर धार इन्द्र के मान घटैया तुम्हीं तोहो॥
गोपी चीर चुराय धाय कर कदम चढ़ैया तुम्हीं तो हो।
मथुरा जाये गोकुल० ॥ १ ॥

यमुना तीर शरद ऋतु सुन्दर,रास रचैया तुम्हीं तो हो।
रूप अनेक बनाय,नाचकर, वेणु बजैया तुम्हींतो हो॥

त्रिविधसमीर, चन्द्र, यमुनाजलअचलकरैया तुम्हींतोहो ।
तपन बुझैया, मदन लजैया, मुनिन भुलैया तुम्हींतो हो॥
शेष, सुरेश, महेश, चतुर्मुख ध्यान छुटैया तुम्हींतोहो ।
मथुरा जाये गोकुल० ॥ २ ॥

खेलत गेंद गिरी कालीदह, तुरत कुदैया तुम्हीं तोहो ।
मद मर्दन कर, सहस्र फन पर नाच नचैया तुम्हींतोहो ॥
मेवा त्याग विदुर घर जाकर साग खवैया तुम्हींतोहो ।
खम्भफाड़, प्रह्लाद राख, स्वर्णाक्ष हनैया तुम्हींतो हो ॥
भूमि डार, ललकार, कंसकी शिखाखिँचैया तुम्हींतो हो ।
मथुरा जाये गोकुल० ॥ ३ ॥

दासी रुक्मिनि की पाती पढ़ दुःख हटैया तुम्हीं तोहो ।
दीन द्रौपदी की विनती सुन, चीर बढ़ैया तुम्हींतोहो ॥
गजकी त्राहि सुन, जाय ग्राहके प्राण नसैया तुम्हींतोहो ।
सखा, तात, पितु, गुरू हमारे मैया भैया तुम्हीं तोहो ॥
'राधेश्याम' के लाज रखैया, काम बनैया तुम्हीं तोहो ।
मथुरा जाये गोकुल० ॥ ४ ॥

हरी, हमारे, हमेश, हरदम, हरेक शै में, झलकरहे हैं ।
जोइनको गुल्शनमें जाके देखा हरेकगुलमें चमक रहे हैं ॥
गुलाब में गोपाल विराजें बसें हैं गेंदे में गोविन्द ।
गुलमेंहदी में गुणों के सागर, मालश्री में रहें मुकुन्द ॥

कृष्ण सुशोभित कमलके अन्दर, अनारमें हैं आनन्दकन्द।
बनमाली बेले में बसते, गुलप्यारी में गोकुल-चन्द ॥
डार डार में, पात पात में, विपिन विहारी चहकरहे हैं।
जो इनको गुल्शन में जाके देखा० ॥ १ ॥

कमल-नयन केवड़े मेंराजें, जुही में रहते जनरञ्जन।
कुन्द में करुणानिधान बसते, चांदनी में हैं चन्द्रवदन ॥
महाराज मोतिये में शोभित, मालती में हैं मनमोहन।
माखन-चोर बसें मरुए में, माधवी में हैं मधुसूदन ॥
सड़क, रविश पर घास ओस पर, छैल छबीले छिटकरहेहैं ॥
जो इनको गुल्शन में जाके देखा० ॥ २ ॥
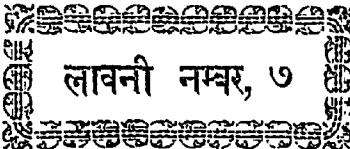
दीनबन्धु हैं दाऊदी में, दुपहरिया में दुख-भञ्जन।
लाले में लीलाधारी हैं, दौने में हैं दुष्ट-दलन ॥
सूर्यमुखी में सोहें सांवरे, केतकी में हैं कुँज-रमन।
गुलाबांस में गुणागार हैं, कामिनी में कालीमर्दन ॥
फलों में, पेड़ों में, टट्टियों में, कियारियों में कुदकरहेहैं।
जो इनको गुल्शन में जाके देखा० ॥ ३ ॥

हरी हार-शृंगार के अन्दर, जवा में जलशायी-प्रभुवर।
चमेली में चैतन्य विराजें, त्रिभङ्ग में त्रिभुवन ईश्वर ॥
कठोर कनैल में विराजें, कुमुद में कोमल श्यामकुंवर।
कथन कहां तक करै कोई, है प्रकाश घटघट के भीतर ॥
विचारकर 'राधेश्याम' ढूंढा, तो वे ही सबमें दमक रहेहैं।
जो इनको गुल्शन में जाके देखा० ॥ ४ ॥

लावनी नम्बर, ७

जो तुमने पाली निराली काली,
ग़जब की ज़हराली ज़ुल्फ़ नागन।
सुनो बिहारी, जो रुख़पै डारी,
वो लट तुम्हारी बड़ी ही रहज़न॥
तुम्हारी ज़ुल्फ़ों के बाल काले,
बला के बलदार कौड़ियाले।
जो देखता बस वही यह कहता,
क्या ख़ूब बल खा रहे हैं काले॥
घिर आये रुख़ पर वो शोख़ जब,
काले बादलों की सी शान वाले।
हुआ गुमां सबको, आज निकला है,
चांद मुंह पर नक़ाब डाले॥
हैं फ़ितना-परवाज़ स्याह काकुल,
मची है कुल बैगियों में तड़पन।
सुनो बिहारी जो रुख़पै डारी० ॥ १ ॥

कोई तो फुंकार मारते हैं,
कोई हैं आसन जमाये बैठे।
कोई लपकते हैं बेतहाशा,
कोई हैं फन को उठाये बैठे॥

कोई लटकते हैं लटके लटकन हो,
कोई कुँडली लगाये बैठे ।
हुआ यह रोशन के आज दोनों,
जहां के हैं, दो में छाये बैठे ॥
मेरी समझ में, ये सब हैं बैठे,
प्रलय का शीतल समझ निकेतन ।
सुनो बिहारी, जो रुख़पै डारी० ॥ २ ॥

मले बिहारी ने बाल एक दिन,
जो घिर रहे सर पै बादरों से ।
जो धोये और फिर नहाये तो बस,
लगे बरसने वे गौहरों से ॥
निचोड़ डाला पकड़ के सब को,
मुरारि ने जब कि निज करों से ।
उगल दिया तब ज़हर सभों ने,
बने बिना विषके विषधरों से ॥
बनाईं तब ज़ुल्फ़ें काढ़ उनको,
रसिक ने अपना निकाला जोबन ।
सुनो बिहारी, जो रुख़पै डारी० ॥ ३ ॥

जो झटका देकर के श्याम ने फिर,
लटें वे लटकालीं, काली काली ।
हुआ यह मालूम, आज शङ्कर-
बने हैं, गोविन्द रूपशाली ॥

हिलाके सर को, ढका जो रुखको,
तो विहंसी वृषभानुजी की लाली ।
"मिले हैं क्या 'राधे-श्याम' दोनों!"
यह बोलीं सखियां बजाके ताली ॥
जो देख लेता है ऐसी झांकी,
वो वार देता है अपना तन मन ।
सुनो बिहारी, जो रुखपै वारी० ॥ ४ ॥

लावनी नम्बर, ८
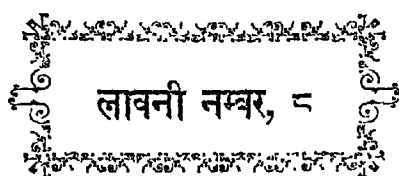
सजे धज से गिरवर-धारी, चले हैं बनको बनवारी ।
भोर भये ग्वालिन उठधाई, बेंचने कारण दधि लाई ।
जभी वँशीबट तट आई, मिले मारग में यदुराई ॥
छल बलिया छैला छली, लीला के लिये कान ।
राह रोक ठाड़े भये—"दिये जा मेरा दान ॥
किधरको जाती है प्यारी," चले हैं बनको बनवारी ॥ १ ॥

ग्वालिनि बोली ।

"कौन हो तुम ? क्यों अड़ते हो? नारियों से क्यों लड़तेहो ?
दहीकी गगरी तकते हो, गालियां किसलिये बकते हो ? ॥

नित प्रति हम इस राह से गो-रस बेंचन जायँ।
आज नई यह बात है, काहे दूध पिलायँ॥
हटो नहीं देवुंगी गारी।" चले हैं बनको बनवारी॥ २॥

श्याम बोले।

"रोज़ हम यां पर रहते हैं, दान सब से लिया करते हैं।
बात हम सांची कहते हैं, न देवे उस से लड़ते हैं॥
नई, नुकीली, नाज़नीं, तुम आई हो आज।
छिप के नित जाती रहीं, पर पाई हो आज॥
गई क्यूं तेरी मति मारी," चले हैं बन को बनवारी॥३॥

ग्वालिनी बोली।

कर रहे क्यूं बरजोरी कान, मिले क्या इन बातों से दान?
न दिखलाओ शेखी और शान, लगाऊंगी दो गुलचे तान॥
बैंयां चुरियां ना छुओ, जाउ चराओ गांय।
लकड़ी क्यूं दिखला रहे, हम डरपन की नांय॥
जाउ टेरे है महतारी," चले हैं बन को बनवारी॥ ४॥

श्याम बोले।

"न गीदड़-भबकी दिखलाओ, न झांसे हमको बतलाओ।
न बौराओ और इतराओ, हमारा दान दिये जाओ॥
अब भी मानले ग्वालिनी, नाहिं तो तोहि बताउं।
बिना दान छोड़ूं नहीं, क़सम नन्द की खाउं॥
खड़ी रहु दधि बेचनवारी," चले हैं बन को बनवारी॥ ५॥

ग्वालिनी बोली ।

"कहूंगी जाकर के नँदलाल, तुम्हारी मय्या से यह हाल ।
भूल जाओगे चाल कुचाल, न मुझसे गले तुम्हारी दाल ॥
फ़िर्यादी बन कंस पै, जाऊं काल्ह सकार ।
हाल करूं इज़हार तब, चले न गाल तुम्हार ॥
नहीं फिर छेड़ोगे नारी," सजे हैं धज से बनवारी ॥ ६ ॥

श्याम बोले ।

सुनी जब श्याम ने ऐसी बात, वहीं ग्वालिन के मारी लात ।
गिरी गगरी सर से अर्रात, घटी ब्रजनारी की औक़ात ॥
खाय खबाय बहाय कर, छोड़ दई ब्रजनार ।
चलते चलते यों कहा, "फेर करेगी रार ? ॥
कंस को बेग बुला ला री," चले हैं बन को बनवारी ॥ ७ ॥

ग्वालिनी बोली ।

गईयशुदा ढिंग ग्वालिन हाल, रोयकर वचन कहे तत्काल।
बीर, है ढीठ तिहारो लाल, रोज़ मारग में करत कुचाल ॥
बन से प्रभु आये तभी, कहन लगे यह बात ।
"मैया, मैं कुछ ना कियो, ये ग्वालिन इठलात" ॥
गूजरी 'राधेश्याम' हारी, चले हैं बन को बनवारी ॥ ८ ॥
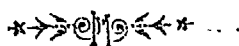
सभा में करत कुगति भारी, खींच रहा दुःशासन सारी ॥
भई बिकल जब द्रौपदी, रोकर करी पुकार।
कृष्ण! कृष्ण! सुधि लो मेरी, हूं मैं अति लाचार ॥
न्यायकरो बेग न्यायकारी, खींच रहा दुःशासन सारी॥१॥
हँसी आप की होत है, लाज जात है मोर।
दुर्योधन मति-मन्द जड़, है निर्दयी कठोर ॥
नचावे नग्न करे ख्वारी, खींच रहा दुःशासन सारी ॥ २ ॥
बेबस पांचों पति मेरे, छोड़ी सबने प्रीति।
दुर्योधन और कर्ण से, क्या तुम भी भयभीत ?
इधर मैं भी हूं दुखियारी, खींच रहा दुःशासन सारी ॥ ३ ॥
पापी तुम तारे बहुत, मेरी बेर क्यूं देर।
सुनत नाहिं, कहां सोगये, रही मैं कब से टेर ॥
दरस दीजे गिर-वर-धारी, खींच रहा दुःशासन सारी ॥४॥
राधापति, होती अपत, हरो विपति, पत जाय।
डूब रही मझधार में, आकर करो सहाय ॥
टेर सुनो हरि करुणाकारी, खींच रहा दुःशासन सारी॥ ५ ॥
खड़े खड़े पां दुखगये, कहत कहत गई हार।
रोय रोय नैना थके, सुनत न कोई पुकार ॥
हाय मैं टेर टेर हारी, खींच रहा दुःशासन सारी ॥ ६ ॥

अति रोई जब द्रौपदी, कृपा करी यदुवीर ।
ज्यों ज्यों खेंचे दुशासन, त्यों त्यों बाढ़े चीर ॥
कहे-है सारी या नारी ! खींच रहा दुःशासन सारी ॥ ७ ॥
बोलो सब जय कृष्ण की, भजो श्याम का नाम ।
धर्म्म-पतिव्रत है प्रबल, गावे 'राधेश्याम' ॥
हरी की माया है न्यारी, खींच रहा दुःशासन सारी ॥ ८ ॥

लावनी नम्बर, १०
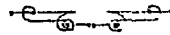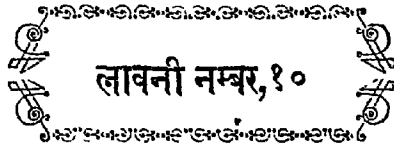
किसलिये राह में करते श्याम ठठोली ।
बस माफ़ करो रहने दो, होली, होली !
तुम निपट निठुर, नंदलाल चाल करते हो ।
पिचकारि मार, फ़िलहाल लाल करते हो ॥
दिखला जमाल बेहाल हाल करते हो ।
चट चूम गाल, तत्काल जाल करते हो ॥
चुड़ियाँ चटका कर बोरी चुनरी, चोली ।

बस माफ़ करो रहने दो० ॥ १ ॥

कुमकुमे मार क्यूं बेक़रार करते हो ?
अम्बर सुढार के तार तार करते हो ॥
गल बांह डार हरबार रार करते हो ।
अञ्चल उघार क्यूं यार ख्वार करते हो ॥
हँस २ निज बस कर बोलत रसभरी बोली ।

बस माफ़ करो रहने दो० ॥ २ ॥

गा के कबीर क्यूं चित अधीर करते हो ।
चश्मों के तीर से दिल असीर करते हो ॥
कम्पित शरीर तुम नहीं पीर करते हो ।
ढरकाय नीर, फेंका अबीर करते हो ॥
घूंघट को उलट, चटपट करो बातें भोली ।

बस माफ़ करो रहने दो० ॥ ३ ॥

पटका झटका कर क्यूं मटका करते हो ?
चलते फिरते तकते, अटका करते हो ॥
झट झूम झाम दिल में खटका करते हो ।
झंझट कर नटखट दधि गटका करते हो ॥
होली की, 'राधेश्याम' कथन अनमोली ।

बस माफ़ करो रहने दो० ॥ ४ ॥

एक रोज़ अली निकली इकली,

छली नन्द को नन्दन आय गयो।

नट नागर नटवर नटखट नट,

वंशीवट तट भटकाय गयो॥

छलछन्द भरो ब्रजचन्द मुकुन्द,

अनन्द से वेणु बजाय गयो।

सुर ताल से गाय निहाल कियो,

किरपाल जमाल दिखाय गयो॥

बे-चैन कियो कह बैन मधुर,

फिर नैन की सैन चलाय गयो।

मुसकाय रिझाय लुभाय गयो,

डरपाय सताय हँसाय गयो॥

हंसकर बसकर कसमस कीन्ही,

रस-भीनी सुबात सुनाय गयो।

नट नागर नटवर नटखट नट० ॥ १ ॥

भृकुटी कर बङ्क गही लकुटी,

दधि की मटुकी ढरकाय गयो।

बतियां घतियां कर छुइ छतियां,
बैयां चुरियां मुरकाय गयो ॥
घूंघट को उलट झपट नटखट,
घुड़की झुड़की बतलाय गयो ।
झट झंझट कर दई एक डपट,
ऐसो ये निपट इतराय गयो ॥
नन्दलाल गुपाल ने चाल करी,
तत्काल कुचाल मचाय गयो ।

नट नागर नटवर नटखट नट० ॥ २ ॥

रगड़ा झगड़ा कर के निगुड़ा,
घड़ा मेरो दही को गिराय गयो ।
बुलवाय सखान दिखाय लुटाय,
बचाय के बारि बहाय गयो ॥
करी रार बड़ी जड़ी एक छड़ी,
फिर करके खड़ी नचवाय गयो ।
अलसात प्रभात सुहात भलो,
झट गात से गात मिलाय गयो ॥
चुलबुल में भरो चञ्चल अचपल,
छलबल कर चित्त चुराय गयो ।

नट नागर नटवर नटखट नट० ॥ ३ ॥

होकर के निडर नटवर लङ्गर,
अम्बर जल मांहि डुबाय गयो ।

बिहंसाय गयो, बतराय गयो,
धमकाय गयो, बौराय गयो ॥
अँगिया मसकाय हटाय दई,
गरवा हरवा कड़काय गयो ।
करी रार, लवार, हज़ार कही,
शृंगार बिगार, खिजाय गयो ॥
बरजोरी मैं दौरी बिहारी के संग,
मोहिं पौरी पै बौरी बनाय गयो ।

नट नागर नटवर, नटखट नट० ॥ ४ ॥

दर्शन कर मग्न भई मैं तो,
तनमन कर होश भुलाय गयो ।
उत वो चित-चोर मरोर भगो,
इत उत चितवत ही छुपाय गयो ॥
फिरी डोलत ढूंढत मैं चहुंदिश,
ब्रजपति कित जाने लुकाय गयो ।
वृन्दावन, मधुवन, गोवर्धन,
सब घाटन मोहिं घुमाय गयो ॥
मनमोहन 'राधेश्याम' सजन,
अँखियन में मोरी समाय गयो ।

नट नागर नटवर नटखट नट० ॥ ५ ॥

लावनी नम्बर १२
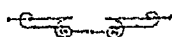
राधाके लिये श्याम एकदिन, गहना बनाया फूलोंका।
छड़े, झड़े, पाज़ेब, कड़े. लौ लच्छा, सजाया फूलों का ॥
झांझँ, रामझोलें, बचकन्नी, बिछुए, कड़ियां और सांकर।
तागड़ी, माला, चंपाकली, पचलड़ा, सतलड़ा, जुगनी, झूमर
चौकी, टीप, गुलूबन्द, बटन, कङ्गन, छल्ले, नौनगे घुघर।
तोड़े, बङ्कड़े, जोड़, कड़ूले, गोप, तोड़ा, तायत सुन्दर ॥
चन्द्रसैनी, जौ का, पलकों का हार सुहाया फूलों का।

राधा के लिये श्याम एक दिन० ॥ १ ॥

मलकी, सोने मूंगोंकी माला, कण्ठी, झुमके, झांझन।
पहुंची, पछेली, हँसली, खड़ुए, परीबन्द, छन्नी, जोशन ॥
रवे, जड़ावे, अन्त और हथफूल, नौरतन, चन्द्रकिरन।
बरे, आरसी, हमेल, बांके, पोरुए, गजरे और लटकन ॥
चूहेदन्ती और लौंगकी पहुंची, छल्ल गुथाया फूलोंका।

राधा के लिये श्याम एक दिन० ॥ २ ॥

मछली, मुरकी, लौंग, कनौती, मलकी, बिजली, सूहीलट।
पोंगी, नथ, चोबें बुलाक, बन्दी बेना, कटियां अनबट ॥

बाले वाली, कुण्डल, गोशे, दुर्वच्चे, तड़की, झूमट।
तुन्दे, पत्तो, कण्ठे, कुठले, कर्णफूल, चन्द्रिका, प्रकट॥
कर सोलह शृंगार हरी, झूला गढ़वाया फूलों का।

राधा के लिये श्याम एक दिन० ॥ ३ ॥

गहना वस्त्र पिन्हाकर प्रभुने, झूले पर बिठलाय दिया॥
फूल का गहना पहन फूलसी, फूलगई राधिका प्रिया॥
झूम झाम झोंके झकझोरे, झकाझकक उद्यान किया।
विद्युत घन सम युगलरूप लख, विकसित 'बाँकेदास' हिया।
'राधेश्याम' छवि लख प्रमुदित मन-छंद सुनाया फूलोंका।

राधा के लिये श्याम एक दिन० ॥ ४ ॥
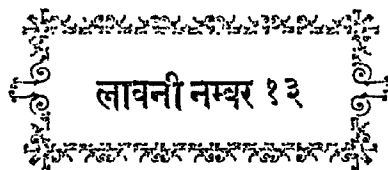
लावनी नम्बर १२

रतिछबि हारी, राधिका प्यारी, नन्द नँदन मन्मथ मोहन।
ठुमकर ठुम, छुमकर छुम, नाचत दोऊ जन कुञ्ज भवन॥
नवल विमल चञ्चल ब्रजनारी, नाच रहीं हैं मटक मटक।
माघ पूर्णको पूर्ण चन्द्रमा, शरच्चन्द्रिका रही छटक॥

उत वंशीकीध्वनि मनमोहिनि;इत छुमरचरणनकीपटक।
सचर अचर भये,अचर सचर भये,शम्भुसमाधी गई भटक।
छनन २ छन बाजत घुंघरू,धमक २ पड़े धरणि चरन॥
ठुमक २ ठुम छुमक २ छुम० ॥ १ ॥

मान किया जब सखियोंने तब ग़ायब होगये नागर नट।
अधिक प्रेम केकारण निजसंगलई वृषभानुसुता भटपट॥
अति व्याकुल ब्रजनारी सारी,डोलत ढूंढत यमुना तट।
कीनों कीर्त्ति-सुता मद तबहीं,बेहद ग़ायब भये नटखट॥
सबने मद जबकीनो रद,तब प्रकटे मनसिज मदमर्दन।
ठुमक २ ठुम छुमक २ छुम० ॥ २ ॥

रास विलास कियो अति भारी, कौन करे ताको वर्णन।
कालिन्दी जलअचल भयो, उडुगण भूले हैं चाल चलन॥
मदनमगनऔरलज्जितभयोतबआयोचरणशरणनिर्धन।
वायु सुरेश शेषहू भूले, भूले मुनिजन ब्रह्म मनन॥
त्रिपुरारी नारी तनु धार्यो, बिरञ्चिभूल्यो वेद पढ़न
ठुमक २ ठुम छुमक २ छुम० ॥ ३ ॥

उडुगणमेंजिमि चंद्रसुशोभित,अस प्रकार राजतमोहन।
जितनीथीं ब्रजबाल लालउतने ही रूप किये तेहि छिन॥
एक मास की रात भई,तब रास विलास कियो भगवन।
जब सब की इच्छा भई पूरण रास कियो तब सम्पूरन॥
'राधेश्याम' गुलाम मगन मन,भक्तिदान आयो मांगन।
ठुमक २ ठुम छुमक २ छुम ॥ ४ ॥

लावनी नम्बर १४

कल से कल बिलकुल नांहिं भई हौं बे- कल ।
खल गई विपति, मैं भई सूख कर खां- खल ॥
गल से रट हरि की लगी भई हौं पा- गल ।
घल घुल के ग़म में रोज़ हो चली घों- घल ॥
चल ते फिरते आवे है याद हरि चं- चल ।
छल बलिया मदन गुपाल करे मोसे- छल ॥
जल बरसत अंखियन रोज़ जात वह कज्- जल ।
झल झात कपोलन, करत है मोपर झुं- झल ॥
टल नहिं सकती है पड़ी प्रीति की आं- टल ।
कल से कल बिलकुल नांहिं० ॥ १ ॥

ठल याउ न इसमें, बात न है यह झुट्- ठल ।
डल बाई सेली लेकर हाथ कमं- डल ॥
ढल गई तरुणाई औ अरुणाई ढल- ढल ।
तल वारसी लागत प्यार मधुर और शी- तल ॥
थल पर पड़ी रोज़, धड़कत है हृदयस्- थल ।
दल साज गरज कर डर दिखलावे बा- दल ॥
धल धल नैनन से बहे नीर भई आं- धल ।
कल से कल बिलकुल नाहिं० ॥ २ ॥

मल- ई सुधि मोहन ने जागत विरहा- नल ।
पल कें हैं भुकीं मुश्किल से बीते पल- पल ॥
फल के तन पड़ गये प्रीति को पायो ये- फल ।
बल गयो विरह में वीर देह को सब- बल ॥
भल कादिक गहने तजे नहीं लागत- भल ।
मल तो हूं कर, हुए कठोर जो थे को- मल ॥
यल ना पलना सब तजे भई हौं मरि- यल ।
कल से कल बिलकुल नाहिं० ॥ ३ ॥

रल रह्यो चित्त उन चरण कमल में अवि- रल ॥
लल कारत है बिरहा होजावे न ख़- लल ।
बल बले मिट गये जो थे दिल के अव्- वल ॥
सल गया हृदय, तन हुआ है सारा फुस्- सल ।
शल गई तिया की बिसरि पिया रहें सकु- शल ॥
हल दी सी पड़ी पीली पी प्रेम हला- हल ।
कहे'राधेश्याम'है सनददार छंद उज्ज्वल ।
कल से कल बिलकुल नाहिं० ॥ ४ ॥
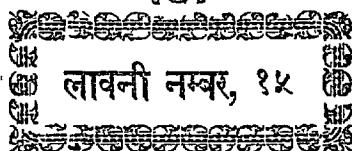
लावनी नम्बर, १५

घनश्याम न आये, आय गये हैं घन श्याम ।
रोवे है बाम पर बाम, विधाता है बाम ॥
सावन तिय को यम सा घन दरशा बन से ।
देय बार बार तनुबार बारि गिर घन से ॥

सो चित में सोचत सो चित या कारन से ।
जब पड़े कान में, बान तान कानन से ॥
आगत है काम, कब पूरण होवेगो काम ।
रोवे है वाम पर वाम० ॥ १ ॥
ली जान जानके जान ने ली मेरी जान ।
मैं मान करूं तब मान जायगो मेहमान ॥
वह तानन से, मैं तानन से करूं खबतान ।
है भान, भानु दिनलौं आवे निकसत भान ॥
प्रति जाम सोचती प्रेम जाम को अञ्जाम ।
रोवे है वाम पर वाम० ॥ २ ॥
खारी सारी भीजत है तनु की सारी ।
धारी धारी तन मन ने प्रेम की धारी ॥
कारी कारी निशि, करूं मैं कारी कारी ।
मारी मारी फिरती हूं विरह की मारी ॥
वे दाम दाम में, फंसी जिस तरह बादाम ।
रोवे है वाम पर वाम० ॥ ३ ॥
सोना सोना सो ना भावत है मन में ।
सीना है फटा सीना न बनै गापन में ॥
फल से कल बिलकुल पड़ती नाहिं बदन में ।
करूं पान छोड़, विष पान पीर है तन में ॥
मिल गये श्याम, कहे 'राधेश्याम' भयो आराम ।
रोवे है वाम पर वाम० ॥ ४ ॥

लावनी नम्बर, १६

करन लगे राम आहोज़ारी। लगी लक्ष्मणके शक्तिभारी।
व्याकुल हो पृथ्वी गिरे, गई मूर्छा आय ।
जब आये कुछ होश में, बोले यूं घबराय ॥
नहीं कोई मुझसा दुखियारी।लगी लक्ष्मण के शक्तिभारी।
राज के बदले बन मिला, तजा नगर, घर द्वार ।
पिता मरे माता छुटीं, हरी सिया सी नार ॥
हुई तिसपै यह और ख़्वारी।लगी लक्ष्मणके शक्ति भारी।
मातु सुमित्रा को भला, कैसे मुख दिखलाउं ।
बिना अनुज के किस तरह, लौट अयोध्या जाउं ॥
छुड़ावे कौन सिया प्यारी।लगी लक्ष्मण के शक्ति भारी।
नारि हेतु संग्राम में, प्रिय भाई मरजाय ।
धिक है ऐसी ज़िन्दगी, कैसी कीजे हाय ॥
निराशा की है अंधियारी।लगी लक्ष्मण के शक्ति भारी।
भाई जग से चलदिया, अवध चला मैं रोय ।
विधना ये कैसी करी, किया अकेला मोय ॥
मरेगी रो रो महतारी। लगी लक्ष्मण के शक्ति भारी।
उठो तात रण में लड़ो, देउ काम ये साध ।
क्यूं मुझसे नाराज़ हो, क्या मेरा अपराध ?॥
ख़तम होचली रात सारी।लगी लक्ष्मण के शक्ति भारी।

हो व्याकुल रघुनाथ जब, खोवन लागे प्रान ।
गिरि समेत बूंटी लिये, आय गये हनुमान ॥
दूर ही से दी किलकारी। लगी लक्ष्मण के शक्ति भारी ।
वो सञ्जीवन वैद्य ने, दीनी तभी पिलाय ।
राम-लक्ष्मण मिल गये, 'राधेश्याम' कहे गाय ॥
सेन में हुई जय जयकारी। लगी लक्ष्मण के शक्ति भारी ।
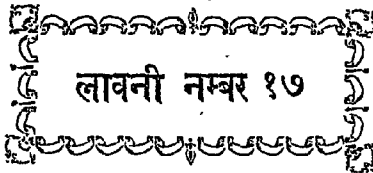
लावनी नम्बर १७

(आदि अन्त में "र" है औरदोनोंओर क, ख, ग, घ, आदि हैं।)
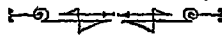
रोक बुरी बातों से दिल को, राम नाम का सुमरन कर ।
रख भगवत की याद नहीं तो, मरेगा रो रो कर रे खर ॥
रंग ले तन मन प्रेम रंग में, मुंह से गाले नट नागर ।
राघव अन्त में काम बनइहैं, सङ्ग न जावेगो ज़र घर ॥
रचयिता जगकेहैं जलशायी, बनायेहैं जल-थल-नभ-चर।
रीछ से लेकर उपजाये कुल, हाथी घोड़े और मच्छर ॥
रञ्जन कर्त्ता हैं जन-मन के, निराकार अद्वैत अजर ।
रीझ जात हैं प्रेम देख कर, मेवा त्याग खात बेझर ॥
रट गोविन्द का नाम अरे शठ, मतकर बेमतलब टर टर ।
रख भगवत की याद नहीं तो० ॥ १ ॥

रूठ जायगी ज्वानी यकदिन, जरा आय करदे ठांठर ।
रांड मौत खाये यक दिन में, क्यों बैठा है हो बेडर ॥

रे ढकोसले रहने दे अब, प्रेम के नीर बहा ढर ढर ।
रात सभी अलसात गई,अब प्रात भयो उठके हो सतर ॥
रथ,गज,बाजि न साथ जायेंगे,हटा वेग मति का पत्थर ।
रद मत कर उपदेश बड़ों के, नहिं पावेगा दुख कादर ॥
राधावरका खास दास बन,शुभ अभिलाष यही चित धर।

रख भगवत की याद नहीं तो० ॥ २ ॥

रैन दिना के चक्कर में फंस, बीती जाय उमरिया, नर ॥
रुपया जोड़ जोड़ मरजैहै, क्यूं फूला है तन धन पर ।
रे फंसता है क्यूं माया में, कड़ा अदम का सर पै सफ़र ।
रबको भजले,सबको तज दे,तभी मिले मनवाञ्छित बर ॥
रे भलाई तेरी है इसी में, चेत चेत मत कर भर भर ।
राम नाम से काम जो रक्खे, मर कर वह होजाय अमर ॥
राय मान 'श्रीबांकेदास'की, कर सत्संग न बन कायर

रख भगवत की याद नहीं तो० ॥ ३ ॥

रार,वैर,छल,दम्भ,फूट तज, सत्य मार्ग पै चल सर सर ।
रेल ठिकाने आ पहुंची है,टिकट बदल जल्दी ढिल्लर ॥
रे गरूर की बातें करके, खर से होजा जल्द बशर ।
रम में माया के मत फंस रे,यश करने में कर न कसर ॥
राह ज्ञान की बेग पकड़,चौरासी लाख से हो बाहर ।
रक्षपाल भगवान भक्त के, रखले दिल में ये अक्षर ॥
'राधेश्याम'रचा,रे,का छंद,लगा ककहरा इधर उधर ।

रख भगवत की याद नहीं तो० ॥ ४ ॥

लावनी नम्बर १८
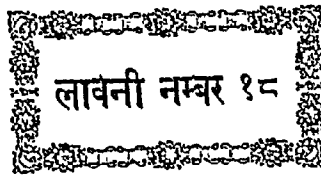
कन्तरो नन्तहीं हन्तम सन्ते चन्ताल ।
रन्तहै कन्तहां कन्तल गन्तोपन्ताल ॥
जन्तओ बन्तहीं बन्तैरिन्तिन घन्तर ।
हन्तम सन्ते बन्तात तन्तहीं कन्तर ॥
तन्तुम छन्तलिया हन्तो नन्तटबन्तर ।
बन्तात बन्तना मन्तत गन्तिर धन्तर ॥
खिन्तगड़ा हन्तै कन्तै सन्ता हन्ताल ।
रंतहे कंतहां० ॥ १ ॥

कंत्यो कंतोमल मन्तुखकन्तुभलाया ।
अंतधरन कंताजल फंतैलंताया ! ॥
गंताल कंतहो कंत्यो संतुरखाया ।
शंतोभा कंतैसे खंती अन्ताया ॥
नंतैन कंतहो कंतैसे हैं लंताल ।
रंतहे कंतहां० ॥ २ ॥

गन्तये जन्तुरूरी बन्तैरिन कन्ते ।
कन्त्या लन्ताये ही सन्तौतिन सन्ते ॥
तन्तुम से भन्तूठे नादन्तेखंते ।
दंते कंते भंतासा जंतातंते ॥
नंतहीं चंतलेगा हन्तम से गंताल ।
रंतहे कंतहां० ॥ ३ ॥

हंतुई बंतहुत अंतब तो जंताओ ।
संतौतिन कन्ते गंतुन को गंताओ ॥
बन्तातों में मन्तत बंतहि लंताओ ।
मंतेरी बंतखरी मंतत अंताओ ॥
गंतावे 'राधेश्याम' नंतया खंत्याल ।
रंतहे कंतहां० ॥ ४ ॥

* राधेश्यामविलास *

दूसरा खण्ड

(इस खण्ड में ग़ज़लें प्रकाशित हैं)

ग़ज़ल नम्बर १९

पहले जो श्रीगणेश को मस्तक झुकायेगा ।
वह सिद्धि बुद्धि, विश्व में सर्वत्र पायेगा ॥
गणपतिका ध्यान धरके जो कविता बनायेगा ।
वह काव्य अलङ्कार से परिपूर्ण आयेगा ॥
गणराज को मनाय के जो व्यक्ति गायेगा ।
सँसार सारा मुग्ध हो अच्छा बतायेगा ॥
विश्वास से गणपति को जो कोई मनायेगा ।
वह पाय मनो-कामना गुणवर कहायेगा ॥
जो 'राधेश्याम' का यह वाक्य ध्यान लायेगा ।
निश्चय ही सर्वदा वह पुरुष सुख उठायेगा ॥

ग़ज़ल नम्बर २०

सियावर राम जी का नाम गाले जिसका जी चाहे ।
जगत्पतिको जुगतिसे वह रिझाले जिसका जी चाहे ॥
न दौलत की ज़ुरूरत है न कुछ बातों से मतलब है ।
मोहब्बत से महा प्रभु को मनाले जिसका जी चाहे ॥
सहायक वे सदा जन के अलौकिक कर्म हैं उनके ।
अगर शक हो ज़रा तो आज़माले जिसका जी चाहे ॥
कहां पर्दानशीं है वह, हर एक जापै मकीं है वह ।
ज़रा पर्दा हटाकर ढूंढ डाले जिसका जी चाहे ॥
है 'राधेश्याम' दीवाना तो लेके प्रेम का बाना ।
पिया के नाम पर धूनी रमाले जिसका जी चाहे ॥

ग़ज़ल नम्बर २१

दीन-हितकारी हे असुरारी तेरी लीला अपार ।
वीर रघुवीर हरो पीर करो बेड़ा पार ॥
नाथ रघुनाथ गहो हाथ हरो कष्ट मेरे ।
ईश, दशशीश भुजा बीस के मद मर्दनहार ॥
राम अभिराम करो काम रटूं नाम तेरा ।
आज रघुराज रखो लाज मेरा काज सुधार ॥
दास अनुदास को है आस बड़ी 'राधेश्याम' ।
देव सब भेव मेरा जान रहे जगदाधार ॥

ग़ज़ल नम्बर २२

प्रथम गँधर्व-कुल नायक गुरू को हम मनाते हैं।
हमारे नाथ हैं वे, दास हम उनके कहाते हैं॥
सुयशदाता वेही वे हैं विजय दाता वेही वे हैं।
उन्हीं के नाम पै सब काम हम करते कराते हैं॥
सभी कहते हैं गिरधारी मगर हम कहते कामारी।
सभी वानर बताते हैं हमारे नर के नाते हैं॥
जब हम उनको बुलाते हैं कृपाकर वेभी आते हैं।
हमारी वैखरी को वह मधुर वाणी बनाते हैं॥
गुरु-स्थलके हैं हम अनुचर हमें क्यों हो किसीका डर।
निडर होकर 'सभा में' अपने भजनोंको सुनाते हैं॥
हमें पाला है बचपन से न देते ध्यान अवगुण पै।
मगर हम मूढ़ ऐसे हैं कि प्रायः भूल जाते हैं॥
धनीहो नामके तुम ही, हो राधेश्यामके तुमही।
तुम्हारे आसरे निर्भय विचरते और गाते हैं॥

ग़ज़ल नम्बर २३
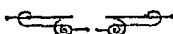
गङ्गे! सुना है तुम हो बिगड़ी बनाने वाली।
आवागवन छुड़ा कर मुक्ती दिलाने वाली॥
जो एतक़ाद करके न्हाते हैं शुद्ध मन से।
तुम राह स्वर्गकी हो उनको बताने वाली॥

विश्वास प्रेम से जो शिर पर चढ़ायें रजको।
तुम उनकी सब समय हो बुद्धी बढ़ाने वाली॥
मां पुत्र हम तुम्हारे कलियुग की मार मारे।
आकर पड़े हैं द्वारे तुम हो बचाने वाली॥
सब मिलके आओ न्हायें गङ्गेकी जय मनायें।
हम'राधेश्याम'जन हैं वे हैं निभाने वाली॥

ग़ज़ल नम्बर २४

मेरी भी मदद करना गज के छुड़ाने वाले।
मुझको भी ज्ञान देना गीता के गाने वाले॥
जागा याजिससे मधुवन,गूँजा याजिससे त्रिभुवन।
वह तान फिर सुनाना, वँशी बजाने वाले॥
परिवार बढ़ रहे हैं, दुष्काल पड़ रहे हैं।
फिर एक बार आना, गउयें चराने वाले॥
रस्ता बड़ा भयङ्कर, झगड़ों का बोझ सरपर।
यह भार भी उठाना, गिरिवर उठाने वाले॥
यह राधेश्याम तेरा, जपता है नाम तेरा।
पत इसकी जगमें रखना, ब्रजपति कहाने वाले॥

ग़ज़ल नं० २५

अब तो कर दीजिये रहमत की नज़र थोड़ीसी।
गर ख़बरगीर हो तो लेलो ख़बर थोड़ीसी॥

जैसे प्रह्लाद ! को और ध्रुव को उबारा तुमने ।
वैसे ही दास पै कर दो न मेहर थोड़ीसी ॥
दीजिए दान हमें अपनी मधुर झांकी का ।
होवे इनकार में तकरार मगर थोड़ीसी ॥
प्रेम के पन्थ में पड़कर नहीं हटना अच्छा ।
रहनुमा हो, मुझे दिखलाओ डगर थोड़ीसी ॥
द्वारपै आके खड़ा होगया जब 'राधेश्याम' ।
भीख दे डालिए हे राधिकावर ! थोड़ीसी ॥

ग़ज़ल नं० २६

सुनो ऐ सांवरे मोहन, अहाहाहा, ओहोहोहो ।
ग़ज़ब है तुममें बांकापन, अहाहाहा, ओहोहोहो ॥
मुकुट और पाग टेढ़ी है तो लबपै टेढ़ी मुरली है ।
खड़ेतिरछी किये चितवन, अहाहाहा, ओहोहोहो ॥
झनकते पाऊँ में नूपुर चमकते कान में कुण्डल ।
दमकते हाथ में कङ्कन, अहाहाहा, ओहोहोहो ॥
पलक तिर्छी भवें बांकी, नये अन्दाज़ की झांकी ।
रसीली आंख में अंजन, अहाहाहा, ओहोहोहो ॥
सितम मुरलीकी चोटें हैं अधर दोनों सुधा से हैं ।
भला फिर क्यों न हो उलझन, अहाहाहा, ओहोहोहो ॥
न 'राधेश्याम' ही वारी, हैं तीनों लोक बलिहारी ।
तुम्हीं हो एक जीवनधन, अहाहाहा, ओहोहोहो ॥

ग़ज़ल नं० २७

हुआ आनन्द नँद के घर मुक़द्दर हो तो ऐसा हो।
नसीवा ब्रज के लोगों का सिकन्दर हो तो ऐसा हो॥
बढ़े जब पाप पृथ्वी पर तो झट बैकुण्ठ को तज कर।
जगत् के हितको आपहुंचा जगद्गुरु हो तो ऐसा हो॥
बजाई बाँसुरी बनमें उठी गुञ्जार त्रिभुवन में।
अचर सब हो सचर उट्ठे गुणागर हो तो ऐसा हो॥
लुभा के गोपियोंका दिल बताई मोक्ष की मंज़िल।
जो दिलवर हो तो ऐसा हो, जो रहिबर होतो ऐसा हो॥
मिटाये पूतना, अघ, बक, संहारे कंस केशी तक॥
बहादुर हो तो ऐसा हो दिलावर हो तो ऐसा हो।
हुआ जब युद्ध भारत का, लिया तब पक्ष आरत का।
दिया उपदेश अर्जुन को, सख़ुनवर हो तो ऐसा हो॥
सुदामा की विपति टाली, बनाया उसको धनशाली।
यह 'राधेश्याम' जग ज़ाहिर, कृपाकर हो तो ऐसा हो॥

ग़ज़ल नं० २८

दिखाओगे दरस दासों को, ऐ गिरधर तो क्या होगा?
निहारोगे निगाहे--शौक़ से दम भर तो क्या होगा?
जगद्गुरु से हे धरणीधर, बने हो जब कि मुरलीधर।
सुनाओगे मधुर मुरली अधर धर कर तो क्या होगा॥

विरह की वह है बीमारी हुई है ज़िन्दगी भारी।
पिलाओगे पियाले प्रेम के भर भर तो क्या होगा॥
न तरसाओ इधर आओ ज़रा तो देखते जाओ।
बनाओगे हमारे दिल को अपना घर तो क्या होगा॥
न दिनको चैन है दमभर न शबको नींद है पल भर।
उठाओगे मेरी उम्मीदका गिरिवर तो क्या होगा॥
पतित है दास 'राधेश्याम' पतित-पावन तुम्हारा नाम।
उबारोगे अधम हमसा, हे विश्वम्भर तो क्या होगा॥

ग़ज़ल नं० २९

पिलादे अब तो उल्फ़त की मये-गुलनार थोड़ीसी।
रही है उम्र बाक़ी मूनिसे-ग़मख्वार थोड़ीसी॥
तमन्ना है यही दिल में थका बैठा हूं मंज़िल में।
दमे रुख़सत तो देखें सूरते दिलदार थोड़ीसी॥
गिला किससे करें क़िस्मत! हम अपनी बदनसीबी का।
फिसल कर गिर पड़े जब रह गई दीवार थोड़ीसी॥
न अपने पास बुलवाते न मेरे पास ही आते।
इन्हीं बातों में रहती है सदा तकरार थोड़ीसी॥
हमारे क़त्ल को शमशीर क्यों तोली है 'राधेश्याम'।
यह काफ़ी है तुम्हारी अबरुए-ख़मदार थोड़ीसी॥

ग़ज़ल न० ३०
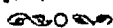
बिना दर्शन मदनमोहन नहीं दिलको क़रारी है ।
चुभी तन में छुपी मनमें ग़ज़ब चितवन तुम्हारी है ॥
जो कल्पाओगे दासों को तो तुम भी कल न पाओगे ।
यहां तो उम्र सारी इन्तिज़ारी में गुज़ारी है ॥
भला यह किसने है माना कि दिल लेकर मुकर जाना ।
बनाना दिल को दीवाना यह कैसी ग़मगुसारी है ॥
फ़िदा हम जिस तरह तुमपर अगर तुमभी हो कुछ हमपर ।
तो हम बतलायें फिर आकर यह उलफ़त कैसी प्यारी है ॥
अगर चाहो जो तुम हमको मज़ा दिखलायें हम तुमको ।
यहां बारी तुम्हारी है वहां बारी हमारी है ॥
हैं ख़ासो आम तो ख़्वाहां, पै 'राधेश्याम' है गिरियां ।
यहां तो ख़ुमके ख़ुम ख़ाली किये हैं यह ख़ुमारी है ॥

ग़ज़ल न० ३१

ब्रजचन्द कृपासिन्धु इधर भी कृपा करो ।
दर्शन कभी कभी तो हमें भी दिया करो ॥
प्रह्लाद के तुम्हीं तो हो ध्रुव के तुम्हीं तो हो ।
दीनों के तुम्हीं हो तो कभी तो सुना करो ॥
ब्रज नारियों की यारियोंमें आ रहे हो रोज़ ।
दीनों से दीनबन्धु न नख़रा किया करो ॥
तुम नामके घनश्याम हो या कामके घनश्याम ।
कैसे ही सही आज हमारा कहा करो ॥

यमुना समीप आओ चलें वेग 'राधेश्याम' ।
वंशी बजाके रास वहां ख़ास का करो ॥

ग़ज़ल न० ३२

मय मुहब्बत की मुझे यार पिला थोड़ी सी ।
चाशनी शरबते-दीदार चखा थोड़ी सी ॥
दास का काम हो तो नाम हो बंदा परवर ।
आरज़ू आपसे रखता हूं सदा थोड़ी सी ॥
ख़ाकसारी हमें, सरदारी मुबारिक तुमको ।
मस्त देवेंगे दुआ कीजे दया थोड़ी सी ॥
फिर बतादूं गा कि तड़पी है कहां पर बिजली ।
देखलूं आपकी मुसकान ज़रा थोड़ी सी ॥
प्रेम है तो कभी आजाओ यहां "राधेश्याम" ।
हम ग़ुलामोंकी भी ले लीजे दुआ थोड़ी सी ॥

ग़ज़ल न० ३३

आये थे होने को दो चार तेरे कूचे में ।
क्या कहें होगई तकरार तेरे कूचे में ॥
ज़ोर है ज़ुल्म है दिलदार तेरे कूचे में ।
मौत का गर्म है बाज़ार तेरे कूचे में ॥
नागिनी ज़ुल्फ़तेरी श्याम, जिसेडसती है ।
सर वह पटके सरे-दीवार तेरे कूचे में ॥

कोईतड़पा कोईसिसका कोई बेहोश पड़ा।
बेख़ता चलती है तलवार तेरे कूचे में ॥
आज या कल कभीपायेंगेदरस 'राधेश्याम'।
अड़ गये तालिबे--दीदार तेरे कूचे में ॥

ग़ज़ल न० ३४

दिल चुराके मेरा अब शक्ल छिपाते क्यों हो ?
बेकलों देके गली घर की बताते क्यों हो ? ॥
यह तो मानाकि तुम्हीं तुम हो जहाँके अंदर ।
आईना हाथ में फिर अपने उठाते क्यों हो ॥
श्याम हो, दिलके भी कुछ श्याम हो ऐ नागरनट।
वार पर वार लगातार लगाते क्यों हो ॥
और यूं ही सही अब तो हटो सोने दो हमें ।
रस भरी तान बजा कर के जगाते क्यों हो ॥
दिलमें दिलदार बसो चैनहो तब 'राधेश्याम' ।
दूर ही दूर खड़े भैरवी गाते क्यों हो ॥

ग़ज़ल न० ३५

यार दिलदार वह दीदार दिखाओ तो सही ।
कबसे बीमार हैं टुक आंख उठाओ तो सही ॥
हैं तलबगार तेरे द्वार पै ग़मख़्वार खड़े ।
बंशी कर धार के सरदार बजाओ तो सही ॥

कब से सरशार हैं हर बार करें यह ही पुकार ।
करते हो किसलिये तकरार बताओ तो सही ॥
यह ही दरकार है सरकार न भूलो इक़रार ।
अबरू ख़मदारका फिरवार चलाओ तो सही ॥
वार तन मन दिया बलिहार हुआ 'राधेश्याम' ।
फ़रमां-बरदार को इनकार सुनाओ तो सही ॥

ग़ज़ल नं० ३६

मोहन सोहन काह्न जतन गाहे नज़र बरमन फ़िगन् ।
टेर हमारी कर श्रवन गाहे नज़र बरमन फ़िगन् ॥
दीनदयाल आप हैं दास के माई बाप हैं ।
कीजे कृपा राधेरमन गाहे नज़र बरमन फ़िगन् ॥
जी की तपन बुझाइये बांकी अदा दिखाइये ।
दास है चरण की शरन गाहे नज़र बरमन फ़िगन् ॥
विनती है यह ही नन्दकुमार दर्शन जोपायें एक बार ।
दूर हो फिर तो सब तपन गाहे नज़र बरमन फ़िगन् ॥

ग़ज़ल नं० ३७

मदन-मोहन दरस अपना दिखाता जा दिखाता जा ।
सुरीली तान बंसी में बजाता जा बजाता जा ॥
बग़ल में बांसुरी लेकर किधर को रुख़ किया दिलबर ।
नज़र अपनी इधर को भी घुमाता जा घुमाता जा ॥

कई बरसों से हूं माइल ज़माना कहरहा पागल ।
पुरानी प्रीति को प्यारे निभाता जा निभाता जा ॥
ज़रासी आस बाक़ी है हमें इतना ही काफ़ी है ।
"ख़फ़ा है याके राज़ी है" बताता जा बताता जा ॥
ज़माने में हुआ है नाम तेरी वंशी का 'राधेश्याम' ।
ज़रा हमको भी वे तानें सुनाता जा सुनाता जा ॥

ग़ज़ल न० ३८

मदन-मोहन तपन मेरी बुझाता जा बुझाता जा ।
पिलायेपर पिलाये अब पिलाता जा पिलाता जा ॥
कृपा तो होगई काफ़ी, तमन्ना रहगई बाक़ी ।
रुखे-रुख़सत ज़रा झांकी, दिखाता जा दिखाता जा ॥
न मुझको चाहिये जन्नत, न मुझको चाहिये दौलत ।
मेरी सोई हुई क़िस्मत, जगाता जा जगाता जा ॥
मेरी टूटी हुई नैया, नहीं है कोई खेवैया ।
किनारे पर इसे भैया, लगाता जा लगाता जा ॥
कुढब रस्ता कड़ी मंज़िल, मेरा असबाब है बोझिल ।
यह 'राधेश्याम' की मुश्किल हटाता जा हटाता जा ॥

ग़ज़ल न० ३९

दिखाके दरशन चुराके तन मन,
किधर को मोहन गये हो बनमें ।

निहारी जबसे निराली चितवन,
न होश तन में न चैन मन में ॥
ज़रा नज़र कर ऐ श्यामसुन्दर,
खड़ा हूं कबसे मैं तेरे दरपर।
बजादो मुरली मधुर अधर धर,
चलेचलो टुक सघन बिपन में ॥
झलक न ऐसी लखी ख़लक़ में,
अलकने बिसमिल कियापलकमें।
उलट पलट छारही हैं रुख़ पर,
छिपा मनो चन्द्र-बिम्ब घन में ॥
हुआ हूं मायल पड़ा हूं घायल,
न इसका क़ायल कि ग़महै हायल।
असल तो यह है बनाहूं पागल,
लगी मोहब्बत की आग तन में ॥
है आस अरदास ख़ास दिल की,
न पास इफ़लास के है कौड़ी।
भरोसा है 'राधेश्याम' इतना,
पड़ा हुआ हूं शरण चरणमें ॥

ग़ज़ल न० ४०

देखो तो कैसी लीला, नटवर दिखा रहा है।
यमुना के तट पै बैठा, बंसी बजा रहा है ॥

अन्नदाता सबका है जो, देता है रोज़ सबको ।
वह आज प्रेम के वश, माखन चुरा रहा है ॥
जो है जगतका जीवन, निर्लेप और निरञ्जन ।
वह काली कमली ओढ़े, गउएं चरा रहा है ॥
जो विश्वका विधाता, संसार को नचाता ।
कालीके फनपै चढ़ वह, ख़ुदको नचा रहा है ॥
वह 'राधेश्याम'जनहै, जिसपर कि भक्ति धन है ।
भगवान भक्ति वश हैं, यह वेद गा रहा है ॥

ग़ज़ल नम्बर ४१

हर शै में श्यामसुन्दर, जलवा दिखा रहा है ।
हरदम हमारा हमदम, हरि दम दमा रहा है ॥
जो उसपै मनको लाया, आनन्द उसने पाया ।
जिसने उसे मनाया, वह उसको पा रहा है ॥
बस धन्य वहही जनहै, चरणोंमें जिसका मनहै ।
जो ध्यान में मगन है, वह सुख उठा रहा है ॥
जिसने किया उपासन, बस होगया वह पावन ।
सुन सुनके उसका वरणन, ब्रह्मा लजारहा है ॥
जो बन्दयेहिरस हैं, दुखिया वही अबस हैं ।
भक्तों के श्याम वश हैं, आगम बता रहा है ॥
जो 'राधेश्याम' मोमें, व्यापक है सोही तोमें ।
यह देख हरजनों में, हरि ही समा रहा है ॥

ग़ज़ल न० ४२

गौएँ चराने आया, जब यार हंसते हंसते ।
दिल होगया तभी से, सरशार हंसते हंसते ॥
यमुनाका था किनारा, मारा था जब नज़ारा ।
गोया जिगरमें बिजली, की पार हंसते हंसते ॥
वह चाल बांकपन की, मीठी हंसन दशनकी ।
तन में बसी सजन की, गुफ्तार हंसते हंसते ॥
लट ने उलट पलट के, घायल किया झपट के ।
करदी शिफ़ा लिपटके, सरकार हंसते हंसते ॥
तन मन मेरा फंसाकर, सुध बुध मेरी भुलाकर ।
काफ़ूर हो गया वह, दिलदार हंसते हंसते ॥
है 'राधेश्याम' बेकल, प्यारे करो हो क्यों छल ।
यक बार फिर दिखादो, दीदार हंसते हंसते ॥

ग़ज़ल न० ४३

गई ढूंढत ढूंढत हार मगर,
गिरधरके नगरका डगर न मिला ।
भई बार बड़ी हरबार फिरी,
पर छैल-छबीले का घर न मिला ॥
वृन्दावन यमुना तीर गई,
वंशीवट भी दिलगीर गई ।

दिलदार के द्वार पै ख़्वार भई,
दिल भी न मिला दिलवर न मिला॥
बरसाने गई, नँदगाम गई,
मथुरा और गोकुल धाम गई।
सब घाटन बाटन ढूंढ थकी,
उस शानका कोई बशर न मिला॥
कहूं काहू से जाकर टोह करी,
कहूं जाके छिपी कहूं साफ़ रही।
गई सबकी नज़र से गुज़र पर वह,
इस घर न मिला उस घर न मिला॥
है ज़ाहिर सब पै मुदाम तुही,
और गुप्त भी 'राधेश्याम' तुही।
तुही ज़ाहिरोबातिन खेल रहा,
तेरे खेल का अन्त मगर न मिला॥

ग़ज़ल नम्बर ४४

बलदेवअली,कुञ्जनकीगली वोछलीमुरलीको बजावत है
रस-रंग-रंगीलीनवीलीनुकीली उमंगसे तान लगावत है
हंस हंसके करे रसके बसमें चसके ठसके दिखलावत है
छलिया छलछँद छबीलो छली छैला छिपछाछ चुरावत है
छतियां छुइ रार मचावत है दधि की मटुकी ढरकावत है
निकलीइकली जो गलीमेंललीतभी सैनचला इठलावत है

गल बांह वो डाल कुचाल करे पौरी पर बौरी बनावत है
शुचिरूप सरूप अनूप है तापर नैन के सैन चलावत है
जाकी गति वेद न जानत है जो ब्रह्म अखण्ड कहावत है
वशप्रेमके 'राधेश्याम' है वो लेउ छाछ पै नाच दिखावत है

ग़ज़ल नम्बर ४५
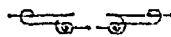
लो देखो सखी धुन गूंज उठी,
लई हाथ में श्यामने बांसुरिया।
जभी कानमें कान्ह की तान पड़ी,
तभी भागी मैं छोड़ कै बाखरिया॥
चलो आओ चलें यमुना तटपै,
वंशीवट कुञ्ज कदम्ब तरे।
गहो छैल की गैल, झमेल न हो,
तज देहु यहीं दधि-गागरिया॥
सखी श्याम सलोनो बड़ो छलिया,
बतियां घतियां कर छीने जिया।
दैयारे कटारी सी वे अंखियां,
जिन घायल कीं ब्रज-नागरिया॥
यक रोज़ सखी सुन बात नई,
गिरधर से अचानक भेंट भई।
उन मोसों कही 'कहां जाय सखी',
सुन बैन भई मैं बावरिया॥

यूं ही श्याम बड़ाई सुनाती हुईं,
ब्रजबाल गुपाल के तीर गईं।
मुरली सुन 'राधेश्याम' छकीं,
गईं भूल अपनपौ डागरिया॥

ग़ज़ल नं० ४६

श्याम ने छवि जो दिखाई मेरा जी जानता है।
जैसी झांकी नज़र आई मेरा जी जानता है॥
माह सावन का था सोता था पड़ा छतपर मैं।
उस समय कुछ घटा छाई मेरा जी जानता है॥
आये घनश्याम भी घन-श्याम की नाईं सर पर।
नींद कुछ मेरी छुड़ाई मेरा जी जानता है॥
फिर मुक़ाबिल हुए और मुझसे कहा-"अच्छा है?"
तू ने जो टेर सुनाई मेरा जी जानता है॥
यह मधुर बात सुनी मैंने तो उठ कर बैठा।
आंख आंखों में गड़ाई मेरा जी जानता है॥
अङ्ग से अङ्ग लगे बात न मुंह से निकले।
गोया तसवीर खिंचाई मेरा जी जानता है॥
ध्यान से ज्ञान हुआ झूठ सही जान लिया।
फिर न दिखलाई खुदाई मेरा जी जानता है॥
देख के बे-कली और बेखुदी मेरी दिल की।
हंस पड़े कृष्ण कन्हाई मेरा जी जानता है॥

खुलगई आंख तो बेचैन हुआ 'राधेश्याम' ।
फिर नहीं शक्ल वो पाई मेरा जी जानता है ॥

ग़ज़ल न० ४७

मुझको भाया है चपल छैल वो नँदका छोना ।
एक ही बार में राधे किया मुझपर टोना ॥
हूक उठती है सखी भूख न लगती मुझको ।
दिनको है बे-कली और रातका भूली सोना ॥
साथ की नारि मुझे कहती हैं यह है बौरी ।
सुनके यह बात सखी आता है मुझको रोना ॥
नतो मोहन ही मिले और न कल दिनको पड़ी ।
ढूंढ आई हूं मैं ब्रज का सखी कोना कोना ॥
राधिका, तेरे है. वशमें मेरा चित-चोर हरी ।
फिर तू मुझ दीनको मोहनसे मिलाती क्योंना ॥
सुनके यह बात किशोरी जी हँसीं 'राधेश्याम' ।
दोनों बिछुड़ोंको मिलाया मिटा रोना धोना ॥

ग़ज़ल नम्बर ४८

सुरीले कान्ह की आवाज़ जब से कान में आई ।
न पूछो तबसे बे-ताबी न दम भरको भी कल पाई ॥
कठिन है आजतो पलरलहू बन कर बहा है जल ।
यह वँशीसुनके पायाफलकि सरमें वहही लय छाई ॥

चुराकर चितको आंखोंमें भुलाकर मीठी बातोंमें ।
बजाकर बांसुरी, वह लेगया दिल देखो यदुराई ॥
सुनाकर रसभरा गाना बनाकर मुझको दीवाना ।
न अब दर्शन दिखाता है कहां की है यह प्रभुताई ? ॥
नअब दुनियाओदींसे कामतुम्हाराहीहै'राधेश्याम'।
मिले इस प्रेमका मारग तो जीवन होय सुखदाई ॥

ग़ज़ल न० ४९

हमेशा हम दुआगो हैं हमेशा प्यार करते हैं ।
मगर हमको वह जब मिलते तभी बीमार करते हैं ॥
न मुरली कुछ सुनाते हैं नघर जाने को कहते हैं ।
हमारी आज बन के बीच मिट्टी ख्वार करते हैं ॥
जो तालिब आप हैं जांके तो हम पाबन्द फ़रमांके।
फ़ुगां तक भी न करनेके यह हम इक़रार करते हैं॥
सुना है तुमको झुंझलाकर गले पड़नेकी आदतहै ।
इसी से हम कई दिनसे नई तकरार करते हैं ॥
अड़े द्वारे पै 'राधेश्याम' हटकर जा नहीं सकते ।
जो हो कुछ मर्द तो आओ यही ललकार करते हैं ॥

ग़ज़ल न० ५०

ग़रीबों की यह आह ख़ाली नहीं है ।
बला ख्वामख्वा हमने पाली नहीं है ॥

शजर बन गया है समर आयेगा ही ।
कसर है तो इतनी कि माली नहीं है ॥
हमारी मुहब्बत की है दाद दिलवर ।
यह तलवार तुमने निकाली नहीं है ॥
हमें आईना-खाना है सारी दुनियां ।
यह तसवीर अपनी ख़याली नहीं है ॥
मुहब्बत है तो गिल्ले शिकवे भी होंगे ।
दुआ है दुआ है यह गाली नहीं है ॥
हमें 'राधेश्याम' हो यह फ़ुरक़त मुबारक ।
इजाज़त कोई हमने टाली नहीं है ॥

ग़ज़ल नं० ५१

अरी आह तुझ में असर कुछ नहीं है ।
यहां ग़म वहां पर ख़बर कुछ नहीं है ॥
शबो दिन तेरी याद दिलसे न जाती ।
जो पागल कहो तो कसर कुछ नहीं है ॥
तेरी यक नज़र हम से फिरने न पाये ।
ज़माने के फिरने का डर कुछ नहीं है ॥
नज़र के हैं मुश्ताक़ ज़ेवर नज़र के ।
ग़रीबों पै दिल है नज़र कुछ नहीं है ॥
मुक़द्दर में है तो चले आओगे ख़ुद ।
गिला 'राधेश्याम' आप पर कुछ नहीं है ॥

ग़ज़ल नं० ५२

मौसम बहार आया है क्या आबताब है ।
इन्सान तो क्या रंग चुका अब आफ़ताब है ॥
मेरा तो आज भी है कलेजा धड़क रहा ।
बज़्मे रक़ीब ने जो उठाया रबाब है ॥
तुम आंखमेंहो दिलमेंहो और जानकेहो साथ ।
फिर भी मैं क्या कहूं मुझे अबतक हिजाब है ॥
तुम हो जवान पर हुई बूढ़ी यह मुहब्बत ।
रँग ढोल रहे हो तो कहो यह ख़िज़ाब है ॥
मथुरामें 'राधेश्याम' तुम्हें क्या मज़ा आता ।
आशिक हैं सब तरफ़ अगर दौरे शबाब है ॥

ग़ज़ल नं० ५३

देखो, वो श्यामसुन्दर कुञ्जों में जा रहे हैं ।
कानन में शब्द आया कानन से आ रहे हैं ॥
आखोंमें उनकी जादू बातोंमें उनकी जादू ।
जादूगरी दिखा कर मुर्दे जिला रहे हैं ॥
चलते हैं धीरे धीरे हँसते हैं चुपके चुपके ।
और धीमे धीमे स्वर से वँशी बजा रहे हैं ॥
कितने कियेहैं मायल कितने कियेहैं घायल ।
वे तड़पड़ा रहे हैं वे बिलबिला रहे हैं ॥

नज़रों में कह रहे हैं हम 'राधेश्याम' के हैं ।
आंखों में धीरे धीरे हम छवि बसा रहे हैं ॥

ग़ज़ल न० ५४

नँदराय जी को चल के बधाई सुनायेंगे ।
छोटे सलोने श्यामको गोदी खिलायेंगे ॥
नौबत नक़ारख़ाना ख़ुशी का तराना है ।
फ़रज़न्द अर्जमन्दकी ख़ुशियां मनायेंगे ॥
रेशम की डोर डाल खटोला बिछायेंगे ।
गोदीमें लेके लालको पलना झुलायेंगे ॥
मोती जवाहरात ज़रो--माल पारचे ।
बख़्मे सलामती में सभी कुछ लुटायेंगे ॥
मथुरासे 'राधेश्याम' जी रावलपुरी चलो ।
अब राधिकाके जन्मकी आशा लगायेंगे ॥

ग़ज़ल न० ५५

न बरजोरी करो हम से लला घनश्याम होली में ।
हटाओ इस बने रँग का रिवाजे ख़ास होली में ॥
भरे झोली गुलालों की लिये टोली हो ग्वालोंकी ।
बने हो आज फागुन के नये गुलफ़ाम होली में ॥
यह बरसाना है हे कान्हा! यहां पै रँग न बरसाना ।
अदल है यां किशोरी का करो आराम होली में ॥

मरदुओं को यहां पर गोपियां नारी बनाती हैं ।
कहीं श्यामा न बनजाना बढ़ाकर नाम होली में ॥
चली होनी थी सो होली नई होली मुबारक हो ।
पियो अब प्रेम बूँटी का रँगीला जाम होली में ॥
सुनी यह बात ललिताकी हँसीं इतने में राधाजी ।
मिले हैं बाद मुद्दत के यह 'राधेश्याम' होली में ॥

ग़ज़ल न० ५६

आज किस शान से आई है घटा सावन की ।
बे तरह सिर पै चढ़ी है ये बला सावन की ॥
सर पै बदली है तो बदलो है हवा भी कैसी ।
बंधगई आज तो ब्रज में भी हवा सावन की ॥
साथ घनश्याम के श्यामा हैं सखी भी तो हैं ।
सब तरफ़ तान है या है यह सदा सावन की ॥
श्याम घनश्याम हैं सावन है यही वृन्दावन ।
दामिनी बनगई वृषभानु--सुता सावन की ॥
देखली हमने यह दुनिया की दुरँगी सारी ।
लाल फागुनकी थी और सब्ज़ अदा सावनकी ॥
जब हों साजन तभी सावन तभी फागुन अपना ।
अब न दिखलाइये तसवीर बना सावन की ॥
उस जगह हम भी खड़े होके कभी 'राधेश्याम' ।
गायेंगे रागिनी एक रोज़ भला सावन की ? ॥

ग़ज़ल न० ५७

जो धर्म के मारग में मन अपना लगाते हैं ।
बिगड़ी हुई सब उनकी भगवान बनाते हैं ॥
सच्चे धनी वही हैं, धन धन्य है उन्हीं को ।
दुखियों में, ग़रीबों में, जो धनको लुटाते हैं ॥
दुनियांमें बस उन्हींका रहता है बोल बाला ।
औरों के सुख की ख़ातिर जो दुःख उठाते हैं ॥
होती विजय उन्हीं की डंके उन्हीं के बजते ।
नेकी की जङ्ग में जो सर अपना कटाते हैं ॥
है 'राधेश्याम' जगमें जीवन सफल उन्हींका ।
जो प्रेम-रंग में अपने चोले को रंगाते हैं ॥

ग़ज़ल नम्बर ५८

सनातनधर्म का जलसा मुबारक हो, मुबारक हो ।
समागम धर्मवीरों का, मुबारक हो मुबारक हो ॥
बहाना प्रेम का दरिया, बजाना सत्य का डङ्का ।
उठाना धर्म का झंडा मुबारक हो मुबारक हो ॥
जहां पर धर्म रहता है वहीं भगवान् रहते हैं ।
इसी से धर्म का चर्चा मुबारक हो मुबारक हो ॥
कुरीतों से बचे रहना सुरीतों में जचे रहना ।
यही उपदेश है अपना मुबारक हो मुबारक हो ॥

सदा ऐसी ही वर्षा हो सदा ऐसी ही शोभा हो ।
तो 'राधेश्याम' का आना मुबारक हो मुबारक हो ॥

ग़ज़ल नं० ५९

भजन भगवान का करले अरे मन मूढ़ अज्ञानी ।
कहांतक हम कहें तुझसे हैथोड़े दिनकी ज़िंदगानी ॥
जो तेरे पास आंखें हैं तो दर्शनकर दयामय का ।
जो तेरे कान हैं तो सुन उन्हींका नाम अभिमानी ॥
तू चल उनकी शरण में इसलिये यह पाओं हैं तेरे ।
तू गा उनके गुणोंको इसलिये तुझको मिली वानी ॥
अगर धन है तो दानी बन अगर तनहैतो सेवाकर ।
जो मन है तो उन्हें दे दे न है जिनकी कोई सानी ॥
ये'राधेश्याम'का कहना, अरे नर भूल मत जाना ।
नहीं तो लाभ के बदले तुझे होगी महा हानी ॥

ग़ज़ल नं० ६०
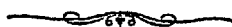
सर्वेश, सर्व सुधार को, अवतार लो, अवतार लो ।
आओ जगत्-उद्धारको, अवतार लो, अवतार लो ॥
डगमग है नाव उबार लो, कर्त्तार तुम पतवार लो ।
अब तारलो संसार को, अवतार लो, अवतार लो ॥
सर्वत्र स्वार्थ, अनीति है, न है धर्म, कर्म न प्रीति है ।
भूले हैं सब भर्तार को, अवतार लो, अवतार लो ॥

'बढ़ता है अत्याचार जब, होता हूं मैं साकार तब' ।
भूलो न इस इक़रारको, अवतार लो अवतार लो ॥
सब ओर शान्ति-प्रसारहो, सर्वत्र सद्व्यवहार हो ।
फैलाओ ऐसे प्यार को, अवतार लो, अवतार लो ॥

ग़ज़ल न० ६१

हमें धनसे है मतलब क्या ? हैं हम तो रामके बन्दे ।
रहा करते नहीं प्यासे, कभी घनश्याम के बन्दे ॥
त्रिलोकीकी भी सम्पति हो, तो उसको मारदें ठोकर ।
हैं हम उस द्वार के बन्दे, हैं हम उस धाम के बन्दे ॥
कभी मरते नहीं दुनिया के झूठे नाम पर धन पर ।
जो हैं हरिनाम के प्रेमी, जो हैं हरि नाम के बन्दे ॥
सदा अलमस्त रहते हैं, सदा आनन्द करते हैं ।
सब उनके काम पूरण हैं, जो पूरण-काम के बन्दे ॥
उन्हें जगमें सताते हैं, न दुख या क्लेश किञ्चित् भी ।
जो हैं श्रीकृष्ण, राधेकृष्ण, 'राधेश्याम' के बन्दे ॥

ग़ज़ल नम्बर ६२

वे और हैं जो तुम में संसार देखते हैं ।
संसार में तुम्हीं को हम सार देखते हैं ॥
संसार फिर कहां है ? 'मैं-मोर' फिर कहां है ?
जब सब तरफ़ तुम्हारा दीदार देखते हैं ॥

देता नहीं दिखाई, दूजा कोई सहारा ।
इस पार देखते हैं, उस पार देखते हैं ॥
अपनीही आप सूरत, अपनाही आप नक्शा ।
कपड़े बदल बदल कर बेकार देखते हैं ॥
उठते हैं बैठते हैं वह दर्द बन दवा बन ।
पर्दा हटा हटा कर बीमार देखते हैं ॥
नफ़रत करें तो किससे, नीचा कहें तो किसको ।
जब जानते हैं हम यह, सरकार देखते हैं ॥
सबमें तुम्हारे वहही, अय 'राधेश्याम' आते ।
बंशी धनुषको दो दो जो यार देखते हैं ॥

* राधेश्याम विलास *

तीसरा खण्ड

(इस खण्ड में भजन इत्यादि प्रकाशित हैं)

भजन गणेश स्तुति, न० ६३

सबसे प्रथम मनाओ गणेश, जिससे दूर हों सभी कलेश ।
एक-दन्त गुणवन्त सन्त हैं, अन्त महँत न पावें ।
दयावान् श्रीमान् ज्ञाननिधि भक्तिदान दिलवावें ॥
पूजें नित्य शेष अमरेश, नित्यप्रति निकलत भजत दिनेश ।
ऋद्धि के आकर सिद्धि के सागर बुद्धि के नागर स्वामी ।
मनोकामना पूरण कीजे 'राधेश्याम' नमामी ॥
माता पिता सहित विघ्नेश, रक्षा मेरी करो हमेश ।

प्रभाती न० ६४

शङ्कर महाराज आज राखो लाज मेरी ॥
मांगत हूं बार बार, विनवत हूं कर पसार।
लो गंवार को सुधार, आयो शरण तेरी ॥ १ ॥
अब तो सुनलो पुकार, लीजे जन को उबार।
बेड़ा कर दीजे पार, काटो अन्धेरी ॥ २ ॥
तुम हो करुणानिधान, तुम्हरो मैं सुत अजान।
दीजे वर भक्ति दान, कीजे नहीं देरी ॥ ३ ॥
जल्दी कर दीजे काम, हूं मैं तुम्हरो गुलाम।
गावे है 'राधेश्याम' पुनि पुनि यूं टेरी ॥ ४ ॥

प्रार्थना न० ६५

मनकामेश्वरनाथ, आज मन-कामना पूरण करो।
जय महाराजा भोले बाबा पार्वती के नाथ ॥
गल हैं भूत, नांदिया वाहन डमरू सोहे हाथ।
नीलकण्ठ रुद्राक्ष गले में जटा विराजे गङ्ग।
अर्ध-चन्द्र मस्तक पर राजे गौरी गणपति सङ्ग ॥
तन मसानकी भस्म रमी है लिपट रहे हैं व्याल।
हाथ त्रिशूल त्रिलोचन जी के गले मुंडकी माल ॥
आक धतूरा सदा चबावें चढ़ी रहत है भङ्ग।
राम नाम की भरी हुई है जिसमें खूब तरङ्ग ॥
दुराराध्य गम्भीर एक रस अलख अखण्ड अपार।

मायातीत अभेद निरञ्जन सृष्टि-संहारनहार ॥
कैलाशी अविनाशी बाबा, घट २ वासी एक ।
भक्तों के वत्सल गङ्गाजल-निर्मल शुद्ध विवेक ॥
नाथ, आपही हैं इस जनके स्वामी और मां बाप ।
जान रहे हो कहा जताऊं दूर करो सन्ताप ॥
'राधेश्याम' शरण आया है रक्षा करो हमेश ।
पातुमाम् हे दीनदयालो व्यापें मुझे न क्लेश ॥

ठुमरी न० ६६

तर्ज (वेगचलो वेगचलो)

राम कहो राम कहो ।

मोहनमन, लज्जित-कोटि-काम-छवि, सुखराशीरघुवीरा
हरि-पद भज भज भज मन मेरे जप ३ उनहींको नाम ।
'राधेश्याम' रामरघुनन्दन दुखनाशीमेटैं सबतनकीपीरा

दादरा न० ६७

बोलो सियावर राम, सब जन
ऐसोतननहींपुनिपुनिमिलिहै, गालो हरीका नाम, सबजन
भक्ति मुक्तिकी युक्ति करो कुछ अन्त इसीसे काम, सबजन
शाम सुबहमें उमर गुजरिहै जागो 'राधेश्याम', सबजन

रागसोरठ न० ६८

भज मन जानकी-वर चरन।
नित भजत जेहि नारदादिक सकल मङ्गल करन॥
शेष शारद रटत निशिदिन दोष दुख सब हरन।
प्रगटि पग सुर-सरि सुपावनि विश्व तारन तरन॥
धरत ध्यान महेश जिनको भक्त-जन के भरन।
भजिय 'राधेश्याम' रघुपति गहिय प्रभु की शरन॥

जोगिया आसावरी न० ६९

प्रभु तेरी लीला अपरम्पार।
गीध गणिका और अजामिल जाति-हीन गंवार।
दियो निज पद जान सेवक दीन-बन्धु उदार॥
बेर शबरी परम रुचि सों खाये बारम्बार।
द्रौपदी की लाज राखी धुवहिं दीन उबार॥
अपनो जन प्रह्लाद तारो रूप नरसिंह धार।
भार पृथ्वी को उबारो रावणादिक मार॥
ग्राह से गज को छुड़ायो अमित जन दिये तार।
'राधेश्याम' है अधम अनुचर पड़यो तुम्हरे द्वार॥

ठुमरी न० ७०

तज आलस, भजो श्रीराम ।

जन-मन-रञ्जन, भव-भय-भञ्जन, करुणा-गारी-अवध-विहारी, धरत ध्यान जिनको कैलासी, काट देत हैं यम की फांसी, 'राधेश्याम' भज-हरि नाम, आठोंयाम, कर शुचि काम । होनेको आई है शाम । तज आलस० ॥

भजन नम्बर ७१

महावीर बजरङ्ग-वली तनि चितवौ हमरी ओर ।
जयति जयति महाराज कृपानिधि तुमबिन औरनठौर ॥
रोग सोग सब दूर करौ अब तुम लग हमरी दौर ।
'राधेश्याम' सेवक, तुम स्वामी, विनति करै कर जोर ॥

भजन नम्बर ७२

आज करो कृपा मोपै महाराज !

बिना आपके कौन हमारा, दुःख दरिद्र निवारण हारा। रख लीजे मेरी लाज । 'राधेश्याम' चरण अनुगामी, स्वामि नमामि नमामि नमामी, बेगि संभारो काज ।

आसावरी न० ७३

मोपे कृपा करो अब स्वामी ।

वायु-पूत दुख-हरण दयानिधि दूत राम के नामी ।
सब जानत हो हाल हमारो हे प्रभु अन्तर्यामी ॥
नीच प्रकृति वश दास तुम्हारो भयो कुमारग-गामी ।
'राधेश्याम' सुबुद्धि दीजिये हो न धर्म में खामी ॥

भजन न० ७४

हे पवन-पूत हनूमाना,

हो राम-दूत बलवाना, हो रामदूत बलवाना,
अंजनी-कुमार सुजाना, गुण-सागर कृपानिधाना,
अब बेगि खबर मोरी लीजे, निज रूप अनूपको दीजे,
जो शुद्ध अखण्ड अपारा, जेहि वेद न पावत पारा,
जो काम क्रोध से न्यारा, जो विमल अभेद अनूपा,
जेहि नाम न रङ्ग न रूपा, जहां नेक न मन बुधिवानी,
निर्भेद अचल सुखखानी, जहां वैर प्रीति नहीं हानी,
जो श्वेत हरा नहिं नीला, नहिं बने गुलाबी पीला,
अस पद दीजे मोहि स्वामी, करुणानिधि अन्तर्यामी;
यह दास चरण अनुगामी, बालक नादान तुम्हारा,
क्यों मुझको नाथ विसारा, हे दीनबन्धु महाराजा,
अब बेगि सम्हारो काजा, रख लीजे मोरी लाजा,
कहे 'राधेश्याम' कर जोरे, गुरु मातु पिता तुम मोरे ॥

भजन नं० ७५

अफ़सरे-आलम ग़रीब-परवर जय गंगे जय जय गंगे ।
जौहर तेरे बयां हों क्यूंकर जय गंगे जय जय गंगे ॥
देव प्रत्यक्ष तुही कलियुगमें वेद पुराण तमाम कहेंहैं ।
पावे सब सुख गावे जो नर जय गंगे जय जय गंगे ॥
नभ के तारे चाहें गिनलें तेरे तारे गिने न जावें ।
ख़ाली तूने किया है यमपुर जय गंगे जय जय गंगे ॥
मन-वांछित-फल-दातामीताजोजनतुमचरननमनलाता
परम धाम में बनाले वो घर जय गंगे जय जय गंगे ॥
जगदम्बा जग-जननी मैया भवके पार उतारकी नैया।
तारन तरन धार अति सुन्दर जय गंगे जय जय गंगे ॥
सुजला सुफला सुखदा सुन्दर देवी इससे कोई नबेहतर।
एक बारबोलो सब मिलकर जय गंगे जय जय गंगे ॥
दयादृष्टिकर'राधेश्याम'पर पिसरमैंतेराज़लीलोक्मतर
शरण में तेरी पड़ा हूं मादर जय गंगे जय जय गंगे ॥

भजन नं० ७६

काली देवी खप्पर वाली जय दुर्गे जय जय दुर्गे ।
कठिन-कराली नर-कङ्काली जय दुर्गे जय जय दुर्गे ॥
चंड मुण्ड के खंड किये हैं, शुम्भ निशुम्भ संहार दिये हैं।
खलन हलाली जनन कृपाली जय दुर्गे जय जय दुर्गे ॥

जगमगात है ज्योति जगमगी, झलझलात है रूपकी तेज़ी
चमचमात नागिन ज़हरीली जय दुर्गे जय जय दुर्गे ॥
दासकी है अरदास खासकर, त्रासनाशकर भयविनाशकर
अचल, अखण्ड, प्रचण्ड-विशाली जय दुर्गेजय जय दुर्गे॥
करो कृपा कालिका करालिन, छीजें मेरे रोग रिपू-गण ।
बेहाली से करो बहाली जय दुर्गे जय जय दुर्गे ॥
पूत कुपूत सुने हैं जग में, मातु कुमातु कहूं न सुनी है ।
यह विचार करिये प्रतिपाली जय दुर्गे जय जय दुर्गे ॥
'राधेश्याम' अस्तुती गावै सब जन बोलो कालीकी जय ।
श्रोताओं की कर रखवाली जय दुर्गे जय जय दुर्गे ॥

गाना नम्बर ७७

(चौदह ठेके बदल कर गाया जानेवाला गाना)

रूपक—अब तो हरि गुण गाउ मन रे,
हरि से ध्यान लगाउ मन रे

चौताला—निराकार निर्विकार सत्चित् आनन्द सार ।
निर्भय निर अहङ्कार पावत नहिं कोइ पार ।

शूल—ध्यान धरत हैं ऋषि मुनि वृन्द,
आनन्द कन्द, गोकुल चन्द ।

इकताला—मङ्गल मूरत मुरार मोहन मन हरन हार ।
मधुरमधुर मुरलिधार वृन्दावन-कृत-विहार॥

चाचड़-तू है कर्त्ता तू है धर्त्ता,
संकट हर्त्ता त्रिभुवन भर्त्ता ।
आड़ा चौताला-निर्गुण सगुण नये नये,
निर्भय निर्भय नित अनूप ।
पश्ता-कामिल है तू आमिल है तू,
मंज़िल में तू महिफ़िल में तू ।
झपताला-गावें गुण नित्य वेद, पावें नहिं नेक भेद ।
दादरा-सुर नर मुनि ध्यान धरत,
जन मन नित गान करत ।
तनक नमत अभय करत दीनानाथ श्रीयदुपति ।
तिताला-गोविन्द चरित मन गारे,
गारे गुण गोविन्द के ।
कृष्णचन्द्रके, यमकेफन्दकोकाटछांट परमधामपदपारे ।
धमाल-'बांकेदास' पूरण आस ।
खालबंट-धार बाना हरिगुण गाना,
ध्यान लाना भूल नजाना ।
फरोदस्त-छिन छिन हर हर करना
लखना परमधाम परमधाम ।
दिन दिन टर टर तजना
भजना राम नाम राम नाम ।
कहिर्वा-कहे बदलके चौदह ताल करे प्रणाम भैरोंलाल
'राधेश्याम' को ध्याव मन रे ।

भजन नं० ७८
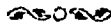
श्रीरामकृष्ण गोपाल हरी हर केशव माधव गिरिधारी ।
देवकीनन्दन कँस निकन्दन खल दल गञ्जन असुरारी ॥
मनमोहन सोहन भय-भञ्जन नन्द-सुवन करुणाकारी ।
यशुमति-लाल दयालु वेणुधर विपतिविदारणअवतारी॥
दीनानाथ पतित-पावन प्रभु दीनवन्धु इच्छाचारी ।
काली-मर्दन केशी-गञ्जन राधा-रमण विपति-हारी ॥
मन्मथ-मद-भञ्जन जग वन्दन जन-मन-रञ्जन बनवारी ।
विद्या बल गुण रूप दयानिधि 'राधेश्याम' गुणागारी॥

अष्टपदी भैरवी नं० ७९
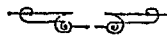
हे जगवन्दन नन्दके नन्दन बिगड़ी बनाने वाले हो ।
विपति विदारी जनमन हारी शोक नसाने वाले हो ॥
कूद यमुन कालीके फन फन नाच दिखाने वाले हो ।
विप्र धेनु सुर सन्त काज भू-भार हटाने वाले हो ॥
दुर्योधन की मेवा तजकर भाजी खाने वाले हो ।
द्रुपद-सुता की लज्जा रखकर चीर बढ़ाने वाले हो ॥
भिलिनिके बेर सुदामाके तन्दुल रुचि रुचि पानेवाले हो।
लीला कारण ग्वाल बाल संग दधि के लुटाने वाले हो॥
गोपिन हेत रास मण्डल में बंशी बजाने वाले हो ।
इन्द्र मान कर भङ्ग तुरत गिरिवरको उठाने वाले हो ॥

जब जब भीर पड़ी सन्तन पर दुःख हटाने वाले हो ।
हिरण्याक्ष को मार भक्त प्रह्लाद बचाने वाले हो ॥
लीला हेतु सकल गोपिन के चीर चुराने वाले हो ।
दुष्ट ग्राह के ग्रास से गज के प्राण छुटाने वाले हो ॥
भवसागर से डूबत नैया पार लगाने वाले हो ।
'राधेश्याम' के नाथ तुम्हीं सबकाम बनाने वाले हो ॥

भजन नं० ८०

श्यामबिहारी श्रीबनवारी नन्द के लाल मुरारी रे ।
गिरिवरधारी शरण तुम्हारी लीजिये ख़बर हमारी रे ॥
जयति खरारी सुधि लो हमारी नँदनँदन जन-मन-दुखहारी
तन मन धन हम तुम पर वारी राधापति दनुजारी रे ॥
दुःखनिवारण जन-मन-रञ्जन काज सँवारन खलदलगञ्जन।
सिद्धि-सदन भव-भेद-विभञ्जन त्राहि त्राहि असुरारी रे॥
जानत हो मनकी गति स्वामी घट घटके हो अन्तर्यामी।
दास चरण का है अनुगामी पाहि पाहि दुख हारी रे॥
'राधेश्याम' की टेक तुम्हीं हो, बुद्धि विचार, विवेक तुम्हीं हो
निर्बल के बल एक तुम्हीं हो, लीन्हीं शरण तुम्हारी रे ॥

भजन नं० ८१

मोरे मन मन मोहन भायो ।
मुनि मानुष निर्जरा नमत हैं वेद भेद नहिं पायो ॥
अवगति की अद्भुत लीला लखि चञ्चल चित्त थिरायो ।

लीला-वश त्रिपुटी को नायक माखन चोर कहायो ॥
गोपिन प्रेम अपार निरख कै नटवर रूप बनायो ।
प्रणतपाल सुन नाम श्यामको अपनो स्वामि जचायो॥
हट गयी मोक्षलालसा हियसों, भक्ति ओर मन धायो ।
(राधेश्याम) ज्ञान मारग तज चरण कमल लिपटायो ॥

हिंडोल नं० ८२

भज रे मन कृष्ण राम, पी ले हरि प्रेम जाम ।
लखिकै निज सत्य धाम, तज दे मद क्रोध काम ॥
कर ले कुछ नेक काम, होने को आई शाम ।
गावे यूं (राधेश्याम) सच्चा एक राम नाम ॥
बाहर कृष्ण राम, भीतर कृष्ण राम ।
जल में कृष्ण राम, थल में कृष्ण राम ॥
सिर्फ़ दुनिया ही में काम आते हैं दुनिया वाले ।
दोस्त हैं दोनों जहां के वे मुरलिया वाले ॥

भजन नम्बर ८३

(ब्रह्म आदिक ताल बदलने का गाना)

काम मन मोहन देहु मोहे दर्शन मुरलीधर श्याम ।
नाम अति सुन्दर नागर नटवर गिरिवर सुख धाम ॥
नन्दलाल गुणके धाम जपता हूं तेरा नाम आठो याम ।
सुबह शाम आस लगी (राधेश्याम) आशा भारी है ॥
बनवारी अर्ज़ी हमारी मर्ज़ी तुम्हारी है ॥

भजन नम्बर ८४

हम गोविन्द गुणन के गवैया

राग रागिनी भेद न जानत गीत संगीत न ख्याल खिलैया
सरगम तान तिराना तिरबट नहिं जानत कछु ताता थैया
लक्ष्मी ब्रह्म गणेश रुद्र पट धुरपद धूल न भेद जनैया
टप्पा मांड़ न ठुमरी जानत नाहिनि लावनि कवित सवैया
राग ताल लय सुर नहिं जानत रोचक रचना के न रचैया
राधेश्याम एक निज प्रभु के उल्टे सीधे नाम लिवैया

दादरा नं० ८५

सुनो बिनती हमारी नन्द के कुंवर ।

हे मनमोहन प्यारे सोहन गिरिवर धारी फेरो नज़र ॥

दो०-क्षण भर हम पर कर नज़र नागर नटवर श्याम ।
मङ्गल कर भण्डार भर, गिर-वर-धर अभिराम ॥

अर्ज़ी हमारी मर्ज़ी तुम्हारी बांके बिहारी लीजे ख़बर ।

दो०-ब्रजपति यदुपति जगत्पति, श्रीपति सुख के धाम ।
मन मोहन मो मन बसौ गावे राधेश्याम ॥

दर्शन दीजे कारज कीजे, जन दुख हारी करदो मिहर ।

सवैया नम्बर ८६

प्रेम से रीझत नन्दकिशोर-
ज और है ठौर पुराणन गायो ।
प्रेम से मेवा त्याग गोपाल ने-
जाय विदुर घर साग है खायो ॥
प्रेम से माखन प्रेम से तन्दुल-
प्रेम से छाछ को भोग लगायो ।
प्रेम से "राधेश्याम" निरञ्जन-
घर घर माखन चोर कहायो ॥

दादरा नम्बर ८७

ख़बर लो मेरी (स्वामी मेरे)
आनन्दकन्दा काटो फन्दा शरण में तेरी (स्वामी मेरे)
दीनदयालु कृपालु कहा कर करी क्यों देरी (स्वामी मेरे)
'राधेश्याम' द्वार की तेरे लगै नित फेरी(स्वामी मेरे)

ठुमरी राग माल कोश की नम्बर ८८

दीजे मोहे दर्शन हे बांके बिहारी ।
सेवक मैं तेरा स्वामी कृपा कीजे अन्तर्यामी, मुरारी ।
प्यारेगिरिवरधारी दर्शन दीजे मोहन शरण मैं तुम्हारी॥
अन्तरा ॥ वंशीवारे प्राणन-प्यारे नैनन के हो तारे-।
तुम हमारे हो गोपाल नन्द के लाल तिर्छी चितवन ॥

मोहन दिखला दर्शन मैं जाऊँ तुम पै वारी।

गाना नं० ८९

निराकार निर्विकार यशोदानन्द आनन्दकन्द-
भुवन-ईश परब्रह्म श्रीगोविन्द श्रीगोविन्द ।
वेद रटत ब्रह्मा रटत शेष रटत सकल देव-
पावत नहिं जाको अन्त परमानन्द परमानन्द ॥
हे अविनाशी घट घट वासी सब सुख राशी पूर्ण प्रकाशी।
विनती सुनिये मोर हे प्रभु विनती सुनिये मोर-- ॥
दीन बन्धु दयालु श्रीपति कहूं दोऊ कर जोर ।
पतित पावन नाथ मेरे शरणागत हूं तोर ॥
बांकेदास "राधेश्याम" जपो रैन दिवस नाम ।
पूरण हों मनोकाम छूटें सब द्वन्द फन्द ॥

गाना नं० ९०

(कई ताल बदल कर गाया जानेवाला गाना)

(तिताला) हे मोहन मुरार सुनो विनती हमार,
लागूं पैयां गुसैयां मुरारी ।
(दादरा) दीजिये दर्शन हे मनमोहन,
बेकल तन मन तुम बिन प्यारे ॥
हे बनवारी कुञ्ज बिहारी,
सुनिये हमारी वंशी वारे ।

(रूपक) रख लाज श्री ब्रजराज जी,
सुन लीजिये महाराज जी ।
(पश्तो) तुम बिन नहिं कोई मेरा,
मैं दास हूं स्वामी तेरा ॥
(झूल) करुणाकारी जन–दुखहारी,
जयति मुरारी गिरिवर धारी ॥
(चोताला) श्रीगोविन्द यदुइानन्द,
परब्रह्म आनन्दकन्द ।
परमानन्द श्रीमुकुन्द काटिये सब द्वन्द फन्द ॥
(कहिर्वा) तिर्छी नज़रिया दिखादे संवरिया,
"राधेश्याम" बलिहारी ।

भजन नं० ११

भज राधेश्याम मुरारी श्रीकृष्णचन्द्र बनवारी ।
मोर मुकट पीताम्बर धारे भाल विशाल बाल घुंघरारे,
भृकुटिबङ्क नैना रतनारे कोटि काम छवि हारी ।
सांवरी सूरत बाहु विशाला गल वैजंती सोहत माला,
रूप मनोहर चाल मराला सँग वृषभानु दुलारी ।
राधाके संग रास रचावें कर विलास हिय-प्यास बुझावें,
मधुर मधुर बंसी झनकावें बांके छैल बिहारी ।

रेखता न० १२

अरे मन भजले बनवारी, दीन-दुख-हारी असुरारी ।
भ्राता मित्र बन्धु सुत दारा, सबही स्वारथका संसारा ।
यहांसे तू जिस दिन जावे, न यह कुछ संग उस छिन जावे ।
अरे टुक चेत महा मानी, है थोड़ी जगमें ज़िन्दगानी ।
बन्दगी कर जो बन्दा है, इसी से कटता फन्दा है ।
कहो जी 'राधेश्याम' कहो, उठो सब मिलकर राम कहो ।

गाना नम्बर १३

जो दीनहै तू तो दीनका दुख मिटाते हैं हरि दयानिधान ।
दयानिधान, दयानिधान, दयानिधान, दयानिधान ॥
भजले दुखी दुःखभञ्जन को मान हमारी मान ।
शरण गए की लाज हैं रखते वे उदार भगवान ॥
अजामेल, गज और गणिकादिक, जानहिं उनकी बान ।
भक्तन हित आतुर ह्वै धावत, भनक पड़त जब कान ॥
बड़े भाग्य मानुष तन पायो कियो न हरि गुण गान ।
यम की मार पड़े जब सिर पै निकस जाय अभिमान ॥
'राधेश्याम' राम कहु मुख सों जो चाहै कल्यान ।
निज जन जान राखि तोहि लै हैं, जगदाधार सुजान ॥

भजन नम्बर १४

कृष्ण कन्हैया, बलके भैया, लाज रखैया तुम्हीं तो हो ।
इस भवसिन्धु अपार धारसे, पार लगैया तुम्हीं तो हो ॥
वृन्दावनकी कुञ्ज गलिनमें, दही लुटैया तुम्हीं तो हो ।
ब्रजगोपाल, ग्वाल बालन संग, गऊचरैया तुम्हीं तो हो ॥
दीन द्रौपदीकी पुकार सुन, चीर बढ़ैया तुम्हीं तो हो ।
भारतमें, आरत अर्जुन के, धीर धरैया तुम्हीं तो हो ॥
वंशीधर, संगीत शिरोमणि, मोहन भैया तुम्हीं तो हो ।
'राधेश्याम' के रखवैया, सब काम बनैया तुम्हीं तो हो ॥

ठुमरी न० १५

लाग गई लाग गई, मोहन की चितवन, इस इस तन मन । लगी ज्यूं सर सर धुन हुई चर चर जिया करे थर थर ॥ तन मन बसगई सुध बुध नसगई हँसकर डस गई जस कर लस गई । 'राधेश्याम' दरस आशा भई तन हुआ थर २ दिल हुआ धक २ नैनन झर झर ॥

गाना न० १६

छविकी छटा है न्यारी छटा है न्यारी, लाजें लखर मैन।
एक तो कमां हैं अबरू कमां हैं अबरू, दूजे तीर दोऊ नैन॥

अलकैं रुचिर घुंघरारी रुचिर घुंघरारी; मीठे रस भरे बैन
जबसे वो सूरति देखी, वो सूरति देखी, 'राधेश्याम' नहीं चैन

गाना नं० १७

आई वर्षा ऋतु सखी, व्याकुल हुआ शरीर ।
श्याम बिना घनश्याम यह, हृदय बढ़ावत पीर ॥
बादलकी कड़क बिजली की तड़क,
कुछ रङ्ग अजीब दिखाती है ।
पपिआकी पिउक कोयलकी कुहुक,
तीरों पर तीर चलाती है ॥
दादुर की रटन झींगुर की झनन,
दम दम पर बढ़ती जाती है ।
पुरवा की सनन बूंदों की झरन,
दिल को बेचैन बनाती है ॥
मोरों की ठुमुक साज़ों की गुमुक,
ज़्यादा तबियत भड़काती है ।
बंसी की भनक मोहन की ठनक,
बिरहिन का बिरह बढ़ाती है ॥
तन मन की कलक दर्शन की ललक,
उठ उठ दिन रैन सताती है ।
सावन की रात साजन की बात,
मोहिं 'राधेश्याम' सताती है ॥

दादरा नं० १८

मोहना से कैसी करूँ बीर ।

अरी वो छैल बड़ो अरर अरर अरररररर ॥

राह चलत मोरी गागर फोरी बिखर गयो नीर ।

अरी मैं कांप उठी थरर थरर थरररररर ॥

धाय पकर मोरी बैयां मरोरी खैंच लियो चीर ।

देखो वो फाड़ रह्यो चरर चरर चरररररर ॥

'राधेश्याम' मैं पकड़न दौड़ी भाग गयो बेपीर ।

अरी वो जाय भज्यो सरर सरर सरररररर ॥

ठुमरी राग देश नं० ११
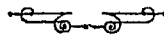
लटक मटक चलत तकत ब्रजपति इत आवे ।

मधुर मधुर अधरन धर बांसुरी बजावे ॥

कुण्डल करन मुकुट लकुट माल गल सुहावे ।

मदन मोहन वचन सरस कहिके मोहिं रिझावे ॥

हँसन चलन मिलन कथन दृगन मन चुरावे ।

घेरत फेरत राह बाट गारियां सुनावे ॥

'राधेश्याम' ढीठ बड़ो नेक न शरमावे ।

रङ्ग ढङ्ग कर, अनङ्ग अङ्ग में बढ़ावे ॥

भजन नं० १००

हमारो मन कृष्ण लला ने ठग्यो ।
नैन रसीले वैन सुरीले माथे मुकुट जग मग्यो ॥
रस भरी वंशी ऐसी बजाई शंकर ध्यान डिग्यो ।
'राधेश्याम' के सरवस तुमहीं तुमहीं से नातो सग्यो ॥

मांड नं० १०१

छबीला छैला सांवरा चलावे नैना तीर ।
श्याम सलोने हो कहां फिरत फिरत हुई श्याम ।
जान लई है श्याम तुम भीतर के भी श्याम ॥
कान्ह तान सुन कान से कुल की छोड़ी कान ।
कानन में का नहिं कियो ढूंढत भई थकान ॥
जान जान की आप हैं जान लीजिये जान ।
जान सुजान न चाहिये बारचो है जो जान ॥
बार बार गयो बार में तबहूं की तुम बार ।
"बारि-मीन" सो हाल है 'राधेश्याम' उबार ॥

दादरा नं० १०२

मन मोहन पै जाऊँ बलिहार तन मन धन से ।
पग अँगुरिनमें छल्ला झलकैं नख सुन्दर छविदार ॥
युगुल चरण वारिज जिन अनगिन पापी दीने तार ।
जंघा कदलि पटल सम सोहत कटि बिच पट शृंगार ॥

उदर त्रिरेख नाभि अति गहरी उर भृगुलता बहार ।
गुंजमाल बनमाल कण्ठ बिच शोभा लसत अपार ॥
भुज आजानु अनन्त शक्तिधर धारे अन्त सुधार ।
रतन जटित मुंदरी अँगुरिन बिच करत प्रभा विस्तार॥
लकुटी सहित बांसुरी राजत जिन मोह्यो संसार ।
गोल कपोल अधर अरुणारे दन्त-पंक्ति इकसार ॥
नाक बुलाक आंख में अञ्जन खञ्जन की अनुहार ।
भृकुटी बङ्क श्रवण बिच कुण्डल माथे तिलक उभार ॥
मोरमुकुट छवि अकथनीय अति घूंघरवारे बार ।
यमुनातीर कदमतरुवरतर खड़े युगुल सरकार ॥
'राधेश्याम' चितै प्रमुदितचित विनवत है हर बार ।

ठुमरी माल कोश न० १०३

पनघट चलो सकल मिल सखियां, गुइयां गहो--नागरियां, गहो गागरियां, । रसीली, रँगीली, छबीली, नुकीली, कटीली, सकल मिल सखियां, वीर वेग चल ब्रज आभूषण मिल जाय कहिं नन्द--को नन्दन 'राधेश्याम' भई बड़ी बिरियां [तान]

ठुमरी न० १०४

जिस भूमि पै वृक्ष करील के हैं,
खारी जल कूप जहां दिखलावें ।

बांदर उत्पात करैं जहां पर,
गारी देकर जहां लोग बुलावैं ॥
ऐसे भङ्गड़िया देश का जो,
वैकुण्ठ से ज्यादा मान बढ़ावैं ।
वे ही श्रीकृष्ण हमारी भी,
त्रुटियां करि दूर हमें अपनावैं ॥

ठुमरी नम्बर १०५

मथुरामें जन्म लें चोरीसे, फिर चोरीसे जो गोकुलजावैं ।
अपनेको चुरावैं ऐसाजो, ब्रह्मा और इन्द्र भी भेद न पावैं ॥
जोचित्तचुरातेफिरैंसबका, औरमाखनचोरसदाकहलावैं ।
वे ही श्रीकृष्ण हमारे भी, बाहर भीतर के दोष चुरावैं ॥

दादरा नम्बर १०६

वंशीवाले तू वंशी बजायजा ।
जिस मुरली ने त्रिभुवन मोहा,
मोहन वोही मुरलिया सुनायजा ॥

मधुवन में ग़ज़ब करगई सरकार की बँसुरी ।
हर एक दिल में बसगई दिलदार की बँसुरी ॥
पर क्या हुआ जो बजगई यकबार की बँसुरी ।
तब बात है जब फिर भी बजे यार की बँसुरी ॥

प्यासे पपीहे पुकारें हैं पिउ पिउ,
प्यास हम प्रेमियों की बुझाय जा ।

है देश वही और वही यमुना की धार है ।
वो ही सघन विपिन वही शीतल बयार है ॥
पर हाय अब वहाँ न वह नंदका कुमार है ।
मुरली है और न मुरली के सुरकी बहार है ॥

ऐसी निठुरता न नीकी बिहारी,
फिरभी अपनी वह झांकी दिखायजा ।

भूले हैं अबभी हम न वह झनकार प्रेम की ।
फिर चाहते हैं बस वही पुचकार प्रेम की ॥
बह जाय अब के देश में वह धार प्रेम की ।
हर ज़र्रे से होने लगे गुंजार प्रेम की ॥

पात पात में जान पड़े फिर,
ऐसी अमृत की धारा बहाय जा ।

गोकुल की गो पुकारें हैं-गोपाल कहां हैं ?
ब्रजभूमि नदीदी सी है—ब्रजलाल कहां हैं ?
सूना हुआ सङ्गीत--वह सुर ताल कहां हैं ?
व्याकुल हैं ग्वाल बाल-प्रणतपाल कहां हैं ?

'राधेश्याम' पुनि एक बार आ,
सोनेवालों को फिरसे जगायजा ।

दादरा नं० १०७

बाजी बंशी मधुर धुन आई रे ।
मन्मथ मनमोहन सोहन ने रस भरी बाज बजाई रे ।
यमुना तीर सघन कानन विच अधरन धर झनकाईरे ॥
घमक तानकी ठमक कान्ह की सबके चित्त समाई रे ।
'राधेश्याम' जाग गए जल थल ऐसी तान लगाई रे ॥

दादरा नं० १०८

गगरी गिरावे काहे काहे रे मोहनवा ।
जाय यशोदा से कहहूंगी,
गारियां सुनावे वीर तेरो वो ललनवा ।
बइयां छुई तो तुम जानोगे,
चुरियां गहीं तो देऊं चार चनकटवा ।
'राधेश्याम' श्याम तब बोले,
छूटत है प्यारी कहूं लागोरे लगनवा ॥

ठुमरी नं० १०९

कान्ह बंसुरिया अब तो बजादे ।
चञ्चल चित को चैन न पल छिन,
बरसत तरसत नैन रैन दिन,
प्यारे प्यारे होटों पे धर के सुनादे ॥ बंसुरिया-

हेर टेर में बेर भई है,
राधेश्याम शुध बुध न लई है,
न्यारे न्यारे गीतों से मन को रिझादे ॥ बंसुरिया-

दादरा न० ११०

मनमोहन मेरो मन चुराय गयो री ।
नैन लगाय गयो, सैन चलाय गयो,
बैन बजाय के लुभाय गयो री ।
तपन बुझाय गयो, वचन सुनाय गयो,
भवन में आय के जगाय गयो री ॥
हियमें समाय गयो, पियको छुड़ाय गयो,
जिय तड़पाय के बिलाय गयो री ।
बातन भुलाय गयो, आंखनमें छायगयो,
'राधेश्याम' भटकाय गयो री ॥

सवैया न० १११

लै दधिकी मटुकी युवती यक पनघट ओर सकारेई धाई । छलिया छबीलेने घेरी गली बोले एरी अली इकली काहे आई ॥ बात कहेजा सुनेजा सुनयनी तू दान दये जा लये जा बड़ाई । चाल नहीं 'राधेश्याम' निकाल छिनाल ये दधि लऊं हाल धराई ॥

सवैया न० ११२

ग्वालिन बोली ठठोली न नीकी है दान को स्वाद अब हाल बताऊं। गारी सुनावो न ज़ोर दिखावो न गालन गुलचन चार लगाऊं॥ टेरिहौं मैं 'राधेश्याम' यशोदहिं, कंस सों कह घर द्वार छुड़ाऊं। चलरे तू छोरा छछोरा बड़ो भयो दास के नाम अंगुट्ठ दिखाऊं॥

दादरा न० ११३

बांकी है छवि बनवारी तिहारी।

मोर मुकुट पीताम्बर झलके, अँखियां हैं रतनारी तिहारी। कुण्डल कानन, माल गल उत्तम, अलकें घूंघरवारी तिहारी॥ 'राधेश्याम' निरखि यों बोल्यो, बलिहारी गिरिधारी तिहारी॥

दादरा न० ११४

सखि आज बधाई बाजै।

रानी यशुमति ढोटा जायो घर घर नौबत गाजै।
हर्षवन्त सब पुर-नर-नारी चहुंदिश कलश विराजे॥
सुमन माल सुर वर्षत हर्षत ध्वज पताक बहु छाजे।
याचक किये अयाचक नँद ने घर घर सम्पति साजे॥
'राधेश्याम' देख बालक मुख कोटिन मन्मथ लाजे॥

दादरा न० ११५

मेरे प्यारे मोहन इधर होते जाना ।
खड़ी हूं मैं दरशन के लालच में कब से ।
ज़रा इस तरफ़ भी नज़र को घुमाना ॥
अमीरों की सोहबत में रहते हो निशदिन ।
ग़रीबों से प्यारे न करना बहाना ॥
कहां से यह सीखा है बतलाओ प्यारे ।
नुकीली नज़र का निशाना चलाना ॥
कहे 'राधेश्याम' कौनसी रीत है यह ।
चुराकर के दिल पीछे रस्ता बताना ॥

दादरा न० ११६

मनमोहन प्यारे वंशी बजाय दुख दैगयो ।
नैन वैन बिन, वैन नैन बिन, कैसे कोई बताय, जताय जिया लैगयो । 'राधेश्याम' नैन बानन सों घायल मोहिं बनाय, लुभाय कित है गयो ।

भैरवी न० ११७

ठाड़ी कुञ्जन की ओर कन्हैया प्यारो वंशी बजाय गयो रे । वंशीवट तट रसभरी भैरवी तान सुनाय गयो रे ॥ मन्द हसन की सुधा बहा तन तपन बुझाय गयो रे । सांवरी सूरत माधुरी सूरत

चितवा चुराय गयो रे ॥ उर बनमाला रूप निराला नैन समाय गयो रे । प्यारो 'राधेश्याम' सांवरो नेहा बढ़ाय गयो रे ॥

दादरा नं० ११८

छैल सैयां दरश दिखलाय जा ।
सरस सलोने सुघर सांवरे, वंशी नैक बजायजा ।
बांकी झांकी पर मन अटको जिय की तपन बुझायजा ॥
सुरँग रंगीली मधुर सुरीली भैरवी तान सुनायजा ।
'राधेश्याम' रसिक मन मोहन प्रीतिकी रीति बतायजा ॥

दादरा नम्बर ११९

आओ बसो यदुवीर, मेरे मन ।
नन्दराय के कुंवर लाडले, सुन्दर श्याम शरीर ।
तन मन धन सर्वस्व तुम्हीं हो, रहो हमारे तीर ॥
कसक रही है पीर हृदय में, नैनन में है नीर ।
'राधेश्याम' दया कब करिहौ, देर भई बलवीर ॥

दादरा नं० १२०
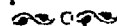
तेरी बांकी नज़रिया जादू भरी ।
मेरे प्यारे संवरिया, जादू भरी ॥

जब से सुनी वह वंशी तिहारी ।
हिय लागी कटरिया जादू भरी ॥
नैनन सों जब लड़े नैन ।
मैं भूली डगरिया जादू भरी ॥
बिसरी नगरिया, ढरकी गगरिया ।
बिछुड़ी बखरिया जादू भरी ॥
'राधेश्याम' तभी वंशीवट ।
बाजी बंसुरिया, जादू भरी ॥

ठुमरी नं० १२१
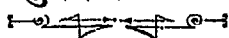
अब अंखियां तोरी प्यारी लगें ।

रतनारी कजरारी मीन मृग छौना वारी, कारी कारी, प्यारी प्यारी सोहैं अलकें । मन वश कीनो मेरो हे सांवरिया, गाय के तान तूम तन नन नन नना, घुंघरू बजत छूम छन नन नन ननना, रसीली नुकीली तेरी सोहें भवें ॥ 'राधेश्याम' छविधाम पूरणकाम, अभिराम, सब के ही मन को हरें ।

दादर नम्बर १२२

वंशी बजाओ दिलदार संवरिया प्यारे हमारे ।
वंशी के कारण जोगिन भई हूं, छोड़ दिया संसार ।
करजोरे मैं विनय करत हौं दिखलादो दीदार ॥

टेरत टेरत बेर भई है, कहाँ हो नन्दकुमार ।
बेगि सुनाओ तान ध्यान की, जाऊं मैं बलिहार ॥
शरण गहे की लाज राखिये, अपनी बान विचार ।
आस लगी है 'राधेश्याम' को जल्दी लेउ निहार ॥

दादरा नम्बर १२३

दर्शन दो दिलदार संवरिया ।
बने भिखारी खड़े द्वार पे, आस लगी सरकार ।
दीन हीन आधीन चरण के, टेरत बारम्बार ॥
शरणागत वत्सल सुन श्रवणन, आय पड़े हैं द्वार ।
दयादृष्टि कर 'राधेश्याम' पर मेटिय सकल विकार ॥

भजन न० १२४

मन मोहन प्यारे आन पड़े हैं तेरे द्वार ।
हे पार लगैया डूब रहे हैं मंझधार ।
हलधर के भैया नैया लगादो मोरी पार ॥
हे कृष्ण कन्हैया अर्ज़ करी है बहुबार ।
बिगड़ी के बनैया काहे लगाई है बार ॥
बंशी के बजैया माया तुम्हारी अपार ।
गिरिवर के उठैया तुम ही बचावन हार ॥
दुन धेनु चरैया 'राधेश्याम' पुकार ।
तुम ही रखवैया तुम ही हमारे सरकार ॥

मांड नं० १२५

सरकार थारी वंशी प्यारी लागे मोरे श्याम,
सरदार जी हो रसिया ॥

बजी बांसुरी कान्ह की, पड़ी कान में आय ।
कानन की करके सुरत, चलीं कामिनी धाय ॥ सर०
भले बांस की बांसुरी, मोह लईं व्रजनार ।
प्रेमाकर्षण में खिंचीं, भूलीं आज सिंगार ॥ सर०
बाजी बोलीं-'वाह जी' बाजी--गईं भुलाय ।
बाजीने बाजी बदी--'वहाँ मिलें यदुराय' ॥ सर०
मिले गैल में साँवरे, बोले--मुरलि दुराय ।
'भामिनि,घर वर छांड़के, चलीं कहाँ तुम धाय' ॥ सर०
देख छली की चाल को; चकित हुईं व्रजबाल ।
बोलीं-'फेर बजाइये, एक बार नन्दलाल ॥ सर०
अब वंशी न दुराइये, याके वश व्रज-वाम ।
तरु पलटिए आज सों, वंशीधर निजनाम' ॥ सर०
रीझे 'राधेश्याम' हरि, सुनि अस प्रेम पुकार ।
वहीं बजाई बांसुरी, गूंज उठा संसार ॥ सर०

भजन नम्बर १२६

ऊधो कब दर्शन देंगे बंशी के बजाने वाले ।
नहिं इसको ज्ञान सुहावे, नहिं निर्गुण पद हमें भावे ।
चाहे कितना कोई समझावे, मनमें तो बसे नन्दलाल-
माखन के चुरानेवाले ॥ ऊधो० ॥ १ ॥

कुबजा से नैन लगाये, झाँसे हम को बतलाये ।
ब्रजभूमि छोड़ बौराये, दासी के दास कहायेंगे--
गिरिवर के उठानेवाले॥ ऊधो० ॥ २ ॥
तुम जाओ यहां से जाओ, बस ज़्यादा मत समझाओ ।
मत कटे पे नोन लगाओ, डस गये नाग हमें काले--
चलो हटो रुलानेवाले ॥ ऊधो० ॥ ३ ॥
जिसका खायें उसे दुखायें, तिसपर झूठा प्रेम जतायें ।
कहने से भी नहीं लजायें, हर तरह श्याम जी श्याम हैं--
जियें नाम धरानेवाले ॥ ऊधो० ॥ ४ ॥
वो भले यहां नहिं आवें, कुबरी से प्रीति बढ़ावें ।
मैया बाबा तर जावें, कहे राधेश्याम तुम जाओ--
झूठा ज्ञान सिखानेवाले॥ ऊधो० ॥ ५ ॥

ठुमरी नम्बर १२७

छेड़ो ना छेड़ो ना, मग चलत मोहन ।
हठ करो न मो सन घनश्याम सुन्दर,
जाय कहूंगी नन्दबबा सों बरजोरी कर,
मोरी गगरी गिराय इतराय बौराय गयो तेरो नटवर ।
हम ग्वालिन बरसानेवारी यह मानलो यह जान लो,
हटो हटो चलो चलो नहिं दान मिलेगो,
'राधेश्याम' अब और गली देखो गिरिधर ॥

ठुमरी नं० १२८

हां जन्मे कन्हाई गावो बधाई नन्द मिहर घर आज ।
मिलकर के चलो सब नारी, हाथों में ले ले थारी--
फ़र्ज़न्द की घड़ियां, खिलीं दिल कलियां--
चलो साजें साज समाज--हां जन्मे कन्हाई० ॥
यशुमति के सखी बड़भाग, फ़र्ज़न्द मिले ब्रजराज ।
चलो गायें मुबारकबाद, हां जन्मे कन्हाई० ॥

ठुमरी आड़ी नं० १२९

मोरी तोरी सैयां अब न बनैगी ।
हटो हटो ढीठ लङ्गर तुम गारी दूंगी गारी दूंगी-
अब मत अटको चलो २ अंचरा न छुओ २ मेरो २
सांवरे पिया काहे करे झकाझोरी, मोरी तोरी० ॥
सौतिन के संग रैन बितावत तुम्हरी का परतीत ।
चलो चलो हटो हटो 'राधेश्याम' कहे बार बार,
अब सरको यारी कर आरी मारी बरजोरी ॥ मोरी० ॥

होली (ठुमरी में) नम्बर १३०

दुख सुखकी बात घनी होली अब आई रङ्गभरी होली ।
मिल जाय बाल, कर देउ लाल, मल दो गुलाल,
हो सुर्ख़ श्राल, सब गाल लाल हो जाय ॥

गोपाल लाल ने, सब ग्वाल बाल से, ऐसे वचन कहे, सुन कर सभी चलीं होली गाने हैं ॥ चङ्ग बजाओ, भङ्ग चढ़ाओ, रङ्ग चलाओ, आहा हा । मस्ती में मस्त हो । सुस्ती न अब करो ॥ सुरीला गान, रङ्गीला कान, सभी सामान, सखा मस्तान, कहें हैं वाह वाह वाह । कहे 'राधेश्याम' बनी टोली॥

दादरा नं० १३१

श्याम खेलें होली यमुना तीर,
चले पिचकारी वहां छरररररर२ ।
मैं जलभरबेगई सुखमारोकुंकुमा अबीर,
अरी ! वो फैल गयो फरररररर २ ॥
रङ्ग पिचकारी भरकरमारी जैसे लगे तीर,
सभी तन कांप गयो थरररररर २ ।
'राधेश्याम' दुरिभागकेआईहै विकलशरीर,
चीर से नीर भरे झरररररर २ ॥

रसिया नम्बर १३२

छोटो सो कन्हैया होली खेलन कुञ्जन आयो आर पार ग्वाल बाल सँग लिये घूम रहे लाल हाथ पिचकारी- लिये आवत हैं अब हाल, गुलाल रँगछायो बीर॥ १ ॥

झोरी भरे बाराजोरी मसत अबीर।
तीखे तीखे कुंकुमों से व्याकुल है शरीर।
कबीर खूब गायो बीर ॥ २ ॥
राधेजू की बाखरि पहुंचे श्याम गुण धाम।
सखियां सारी यूं उठ बोलीं जय जय 'राधेश्याम'॥
आराम खूब पायो बीर ॥ ३ ॥

वसन्त नम्बर १३३
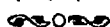
प्यारे कृष्ण कुंवर खेलत वसन्त,
संग ग्वाल बाल सब बुद्धिवन्त।
जांगिया कसे घर से निचन्त,
छर छरे छली छैला सुमन्त॥
नन्दलाल हैं टोली के महन्त,
लख हर्षत हैं सब जीव जन्त।
ब्रज बाल रुकी डर से डुकन्त,
ग्वालन ब्रज ढूंढो आदि अन्त॥
एक नार भगत देखी अनन्त,
लई पकड़ फेंक मारी पढ़न्त।
भगवन्त को युवती देख तन्त,
अञ्चल छुटाय कीनी भगन्त॥
सब सखन धाय पकड़ी तुरन्त,
रंग बोर छोड़ चाले अनन्त।
कहे 'राधेश्याम' लख ये खिलन्त,
गये भूल ब्रह्म को मनन सन्त॥

वसन्त नं० १३४
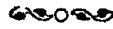
आयो बसंत सुन्दर बहार, फूली बनमें सरसों की डार।
जिततितहोवतआनंदउछाह, घरघरसखियनकीनेसिंगार॥
मुंह-चङ्ग चङ्गबजेजलतरंग,ठनकत मृदंग झनकतसितार।
अम्बीर फिंकत बरसत गुलाल,केशरकोरंगचलेधार बार॥
भरेझोरीआजलियेसकलसाजइतउतडोलतश्रीनंदकुमार
लिये संग सखनकी भीरहरी,बृषभानु ललीके पहुंचेद्वार॥
लखि'राधेश्याम'कोयुगलरूपसखियनतजमनधनदीनोंवार।

ठुमरी नं० १३५

बादरिया आई बरसन को जल अति बरसन लागो।
घननन घनन घनन गरजत हैं बंदभई सब डागरिया॥
'राधेश्याम' कहां हो मोहन दरस दिखावो सांवरिया।

गाना नं० १३६

आली लख घन घ न न न न न गरजत बरसत।
बरसे बारि, झर से झरे, चमके चम दमके दम दामिन दमकत, बोलत मोर, पपीहा, कोयल, 'राधे-श्याम' बिन नहिं कल एक पल, कृष्णचंद्र दर्शन देउ आकर, तरस तरस जिया लरजत॥

ठुमरी नं० १३७

मेघ घिरो मेघ घिरो। बूंदन झर थल पर झर झर झररर, गरजत घननन, बरसत सननन, बोलत छननन। पिया पिया पपिया कू कू कोइलिया, चम चम चमकत—रांड बिजुरिया, 'राधेश्याम' कहां सांवरिया घबराती ललचाती ब्रज की बाला॥ (तान)

ठुमरी बरसाती नं० १३१

झर लाई मन भाई आई कारी घटा।
हर ठाईं नभ छाईं, चहुं धाईं घिर आई,
चमकत दमकत तड़ित छटा।
करत निरत मोर मुदित चलत पवन सननननन—
कोयल कूकत बोलत फिरत गरजत घन घननननन--
पिया बिन जिया मम जावत फटा।
झींगुर झनक झनक झनकावे,
पी पी पपीहा बोल सुनावे।
अङ्ग अनंग रंग सरसावे,
'राधेश्याम' बिन कछु न सुहावे॥
कैसे जाऊं सूने डर लागत अटा॥

ठुमरी न० १४०

हिंडोला झूलें लाड़लीलाल उमङ्ग से ।
दोऊ हरषात सुहात अनूपम पैंग बढ़ात तरङ्ग से ।
चपला सम सब अबला नवला झोंका देत उतङ्ग से ।
'राधेश्याम' युगल छवि लख २ लाजत रतिहु अनङ्ग से ॥

सवैया न० १४१

देख घटा की छटा को अटा पर काम पटा से फटा उर तीका । मोर के शोर की ओर निहार के ज़ोर मरोर बढ़ा बहु जीका ॥ कानमें तान है ध्यान में आन है कान की, गान न लागत नीका । नाम भयो 'राधेश्याम' विधाता हू साथी न होय कोऊ बिगड़ी का ॥

ठुमरी नम्बर १४२

सखी री घन गरजे प्रवल घनघोर ।
निशि अँधियारी कारी बिजली चमक भारी पपिहा मचावत शोर । कोयल कूक हूक उपजावत मोहन बिन मोहे कुछ नहीं भावत ॥ दई मारे बोलत हैं मोर ॥ सखीरी घन गरजे० ॥ आई बद-रिया कारी कारी 'राधेश्याम' बिना दुख भारी ।

झींगुरी करे झन झननननननन, पवन चलत सन सननननननन, फुआर पड़े छन छननननननन। जिया डरपाय है मोर ॥ सखीरी घन गरजे० ॥

दादरा नम्बर १४३

बादर आये आये हैं गंभीर अरी वो बोले झींगुर झननननन २। चपला चमक चमक चहुं चमके बरसे प्रबल नीर, अरी वह पवन चले सननननन सननननन। पीपी पपिहा कू कू कोइल मोहिं जो सुनावे, श्याम बिना कैसे धरूं धीर, अरीवो फुवार पड़े छननननन २। 'राधेश्याम' कासे कहूं? श्याम बिना कौन हरे पीर, अरी वो बदरी गरजें घननननन घननननन ॥

बरसाती नम्बर १४४
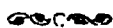
कारी बदरिया बरसन आई नचत मोर दई मारे ॥
पुरवाई आई रमकत है घुमरि घटा घिरि आई।
रिमझिम रिमझिम फुवार पड़तहै वह चले नद्दी नारे ॥
झींगुरझनकारतझनननननरागमल्हारतानतननननन।
तापर घन गर्जत घननननन पिया पिया पपिहा पुकारे॥
कोयल कूकहूक उपजावे श्याम बिना मोहेंकछु नहिंभावे।
रात दिना तड़पत ही जावे कहां हो नन्ददुलारे ॥

'राधेश्याम' चरण अनुगामी, दर्शन देउ मनमोहन स्वामी
बालक हूं मैं आपको अनुचर आप मेरे रखवारे ॥

बरसाती नं० १५५

आई आई रे बदरिया आई रे, झर लाई रे।
घननन धुन आई, सननन बरसाई, दामिनी दमके।
दम—दम—दम—पवन बहत सर सररररर ।
उमड़ घुमड़ जल थल पर बरषे, हर्षे दादुर मोर री।
प्राण पियारे मथुरा सिधारे 'राधेश्याम' कहे गाय।
सखीरी जिया धड़कत थर थररररर ॥

ठुमरी नं० १५६

आई बदरिया उमड़ घुमड़ जल बरसत भारी, कारी।
नीर बरसात, न है बरसाय, आई बरसात करूं मैं क्यारी॥
दुख है कारी, कीजे कारी निशि है कारी कारी-प्यारी ।
दिलबर श्याम मथुरा धाम सूनो गाम रोवे जाम ।
'राधेश्याम' विपत में बिलपत है दुखियारी ॥

दादरा नं० १५७

घन आयो है जलबरसानेको।सरसानोहै बन बरसाने को॥
हाय घनश्याम मेरे दिल को दुखाने आये ।
याद घनश्यामकी विरहिनको दिलाने आये॥

नीर बरसात हैं बरसात की है धूम तमाम ।
सर पे बरसात है बर साथ नहीं 'राधेश्याम' ॥
प्राणप्यारेसिधारे हैं मथुरा जल भेजोहै जीकेजलानेको।

ठुमरी न० १९८
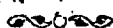
बादरिया बरसती बरसती बरसती जा ।
जल बरसाये जा, दिल हरषाये जा, आ, इधर आ,
जा उधर जा, छनछनाहट, सनसनाहट, झूम झूम=
घूम घूम, गरजती गरजती गरजती जा ॥
ये आई, वो आई, रिमझिम झर लाई,
स न न न स न न न चल पड़ी पुरवाई,
'राधेश्याम' धुनआईकड़ कड़, जियाहुआथरथर,
जल गिरा सर सर, हां, वो आई वो आई घटा ।

बरसाती नम्बर १९९

देखो री बादरवा छाय रह्यो है ।
जल थल नभ सरसानो, झूम झूम झूम झूम ।
धन वृन्दावन परमसुहावन तापर घन छाय रह्योहै ॥
उमड़ घुमड़ चहुं धाय आय, जल लाय लाय बरसाय-
जाय बिन 'राधेश्याम' कछु ना सुहाय डरपाय-
बदरवा कड़क कड़क चमकाय बिजुरिया तड़क २
घबराय जियरवा धड़क धड़क कल्पाय रह्यो है ॥

ठुमरी बरसाती नं० १५०

छायोरी आली झूम झूम बादरवा।
घोर घुमंड घिर घिर आयो री आली झूम०।
देखो घनश्याम ये घनश्याम घिरा आवे है।
इन्द्र का कोप है ब्रजधाम बहा जावे है॥
गोपियां रो रहीं हैं राधिका चिल्लावे है।
गाय की भांति यशोदा तेरी डकरावे है॥
सांवरे धाओ गिर उठाओ देखोर मंडलायो री-आली।

चौताला विलम्पत नं० १५१

नी-धा-पा-मा-गारे मा-गा-रे-सा।सा रे ग म मा गा रेसा
(शूल)-ओ दानी दानी तादानी दीम, ओ दानी
दानी तादानी दीम।
(तीन ताल)-धाकिट तक धुम किट तक धुम किट
तक धुम किट धुम किट तकधित्ता गिद
गिन क्राणधा गिद गिन क्राणधा
गिदगिन क्राणधा।।
(रूपक)-चल मन अवधपति की शरण।
उठ मुसाफ़िर रात बीती मोक्ष का कर यतन।
नाम 'राधेश्याम' जप जो चाहे भव से तरन॥

भजन न० १५२

जय बोलो भाई आज सनातन धर्म की ।
भारतधर्म महामण्डल में खुली पोटली मर्म की ।
महानुभावों के वचनों से धूल उड़ी है भर्म की ॥
इतने पर भी मूढ़ रहे तो बात निहायत शर्म की ।
'राधेश्याम' न तुम्हें दोष है लिखी न मिटसी कर्मकी ॥

विवाहोत्सव की मुबारिकबादी नम्बर १५३

यह शादी का जलसा मुबारक मुबारक ।
बने को ये सेहरा मुबारक मुबारक ॥
मुबारक हो आमद यहां सज्जनों को ।
हमे इनकी सेवा मुबारक मुबारक ॥
मुबारक हो बन्ने को प्यारी बनी ये ।
बनी को ये बन्ना मुबारक मुबारक ॥
फ़लक पे रहें सूरजो चांद जब तक ।
जिये इनका जोड़ा मुबारक मुबारक ॥
हमें 'राधेश्याम' आज कहना यही है ।
हमारा भी गाना मुबारक मुबारक ॥

नाटक की लय नम्बर १५४

(दिले नादाँ को हम समझाय०)

गणपति को प्रथम हम मनाए जांयगे ।
वह बिगड़ी हमारी बनाए जांयगे ॥

श्रीगणेश जी मङ्गल करिए ।
हम बिनती तुम्हीं को सुनाए जायंगे ॥
हो तुम्हीं सर्व प्रथम पूज्य गणों के नायक ।
मोद मङ्गल के भवन दुःख हरन वरदायक ॥
विघ्न बाधाके लिए ध्यान तुम्हारा शायक ।
शब्द और अर्थ अलङ्कार के हो परिचायक ॥
इस लिए है सदा कवि वृन्द तुम्हारा पायक ।
गुण पहिले तुम्हारे 'राधेश्याम' गाये जायेंगे ॥
॥ गणपति को प्रथम० ॥

नाटक की लय नम्बर १५५

तर्ज़ (इधर उधर चलत फिरत)

हां गिरजासुअन तकत चरण शरण हौं भिखारीरे ।
विघन हरण जनन भरन चलन फिरन प्यारी रे ॥
शोभान्यारी रे ।
दीन हीन पीन होत मिहर सों तिहारी रे ॥
हे दुख हारी रे ।
है गुलाम 'राधेश्याम' आस बड़ी भारी रे ॥
मैं बलिहारी रे ।

नाटक की लय नम्बर १५६

तर्ज़—(मैं बाज़ आई दिल के लगाने से)

दुख जावेगा शङ्कर के ध्याने से,
मनवाञ्छित हों शिवके मनाने से ॥

अर्श से फ़र्श तलक जिनकी दुहाई छाई ।
नाम शङ्करका लिया जिसने जो चाही पाई ॥
वेद और शास्त्र ने गुण कीर्ति हमेशा गाई ।
मिल के जय आज महादेव की बोलो भाई ॥
दीनदयालू हैं शिवशङ्कर नहिं होगा उज़र दुख हटाने से।
भभूती रमाये जटा को बढ़ाये,
समाधी लगाये गले मुण्डमाला ।
धतूरा चबाये ज़हर ख़ूब खाये,
बघम्बर सजाये लसे चन्द्रभाला ॥
लिये हाथ खप्पर चले बैल चढ़कर,
पियेविषकाप्यालागलेनागकाला।
हमारातुम्हारा खलककामुलकका,
निगहवान है बस वही बैलवाला ॥
भाषत'राधेश्याम' अरेमनसबतजकरतूलगजाठिकानेसे ।

नाटक की लय नम्बर १५७
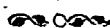
तर्ज़--(सुन ५ मोरी बतियां)
बम्, बम्, बम्, बम्, बम्, शिवशङ्कर ।
राखो आजमोरी लाज काशीराज कीजे काज,
शम्भू विश्वेश्वर दयाल, दीन दानी रक्षपाल,
दीनो को यह कृपाल, पलमें करें निहाल,
कहो 'राधेश्याम' सब जय हर हर ॥

नाटक की लय न० १५८

तर्ज़--(माधोसिंह महाराज)

कौशल के सरताज, करदीजे कृपा महाराज ।
रख लीजे मोरी लाजा, करो 'राधेश्याम'के काज़ा,
कि विनवौं मैं तोहिं आज ॥

नाटक की लय नम्बर १५९

तर्ज़--(हाँ इधर उधर चलत फिरत)

हां अवधनन्दन जगत-वन्दन सन्तन-हितकारी रे ।
श्याम गौर राम लषण दीन दुःखहारीरे। हेअसुरारीरे॥
रक्षपाल प्रणतपाल वीर तीर धारी रे । हे दनुजारीरे।
नाथ माथ हाथ राखो,बात सुनोहमारी रे। लो उबारीरे।
'राधेश्याम' है प्रणाम राम करुणागारीरे।मैं बलिहारीरे।

नाटक की लय नम्बर १६०

तर्ज़--(तुम कौन तुम कौन वशर हो)

जगदीश, जगदीश जगत्पति जगन्नाथ दशरथ-
सुत श्रीरघुवीर। रघुराज,रघुराज दयानिधि भक्त-
भरन हम तेरी शरण रणधीर ॥ हे दीनन के दुख-
हारी, जगतारन श्री असुरारी,सुनलीजे टेर हमारी॥
तुम बिन नहीं कोई मेरा सुन लीजे दीनानाथ ।
नैया पड़ी मँझधार में गह लीजे मेरा हाथ ॥
कहे'राधेश्याम'उरधाम करो अभिराम हरो तन-पीर।

नाटक की लय नम्बर १६१
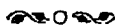
जय हो रामचन्द्र सुखधाम सब के काम बनानेवाले ॥
आज्ञा पिताकी मानी आप, मिटाया भक्तोंका सन्ताप।
बने बनवासी श्री रघुराज, भूमि का भार हटानेवाले॥
अहिल्या तारी मारे नीच, बनाया सुखी सखा सुग्रीव।
मार डाला रणमें दश शीश, जानते सभी ज़मानेवाले ॥
विभीषण बांह गहेकी लाज, तुम्हींने राखी है रघुराज।
दिया लङ्का का उसको राज, रङ्क को राउ बनानेवाले ॥
शरण में आया 'राधेश्याम' सुनी है निर्बल के बलराम।
हमारे करिये पूरण काम, तुम्हारे यश हम गानेवाले ॥

नाटक की लय नम्बर १६२

तर्ज़—(तोरी छल बलहै न्यारी)

देखोदिलमेंविचार, भजो कौशल कुमार,
वृथा खोवो न सारी उमरिया, राम।
सब झूठा संसार, छोड़ो छोड़ो अहङ्कार,
कहे 'राधेश्याम' हितकरिया, राम।
मान मान नादान, छोड़ छोड़ अभिमान,
लेवेंगे तेरी खबरिया राम।
चलतेफिरतेभी राम, न्हातेधोतेभीराम,
खाते पीतेभी राम, कहो राम राम राम।
राम राम राम, राम राम राम ॥

नाटक की लय नम्बर १६३

श्रीराम भजन कर है मन मूरख क्यों फिरता हैरान ।

जगदीश को नित भज,

मद और मोह तज,

अरे मूढ़ अज्ञान ॥

यह स्वारथ का संसारा,

सब झूंठा है व्योहारा,

हैकौन किसीका प्यारा ॥

नहीं काम आयेंगे तेरे उस वक्त भाई बाप ।

जाएगा सिर्फ़ साथ में बस पुण्य और पाप ॥

कहे 'राधेश्याम' उस प्रभु पर तन मन धनसे हो कुरबान॥

नाटक की लय नम्बर १६४

तर्ज़—(दहीवाली का तौर दिखाना)

करो कृपा गुरू महाराजा ॥

मैं तो दीन दीन दीन हूं । बालक हूं नादान तुम्हारा ।

करो दुख दूर, मेरा हुज़ूर । राधेश्याम की रख लेउ लाजा ॥

नाटक की लय नम्बर १६५
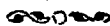
तर्ज़—(हां इधर उधर चलत फिरत)

हां, गुरू दयाल सुनिये हाल लेउ सुधि हमारी रे ।

हरो पीर महावीर सन्तन-हितकारी रे-लीला न्यारी रे ।

पवन-पूत राम-दूत शरण हूं तुम्हारी रे-हे भय हारीरे॥
जन्म मरण काल कर्म्म इनसे लो उबारीरे-मैं बलिहारीरे।
राधेश्याम, दीनदास द्वार का भिखारी रे-दुःख भारीरे॥

नाटक की लय नम्बर १६६

स्वामी अब तो निभाना होगा।
पूत वायु के, दूत राम के, काम मेरा बनाना होगा।
अपनी ओर निहार कृपानिधि दुःख मेरा हटाना होगा।
जान रहे को कहा जताऊँ पार बेड़ा लगाना होगा।
राधेश्याम, दास विनवतहै गाना हमको सिखाना होगा॥

नाटक की लय नम्बर १६७
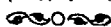
श्री गंगे मैया श्री गंगे मैया,
बेग उबारो डूबती नैया।
धन्य है तेरी धार,
करो उद्धार तुम्हीं खेवैया॥
तारन नाम तुम्हारो मैया, जल्दी करो सहैया।
राधेश्याम, शरण में आयो, तुम ही धीर धरैया॥

नाटक की लय नम्बर १६८
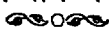
श्री राधेरानी श्री राधेरानी। हम बालक हैं तेरे मैया,
मांगत हैं आशीष देउ यह भीख बनें हम ज्ञानी॥

माता अपने बालक पर तुम करो यह मिहरबानी ।
राधेश्याम, बुद्धि हो निर्मल और मधुर हो बानी ॥

नाटक की लय नम्बर १६९
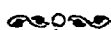
श्री राधे राधे बरसाने वारी । राधे राधे ।
श्री राधा, श्यामा, रमा, वृन्दाबनेश्वरी ।
सुखदा, वरदा, सौख्यदा, माता धनेश्वरी-राधे० ।
श्री राधा कीरति-सुता, की-रति मद मर्दन ।
कीरति तोरी प्रकट है मां ! चौदहोभुवन । राधे० ॥
श्री राधा वृषभानुजा जब आराधा तोय ।
साधा तूने काम सब बाधा दीनी खोय-राधे० ॥
श्रीराधा के नाम से पूर्ण हों सारे काम ।
एक बार मिल कर सभी बोलो 'राधाश्याम' । राधे०॥

नाटक की लय नम्बर १७०
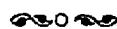
कीरति राजदुलारी, हमारी लीजे ख़बरिया ।
दुःख दास पर आन पड़ा है, श्री जी तेरा ही आसरा है,
"राधेश्याम" ग़ुलाम खड़ा है, हे बरसाने वारी,
हे स्वामिनी हमारी, बता दो हरि की डगरिया ॥

नाटक की लय नम्बर १७१

तर्ज़-(अमवा की डार तले आली री)

विनती ये दास करे, राधे री,
श्याम को बुलायदे, मिलायदे ।
तेरा वसीला है, और न हीला है,
दृष्टि फिराय नैया किनारे लगायदे ॥
आसरा आपका है पार लगाओ राधे ।
दुख के संसार में मत मुझको भुलाओ राधे ॥
मेरे सुख की मुझे अब राह बताओ राधे ।
ग़लतियां माफ़ करो हरि से मिलाओ राधे ॥
स्वामिनि मेरी, आश है तेरी, कीजे न देरी,
'राधेश्याम' श्याम को दिखाय दे ॥

गाना ऊपर की लय में नम्बर १७२
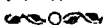
यमुना के तीरे तीरे, आली री श्याम को बुलायदे,
गायदे। सावन की धुन रमक झमक, तीजें मनाय,
प्यारा हिंडोला गड़ायदे ॥
इधर बरसात में उठता हुआ आया सावन ।
उधर वृषभानु दुलारी ने मनाया सावन ॥
वहां घन श्याम ने घनघोर दिखाया सावन ।
यहां घनश्याम ने वंशी में बजाया सावन ॥
गावें सहेली, नारी नवेली, मैं हूं अकेली,
'राधेश्याम' मोहें भी झुलाय दे ॥

नाटक की लय नम्बर १७३

तर्ज़—(थन्दे पत्थर क़िबले पत्तर)

रहें मगन निशि दिन वे जन जो मोहनमें मन लाते हैं ।
करें कीर्तन, मनन, श्रवण फल जीवन मुक्ति वे पाते हैं॥
सुन सुन उनका वर्णन, ब्रह्मादिक भी जायें लजाय ।
काल व्यालका डर नहिं उसको जो नर-हरि गुण गाय॥
कहिन सुनन और रहिन एक रस सो भव से बिलगाय ।
आठों याम हर ठाम रैन दिन श्यामहिं श्याम दिखाय॥
रहें निडर वे नर जो गिरिधरके दर सरको झुकाते हैं।
संसारी बन्दे गन्दे फन्दे में ख़ुद को फँसाते हैं ॥
प्रेमसे रीझें हैं हरि चाहे जप तप करो हज़ार ।
प्रेम के कारण त्यागके मेवा खायो साग मुरार ॥
प्रेम से झूंठे बेर हरी ने खाये बारम्बार ।
बिना प्रेम रीझें नहीं हरगिज़ नटवर नन्दकुमार ॥
प्रेमके कारण अलख निरञ्जन माखन चोर कहाते हैं।
प्रेमके कारण 'राधेश्याम' जी सगुणस्वरूप बनाते हैं ॥

नाटक की लय नम्बर १७४

तर्ज़—(सरकार दरबार का दरबार सरकार का)

मुख्त्यार हर कार का सरदार संसार का ॥
पापी तारण दुःख निवारण 'राधेश्याम' राधा मोहन,
नहीं डर उसको कालव्याल का, जो है सेवक नंदलालका,
दुष्ट निकंदन, देवकीनन्दन, जनमन रञ्जन, भव भय भञ्जन।

नाटक की लय नम्बर १७५

भज मोहन मुरारि घनश्याम, नहीं कोई तेरा है ॥
पिता मात और भ्रात सभी हैं धन यौवन के यार ।
अन्त समय कोई काम न आवे जावे हाथ पसार ॥
नहीं कोई तेरा तू न किसी का सब झूंठा संसार ।
राम भजन कर यही यतन कर होजा भव से पार ॥
मोहन प्यारे वंशीवारे नन्द-दुलारे श्याम ।
नैनन तारे प्राणन प्यारे वही करेंगे काम ॥
जो उनको सुमिरे उसको वह सुमिरें आठों याम ।
बांकेदास की आज्ञा लेकर गावे 'राधेश्याम' ॥

नाटक की लय नम्बर १७६

तर्ज़-[गुलन्दाम गुलन्दाम]

भजले श्याम, भजले श्याम ।
दीनन दुख हारी सन्तन हितकारी,
श्री बनवारी जी बल बुद्धि धाम ॥
नन्द दुलारे, यशोदा के प्यारे, नैन के तारे, हे अभिराम ।
दिल और जां से कुरबान, मैं हैरान, श्रीघनश्याम ।
भज 'राधेश्याम' हरि नाम, पूरण हों तेरे काम ।
श्याम बिहारी, मैं हूं बलिहारी, जाऊँ वारी आठों याम ॥

नाटक की लय नम्बर १७७

भजो हरी को भजो ।

दुनियाके धन्धों से, मायाके फन्दों से यारो भजो, बचो ।
तन से, नेम से, मन से, प्रेम से, राम ही को सुमिरो ॥
वह देंगे दुःख टाल, भव-जाल से निकाल,
करदेंयगे निहाल, दीनों के हैं दयाल,
वे रघुपति, यदुपति, जगपति, जनपति, भूपति, हैं सबके
वे धनुधर, गिरिधर, बरतर, रहिवर, परवर हैं सबके,
'राधेश्याम' जपो नाम, उसी श्याम का सुदाम ;
तजो बदी को तजो ।

नाटक की लय नम्बर १७८
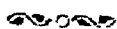
तर्ज़—[सब पर आफ़त लाती है क़िस्मत]

अरे मन मूरख चेत चेत भज श्रीगोपाल का नाम ।
वे गिरिधारी जन दुखहारी करदें पूरण काम, अभिराम।
पतित उबारन, कंस पछारन, बल बुधि गुणके धाम ॥
नन्दलाल जी गिरिधर, हैं सबके वे अफ़सर ।
कर दें मेहर तुझ पर, सब जग के वे परवर ॥
तू छोड़दे अभिमान, और श्यामका कर ध्यान ।
वेहैंदयानिधान, सच्ची येबात जान। 'राधेश्याम'॥

नाटक की लय नम्बर १७९

तर्ज़-[मेरे ग़मका तराना सुनिये फ़साना]

ज़रा तान सुनाना, बंशीबजाना, ओ सलोने श्याम ।
ज़रा नाच दिखाना, भाव बताना,
रङ्ग जमाना, ओ सलोने श्याम ।
मन हरनी मन भावनी, मुरली की झनकार ।
मृदुल, मधुर, रसकी भरी, चित्त चुरावन हार ॥
ज़रा कर में उठाना, लब पे लेजाना,
हाथ बढ़ाना, ओ सलोने श्याम ।
ग़रज़ी की अरज़ी सुनो मरज़ी कीजे नाथ ।
'राधेश्याम' ग़ुलाम के माथे रक्खो हाथ ॥
ज़रा सुनलीजे काना, गा दीजे गाना,
हमको सिखाना, ओ सलोने श्याम ।

नाटक की लय नम्बर १८०

तर्ज़-[लो फूल जानी लेलो]

घनश्याम दर्शन देदो, देदो देदो देदो । घनश्याम० ।
झांकी तेरी रङ्गीली, बोली बड़ी रसीली,
कुछ तो भक्ति-धन देदो ।
है 'राधेश्याम, की अर्ज़ी, गर्ज़ी पर कीजे मरज़ी,
या लीना तन मन देदो ।

नाटक की लय नम्बर १८१
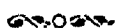
तर्ज़ [कारो कारी क्या बदरिया छाई रे]

प्यारी प्यारी वो सुरतिया भाई रे । हां समाई रे ।
चैन बनवारी बिना दिन रैन नाहीं, जियरा धड़के—
थम थम थम, आंसू बहत झर झररररर ।
घूमर घूमर अँखियां तरसें, मारी फिरूं चहुं ओर रे॥
कृष्ण कन्हैया, तपन बुझैया, राधेश्याम, कठोर रे ।
बिहारी जी, कँपत है जिया थर थररररर ॥

नाटक की लय नम्बर १८२

तर्ज़—(कैसी प्यारी २ ये गुड़ियाँ हमारी)

जाऊं वारी वारी सँवरिया हर बारी, कन्हैया बनवारी ।
बिनती सुनाऊँ तुम्हें, हरदम मनाऊँ तुम्हें ।
रस भरी तान हमें, दो सुना कान्ह हमें ॥
दिल में बिठाऊँ तुम्हें, नैनों बसाऊँ तुम्हें ।
भक्ती वरदान हमें, दीजे भगवान हमें ॥
मेरे दिलमें है ऐसी उमंग, कब छोड़ोगे कुबरीका सङ्ग।
नहीं सुनते क्या पीलीहै भङ्ग,जारे दिनरात हमको अनङ्ग
तजो कुबरीका सङ्ग,लखो यहांकी तरङ्ग,अब कीजे न तङ्ग,
आओ दिखलाओ रङ्ग, जाय 'राधेश्याम' बलिहारी ॥

नाटक की लय नम्बर १८३

तर्ज़—(प्यार मोहनियां निभाना होगा)

श्याम सुरतियां दिखाना होगा ।
अधरों पै मुरली धारण कर, मीठी तानें सुनाना होगा।
आज रासमण्डलका दिन है, गोपियों को बुलाना होगा।
मुद्दत के उम्मेदवार हैं, आज स्वामी निभाना होगा।
सब सखियों को साथमें लेकर, थेई थेई नचाना होगा॥
बात यह 'राधेश्याम' मानिये सर न नीचे झुकाना होगा॥

नाटक की लय नम्बर १८४

तर्ज़—(जानी लासानी नूरानी सुरतियां)

बानी तुम्हारी पियारी संवरिया ।
तीखी नुकीली कटीली नज़रिया ॥
'राधेश्याम' दोऊ अलकें निराली घुंघराली-
नागिन है पाली, बांकी बांकी, झांकी झांकी ॥

नाटक की लय नम्बर १८५

तर्ज़—(दहीवाली का तौर दिखाना)

कोई गिरिधर से हमको मिलाना ।
प्यारा, मेरा, कहां गया, रस भरे बैना, बिन नहीं चैना,
दे झटका, कित सटका, मुझे 'राधेश्याम' बतलाना ॥

नाटक की लय नम्बर १८६

तर्ज़—(मोहे विरहा सतावे जो जरावे)

सारी बिगड़ी बनादे दुख हटादे अय कन्हैया !
उबारो मोरी नैया, खिवैया भैया श्याम ॥
दुःख भारी, है बिहारी, लो उबारी, करुणागारी-आह !
तारो जी तारो उबारो निहारो है यह दिलमें चाह ॥
आह ! आह ! आह ! आह !
दास फ़र्ज़न्द है नादान तेरा 'राधेश्याम' ।
सोच के बात यह जल्दी से करो मेरा काम ॥

नाटक की लय नम्बर १८७

तर्ज़-(बाकी ख़बरिया न पाई मोरी)

बांकी नज़रिया दिखादे मोरे सैंयां, मैं वारी२जाऊँ श्याम
पटुका डाला, गल बन माला, मेहरबान ।
घूंघरवाला, है ज़हराला, मैं क़ुर्बान ॥
सुन्दर सुघर रुचिर मधुर बैन मृदुल रसकी खान ।
बलिहार हूं बलिहार हूं बलिहार हूं आठो याम॥

नाटक की लय नम्बर १८८

तर्ज़—(सुरतियां दिखाय जा)

नज़रिया मिलायजा प्यारे कन्हैया, बंसुरिया बजायजा ।
नैन बान की चोट ने, घायल मोहे करदीन ।
बेकल हूं दर्शन बिना, जैसे जल बिन मीन ॥

भूली भूली, डगरिया, बज़रिया,
बखरिया, नज़रिया मिलाय जा।
आशिक़े ज़ार तलबगार तेरी सूरत के।
वार तन मन दिया बलिहार तेरो मूरत के॥
जल्द मिल जाओ न पाबन्द हो मुहूरत के।
श्याम यह काम हमारे बड़े ज़ुरूरत के॥
दिखलादो संवरिया, सुरतिया,
कटरिया, नज़रिया दिखाय जा।

नाटक की लय नम्बर १८९

तर्ज़—(सब पर आफ़त लाती है)

हे दुखहारी कुञ्जबिहारी तुम्हें हमारी नमोनमः।
हेनिर्विकारी करुणाधारी दयावतारी नमोनमः॥
हे बनवारी दुष्टविदारी कृष्णमुरारी नमोनमः।
हे भयहारी गिरिवरधारी है हर बारी नमोनमः॥
हे देवकी कुमार, बसुदेव के दुलार, माया तेरी अपार-
मैं शरणहूंतुम्हार,करदीजे बेड़ा पार,कहताहूं बारबार-
अब तो सुनो पुकार, बिनती यही हमार,
'राधेश्याम' वारी नमोनमः

नाटक की लय नम्बर १९०

तर्ज़—(परवर अफ़सर रहिबर बरतर)

कृष्णकन्हैया दुःखहरैया बिगड़ी बनैया है तू ही।
अफ़सर सबका परबर जगका मैया भैया है तू ही॥

घर में दर में जल में थल में संगोशजर में है तू ही ।
अर्शोफ़लक पर दमक रहा तू बहिरो बरमें है तू ही ॥
शमशो क़मर तू बादे सबा तू अख़तर अनवर है तू ही।
तन में मन में और गुलशन में, जगधर गौहर है तू ही॥
रोज़ी देने वाला आला नन्द का लाला है तू ही ।
वंशी वाला, जग उजियाला सब से बाला है तू ही ॥
मझ्जिद में तू, महिफ़िल में तू, काज सरैया है तू ही ।
बेणु बजैया, धेनु चरैया, रास रचैया है तू ही ॥
मदन लजैया, मुनिन भुलैया, दही लुटैया है तू ही ।
दुष्ट निकन्दन, देवकी नन्दन, लगन लगैया है तू ही॥
ताता, दाता, माता, भ्राता, साथी साजन है तू ही ।
ताप निवारन कार्य संवारन 'राधेश्याम' धन है तू ही ॥

नाटक की लय नम्बर १९१

तर्ज़--(चमकत तन चटक मटक)

बिहरत बन कुञ्जन सघन नन्दसुवन आवे, डगर २ भावे,
बाटन घाटन करत रार, चलत तकत ब्रज की नार,
मदनमोहन वचन सरस कहके मोहिं रिझावे, डगर २ भावे

रंगीला पीला डुपट्टा गले डाला लाला ।
छबीला कान में बाला लसे माला आला ॥
सजीला खौर 'राधेश्याम' निराला ढाला ।
कटीला ज़ुल्फ़ का वो नाग है पाला काला ॥

हां-सुघर अधर बांसुरी धर मधुर २ गावे, डगर २ भावे॥

नाटक की लय नम्बर १८२
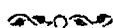
तर्ज़ - (मज़ा देते हैं क्या यार)

अब तो शक्ल दिखा दिलदार मोहन यार बांसुरी वाले।
दिलमें भरा यही अरमान,तन मन धन तुम पर क़ुरबान।
देखो इधरको करके ध्यान,हम तो आशिक़ हैं मतवाले॥
तेरे अबरू दो ख़मदार, चंचल चपल चश्म रसदार।
काले घूंघरवारे बार, गोया मार मार कर पाले॥
जल्दी दिखलाओ दीदार, कब से तड़प रहा बीमार।
नाहक करते हो तकरार, देखो मेरे आहो नाले॥
'राधेश्याम' श्याम गुणधाम,तुम बिन ज़रा नहीं आराम।
आकर कीजे पूरण काम मत कर अब दिलजानी टाले॥

नाटक की लय नम्बर १९३

तर्ज़ — [लगी कारी कलेजे कटारी]

मेरे स्वामी तुम्हीं बनवारी हो-
गिरिवरधारी श्रीकुञ्जबिहारी जी।
मैं जाऊं तुम पर वारी, तन मन धन से बलिहारी॥
हो प्राणन प्यारे, नैनन तारे, नन्द दुलारे।
यशोदा के बारे, हमारी अरज़ सुन बंशीवारे॥
कीजे कृपा हे नन्द जी के लाल,
दीजे दर्शन हे प्यारे गोपाल।

तेरो 'राधेश्याम' दास, परिपूरण कीजे आस ॥
अफ़सर सरवर दावर रहिवर अखिलेश्वर परमेश्वर तू ।
श्री गोपाल, नन्द के लाल, दीनदयाल, करो निहाल॥

नाटक की लय नम्बर ११४
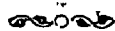
बंशी बजी, बंशी बजी, आहा ।

पिया तज के, त्रिया सज के, धज से मिल के बन को भजी-बाजी बाजी, वाह जी वाह जी, सब कहें आहा आहा ॥ आस लगी रास की, पियास है विलास की, सजीं सजीं भजीं भजीं, मिलीं मिलीं चलीं चलीं, काम धाम छोड़ 'राधेश्याम'-श्याम ढिंग गईं, आहा आहा । वंशीबजी० ॥

नाटक की लय नम्बर ११५

तर्ज़—[इधर उधर चलत फिरत]

हां-नन्द नंदन जनन भरन शरन हूं तिहारी रे ।
माई बाप मेरे आप ताप दो निवारी रे-गिरिवरधारी रे ॥
कासे कहूं कौन सुने दुःख पड़ो भारी रे-जन-दुखहारी रे ।
'राधेश्याम' श्रेष्ठ बुद्धि कीजिये हमारी रे-करुणागारी रे॥

नाटक की लय नम्बर ११६

तर्ज़—[लो फूल जानी लेलो]

है तेरा सहारा प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे ॥
तुम दीनन के पितु माता, मन वाञ्छित फलके दाता।
आसरा तुम्हारा प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे ॥ १ ॥
स्वारथ मय सब संसारा, मतलब का भाई चारा।
है कौन हमारा प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे ॥ २ ॥
श्रीमान् हैं अन्तर्यामी, मैं पद रज का अनुगामी।
किसलिये बिसारा प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे ॥ ३ ॥
कहे 'राधेश्याम' हर बारी, तुम पर मैंने बनवारी
तन मन धन वारा प्यारे, प्यारे प्यारे प्यारे ॥ ४ ॥

नाटक की लय नम्बर ११७

तर्ज़—[सुनले मोहनिया नजरिया]

प्यारे सांवरिया बंसुरिया सुनाउ ना रे।
हम बलिहारी, जायें निसारी, तन मन धन सब तुम पर वारी, दिल तड़पा कर चाल बता कर जाउ ना रे ॥ बे आराम, राधेश्याम, टेरे नाम, सुबहो शाम, कीजे काम, गुण के धाम, पातुमाम, गुलशन गुल सब गुल करते हैं गाउ ना रे ॥

नाटक की लय न० १९८

तर्ज़--[तेरा साक़ी भलाई में सानी कहां]

दिखला दो मुझे अपना दीदार, नन्द नन्दन दिलदार, यार। बेकल तन मन दर्शन बिन मन-मोहन सोहन हे प्यारे ॥ छिन२ कठिन मिलन बिन जीवन निशदिन अँखियन के तारे। झांकी दीजे काम, आशिष लीजे 'राधेश्याम' हैं सरशार करें पुकार ॥

नाटक की लय नम्बर १९९

तर्ज़--[प्यारा २ बना]

न्यारा न्यारा बना सखी मोहना।

माधुरी बानी, छल की सानी, हमने जानी, राधिका। कारी २ हैं नागिन अलकें सखियन घायल करीं ॥ 'राधेश्याम' सखियां घायल पड़ीं। बंशीवाला नन्द का लाला सब से बाला है। ऐरी सुन राधिका। न्यारा न्यारा बना ॥

नाटक की लय नम्बर २००

तर्ज़--[सब जायें मनायें राग गायें करें]

बंशीवारे प्यारे नैन तारे दरश दिखलाय जा रे। हे मन--मोहन नन्द के नन्दन दर्शन का दो दान। बेकल है मन, चैन नहीं छिन विनती सुनो दे कान ॥

हे नन्द के कुमार सुन लीजिये पुकार ।
कीजे कृपा मुरार, कर दीजे बेड़ा पार ॥

हे सरकार, गिरिवरधारी, जन दुख हारी, कुञ्जबिहारी, गुण के धाम । अन्तर्यामी, त्रिभुवन स्वामी, हे अनुगामी, राधेश्याम' ॥ कीजिये काम, पाइये नाम, दीन गलाम, करे प्रणाम ।

नाटक की लय नम्बर २०१

मुझे भाता है नन्द का लाला, वह बंशीवाला, सखीरी मुझे भाता है । घुंघराली हैं अलकें, मनोहर कपोलों पै झलकें, सखीरी मुझे भाता है ॥ अलबेली शिर पाग मनोहर, भाल विसाल तिलक अति सुन्दर। शुचि फूलों की माला है गल में पड़ी, मोतिन की लड़ी, मुझे भाता है ॥ दीजे दर्शन हे मोहन मुरार, मैने तन मन दिया तुम पे वार, ठाढ़े यमुना-पे कान, लीनी भृकुटी को तान, मारे नैनों के बान, गोपी गोप हैं हैरान-ऐसे छैला हैं बांकेबिहारी, वो गिरि-वरधारी, सखी री मुझे भाता है ।

नाटक की लय नम्बर २०२

नन्द के लाला गिरिवरधारी वंशीके बजानेवाले ।
टेर सुनो प्रभु आज हमारी, छैल बिहारी मुरारी ।
दरका भिखारी हूं, प्रेम पुजारी हूं, तन मन धन से हूं वारी॥

सुनो टेर निकुञ्जविहारी, माखन के लुटानेवाले ।
गावो बजावो रिझावो लुभावो, आवो लगावो तान ।
धावो सुनावो दिखावो चलावो, नैनन के दोऊ बान॥
'राधेश्याम' दुःख है भारी, बिगड़ी के बनानेवाले ।

नाटक की लय नम्बर २०३

तर्ज़–[अय ख़ालिक़ अय मालिक हाक़िम]

हे मोहन, हे सोहन, नन्दके कुमार, दिखलादो अपना दीदार । सरकार, सरदार, तुझसे मेरी अर्ज़ है अय सांवरे दिलदार ॥ हरबारी मैं वारी तुमपे श्रीबनवारी जाऊँ बलिहार, सुनले अरज़–मेरी तारन हार । जय जगधर, जय गिरधर, बंशीधर, मुरलीधर, बिनती करूँ बार बार । जगके कर्त्तार, सबके भरतार, तेरा न पार, गणिका सी नार, दो तूने तार, । अफसर तू, ईश्वर तू, दिलवर तू, दावर तू, रहवर तू, परवर तू, 'राधेश्याम' सुनले पुकार ॥

नाटक की लय नम्बर २०४

तर्ज़–[आओ चमन में उड़ाय बहारियां]

बांकी है झांकी तुम्हारी संवरिया ॥

क्या ही बहार है सुन्दर शृङ्गार है शोभा अपार है, अद्भुत निखार है । मेरे तुम्हीं सरकार हो, संसार के सरदार हो, जीवों के पालनहार हो ॥ 'राधेश्याम' हो कन्हैया, दिखाओ सुरतिया ॥

नाटक की लय नम्बर २०५

[तर्ज़—नैनोंने तोरे कटारी मारी कारी]

सांवरिया प्यारे मुरारी ख़बर लो हमारी ।

दिलदार मेरे, सरदार मेरे, सरकार मेरे, घनश्याम श्याम, श्याम । दिल मेरा है तुम बिन उदास, घड़ीर पल छिन दर्शन की आस—है रास-प्यास, चाकर के पास, कर काम, छविधाम-अभिराम, घनश्याम, अब बारी हमारी है बनवारी ।

सीखा है किस से श्याम, शोखी से लेना काम,
दिल को बनाओ धाम, आके करो विश्राम ॥
'राधेश्याम' दीन दुखारी, दर का भिखारी,
जावे वारी, सुबहो शाम ।

दान ज्ञानका, योगध्यानका, कीर्तिगानका दीजे श्याम।
बलिहारी, तुम्हारी करुणागारी । सांवरिया प्यारे ॥

नाटक की लय नम्बर २०६

तर्ज़ [दिल नादां को हम समझाये जायेंगे]

सखी मोहन मुरलिया बजाये जायेंगे ॥
करमें उठाके, लबसे लगाके वे तानें बजाके लुभाये जायेंगे।
बाज़ी कहें बाज़ी से तुम और हम भी चलेंगे ।
बाजी है बंशी श्याम की चल करके सुनेंगे ॥

बाजी ने कहा वाह जी कबतक वे छुपेंगे ।
बाजी ने बदी बाज़ी यहां श्याम मिलेंगे ॥
तब 'राधेश्याम' ने कहा सब काम बनेंगे ॥
हम सर्वस्व उन पर लुटाये जायेंगे ॥

नाटक की लय नम्बर २०७

तर्ज़-[तुम्हें दूंगा मैं थाकी ख़बरिया]

अब लीजो हमारी ख़बरिया श्याम । ज़रा बिनती को सुनलो सँवरिया श्याम । मेरे मोहन हो प्यारे २ सोहन दिखादे यार दर्शन है अभिराम घनश्यामजी। श्रीनन्दलाल रंगीले-तेरे हैं बैन छबीले । नहीं अब देर लगाओ । जल्दी दीदार-दिखाओ, नन्दसुत प्राण प्यारे जी । 'राधश्याम' नैन तारे जी ॥ हे ईश्वर अफ़सर परवर रहिवर सरवर बरतर दावर गिरिधर ॥ अब लीजे हमारी० ॥

नाटक की लय नम्बर २०८

तर्ज़-(दिलदार यार छैला से)

छवि धाम श्याम प्यारे से बिनती सुनावेंगे ।
श्याम नन्दलाला, बजावे बंशी आला, सूरत मेरे मोहन की मनको चुराय रे । प्यारा मेरा दिलबर, सहारा मेरा गिरिधर ॥
ज़ुल्फ़ गोया ज़हिरीली नागिन बल खायरे ॥

धर के अधरों पे मधुर वेणु बजाता घनश्याम ।
नाचता आप भी सखियों को नचाता घनश्याम ॥
'राधेश्याम' हम वाही से नैना लगायेंगे ॥

नाटक की लय नम्बर २०१

तर्ज़—(बन्दए परवर क़िबले बरतर)

प्यारे मोहन नन्द के नन्दन बंशी मधुर बजाते हैं ।
नवल रसीली मधुर रंगीली वेणु में तान लगाते हैं ॥
छुम छुम छुम छुम ठुम ठुम ठुम ठुम देवें पग से ताल ।
तत्तत थुन्थुन्थेईता थेईता नाचत हैं सब बाल ॥
शीतल मन्द बयारि बहै छिटकी चंद्रिका रसाल ।
सचर अचर भये अचर सचर भये रास कियो गोपाल॥
किन्नर सुर गन्धर्व मुनीश्वर सब चर अचर भुलाते हैं।
सघनविपिन बिचकुसुम मुरलिधुन फूले अँनन समाते हैं॥
गोपिन हाव विलास निरखि गति सुरपति गयो भुलाय ।
वीणा किङ्किणि ध्वनि श्रवणन सुन सारद रही लजाय॥
कालिन्दी जल अचल शिथिल भयो पक्षी गये थिराय।
उडगण स्वामी चाल छांड इक टक निरखत हर्षाय ॥
मन्मथरि की छुटी समाधी नारी वेष बनाते हैं ।
गोपी हो गोपेश्वर बाबा गोपिनि के ढिंग आते हैं ॥
शम्भु वेष लख अन्तर्यामी मन ही मन मुसकांय ।
तियन-झुंड-उडुगण महि शशि सम निज प्रकाश फैलांय
शङ्कर हूं पुलकित तनु हरि के सङ्ग ठुमकते जांय ।
लीलाधर की यह लीला लख सब के चित्त सिहांय ॥

पूर्ण पूर्णिमाको अनन्द लख चपल नैन मद माते हैं।
'राधेश्याम' बहुरि कब हुइ है ऐसी आस लगाते हैं॥

नाटक की लय नम्बर २१०

तर्ज़—(दुलहनियाँ घना रहे तोरा यार)

कन्हैया बेड़ा करो मेरा पार।

लहरें उठीं और छाई अंधिरिया, देखो पार लगैया-
दाऊजी के भैया, बही मोरी नैया,–(कन्हैया०)
छिद्री नवैया है गहरी है नदिया, कोई नहीं है बचैया,
न सूझे खिवैया, कैसी करूं दैया,–(कन्हैया०)
अर्ज़ीपेमरज़ीहोगावे यूं 'राधेश्याम', रोवेक़साईकीगैया,
करो आ सहैया, तुम्हीं बाप मैया,–(कन्हैया०)

नाटक की लय नम्बर २११
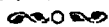
तर्ज़—(आओ २ छैला मैं मधवा पिलाऊं)

छोड़ो छोड़ो बैयां न बातें बनाओ।

करो ऐसी न घात, नहीं अच्छी यह बात, मत
झगड़ा मचाओ। काहे इठलाओ, जाओ जाओ।
चुरियां मोरी न मुरकाओ-सइयां, गारी दूंगी
न लागूंगी पैयां, हुए दीवाने क्यूं यह बताओ।
'राधेश्याम' क्यों रोकते, चलतेमें करो रार। कंसराज
से जाय कर हाल-करूं इज़हार। चलो हटजाओ,
हटजाओ, हटजाओ, हां॥

नाटक की लय नम्बर २१२

तर्ज़—(आओ गुइयाँ लपक २)

जा रे बइयां न झटक झटक, हटो, मानो, शर्माओ हट आओ ॥ गारी सुनाऊँ, मांपे लेजाऊँ, सर की मटुकी, गिराय क्यूं दई, पटक झटक । क्यूं इठलाते दुन्द मचाते, 'राधेश्याम' लेउ मान, कंस पे जाऊं, हाल सुनाऊँ, छोड़ो न राह, चराओ गैयां झपट सटक॥

नाटक की लय नम्बर २१३

तर्ज़—(मान ले गोरी हमारी बात)

जाने दे रारी क्यूं इतरात, यशुमति से पिटवाऊं, कंस से-ठीककराऊं, देओ न गारी, जाओ बिहारी, बइयां हमारी-गहो ना । लो 'राधेश्याम' मान, नहीं दूं दान, कहा तोहे सूझे अनारी, जो रोकत गैल हमारी, करे उत्पात॥

नाटक की लय नम्बर २१४

तर्ज़—(नाचें गावें नारी प्यारी चलो वारी)

गारी क्यूं दे प्यारी, मैं वारी, सखी दान तो दिलारी।
दधि की बेचनहारी, मैं वारी सखी दान तो दिलारी॥
नीकी नुकीली नई आज मिली 'राधेश्याम'
आवे है रोज़ और जावे है घूम २ देवे न मोहे दान ।
इधर उधर-नज़र न कर होश में आजा,
मारी, मतवारी, कुमारी, बलिहारी ॥

नाटक की लय नम्बर २१५

तर्ज़—(चलती चपला चञ्चल चाल)

सुनरी यशुदा तेरा लाल सांवरिया देय गारी ।
घाटन घाटन में छेड़े, माखन मांगे और घेरे ॥
रोज़ रोकत गैल हमारी--रारी ।
कितै जांय कैसी करें कौन भांति समझांय ।
घर बाहर नहिं चैनहै गाम छोड़ कहाँ जांय ॥
सुन सुन सुन सुन यशुदा री धन धन धन तेरी बनवारी॥
बरज 'राधेश्याम' मुरारी--प्यारी ।

नाटक की लय नम्बर २१६

तर्ज़--(सुन २ मोरी ख़बरिया जान)

धन धन तेरी कन्हैया कान ।

सुन सुन यशोदा श्याम कियो मोहे परेशान ।
मैं दधि बेचन गई वृन्दावन आन के रोकी डगरिया कान । 'दान हमारो दये जारी ग्वालिन' अस कह पकड़ी मटुकिया कान ॥ बइयां पकड़ कर अंगिया मसक कर गारी दे मारी नज़रिया कान । चुरियां मुरकाय कर ग्वालिन बुलाय कर फोरी हमारी गगरिया कान ॥ कछु खायो कछु सखन खबायो लीन्हीं ऐसी ख़बरिया कान । 'राधेश्याम' नित छेड़े गुजरिया ऐसो है तेरो संवरिया कान ॥

नाटक की लय नम्बर २१७

तर्ज़--(तोरी छुलबल है न्यारी)

तेरो नट खट बिहारी, रोके पनघट पे नारी,
करे घाटन पे ख्वारी, संवरिया श्याम ॥
सबै देवत है गारी, लेय घूंघट उघारी,
रोज़ रोके हमारी, डगरिया श्याम ॥
ग्वाल बाल साथ लाय, मन्द २ मुसकाय,
फाड़त है अंगिया चुनरिया श्याम ॥
करै खटपट दिन रात, नहीं माने है बात,
बीर सब से इठलात करैं त्राहि त्राहि त्राहि॥ ८॥

नाटक की लय नम्बर २१८

तर्ज़-[प्यारे परदेशा न जाओ साजना]

जारे निज गेहा चला, ओ साँवरे ।
परे हट मोहन दधि मत छीन, गोरस भू न गिरा, बुरे तुम कान बुरे तुम कान । क्यूं लूटत दधि अब आन, जाओ मान, 'राधेश्याम' देऊँ गारियां ॥

नाटक की लय नम्बर २१९

तर्ज़--[मज़ा देते हैं क्या यार]

सुन ले नेक यशोदा बात तेरे कारण बन २ भटकी ॥
भारी रारी तेरो कन्हैया, गारी देय सबन कूं दैया,

खावे लूटके माखन मैया,अब तो है तोही सों अटकी॥
लेकर सङ्ग सखा जब आवे, घर२ माखन जाय चुराय।
खावे खिलवावे फिंकवावें, बोलें हम तब जावे रटकी॥
यमुना जल भर जब मैं आती,सखियोंके संगमौजउड़ाती।
मारग रोक लड़े उत्पाती,बइयां झटकी गागर पटकी॥
तबलों आए नन्द कुमार, भागीं देख के सब ब्रजनार।
कहता 'राधेश्याम' पुकार, हो गई जय श्रीनागरनटकी॥

नाटक की लय नम्बर २२०

तर्ज़--[राजा जोबन बरसन लागे]

सखी मोहन निरतन लागे,श्री'राधेश्याम'सुखधामआज।

बोल

तत्तत्ता तृक थुं थुं झिझकत थो तड़ांग तक थुं थुं
तिक धा तक २ थेई। तक थुं थुं तिकधा तक तक
थेई ॥ तक थुं थुं तिक धा तक तक तक थेई ॥
तक थेई (सखि मोहन निरतन लागे)।

परन

धारण धेकट धातृक धेकट क्रिदिङ्केटदीं
गिणना कत्तिट गिगतिट धातृक धेकट कत, धेतिर-
किट तक ता तिरकिट तक तक्राण तक्राण धा-क्राणधा

नाटक की लय नम्बर २२१

तर्ज़-[बहारमोरे प्यारे गुलशन में आई बहार]

झुलाओ सब सखियो, राधहिं हिंडोरे झुलाओ।

झूम झूम झुक झपट झका झक, झक झोर झोंके झुकाओ। सर्वाङ्ग सुन्दर सलोने सुरों से, सावन सुहावन सुनाओ॥ सजनी, सुहासिन, सुभाषिन, सुनयनी, सजके सिंगारों से आओ। रोगों के रूपों से रानी रंगीली को, री आओ रिल मिल रिझाओ॥ झूले हैं 'राधेश्याम' पैंगें बढ़ावें, सखियों के मनमें है चाओ।

नाटक की लय नम्बर २२२

तर्ज़-[सुन प्यारे मत मन में तू घबड़ारे]

घन गर्जे, जिया डरसे धड़के लरजे॥

लो आई घटा घनघोर नाच रहे मोर करें हैं शोर, बीजुरी चमके, तन पीर होत थम थम के॥ पुरवाई हुई दुखदाई, घिर आई घटा झर लाई, जिया 'राधेश्याम' कम्पाय, थर थररररर ३॥

नाटक की लय नम्बर २२३

कारे कारे आये बादर चहुंदिशि भारी।

पिया २ बोलत है पपिहा कूकत है दई मारी कोयलिया।
निशि कारी अँधियारी डर भारी है प्यारी॥ १॥

कूकत मोर चलत पुरवाई, दामिनि दमके न्यारी।
पियारी सखी गरजें बदरे बरसें भरसे ॥ २ ॥
मनकी बात कहा कहूं सजनी श्याम बिना दुख भारी।
सुनो री आली दुखड़ा भड़का मुखड़ा उतरा ॥ ३ ॥
'राधेश्याम' सुनो बिरहिन की दर्शन दो बनवारी।
सो प्यारे मोरे अंखियां तरसत तुम बिन मोहन ॥ ४ ॥

नाटक की लय नम्बर २२४

तर्ज़--[काहे कलपाय जलाय प्यारी]

कारे घन आये सुहाये छाये भाये पानी लाये
भरें किलकारियां रे। पलभर में जलथल में जल बाढ़ो
बहिचाले नद्दी औ नाले खितार। गुलशन में फूलन
में कानन में बाटन में रपटन अंधन से हिसाब॥
गाजत आवत धावत लावत बरसत हैं चहुंओर।
पैंग बढ़ावत झूलत कीरति लाली और नन्दकिशोर।
संग सहेली नवेली झुलावत गावत राग मल्हार।
फूलीहै फूलसी फूल हिंडोलेमें कीरति-रानि-दुलारि।
झूलें उमङ्ग सों रङ्ग और ढङ्ग ये देख अनङ्ग लजाय।
'राधेश्याम'गुलाम मगन मन वारी दोऊ पर जाय॥

नाटक की लय नम्बर २२५

तर्ज़--[अरे हाँ हाँ जाने]

अरे हां हां कारे घोर गरज के बादर आये

जल बरसन को। कोयल बोली रैन अँधेरी झर लाये बदरा-अरे रिमझिम झरसे सन सन बरसे हर्ष 'राधेश्याम' ॥

नाटक की लय नम्बर २२६

तर्ज़—[बनो न प्यारी तुम नादान]

खेलत होरी श्रीनन्दलाल ॥

ग्वाल बाल संग, भरे झोरियन गुलाल लाल ।
चलत फिरत गहत मलत फेंकत रङ्ग गुलाल हाल ॥
बनवारी सन बन वारी थकीं चलत ग्वाल चाल ।
'राधेश्याम' श्याम जीते भागीं तत्काल बाल ॥

नाटक की लय नम्बर २२७

हे जगदीश ! हे परमेश्वर ! हे परमातम देवा !
अचल अनूपा नाम न रूपा करत सिद्ध मुनिसेवा ॥
जय अविनाशी घट घट बासी करुणासिन्धु खरारी।
जय अविकारी लीलाधारी नट नागर बनवारी ॥
भव-भय-भञ्जन जन-मन-रञ्जन खल-गञ्जन सुखकारी।
करुणा-सागर सब गुण आगर नन्दनँदन दनुजारी॥
जय२ जनपति जय२ जगपति जय श्रीपति गिरिधारी।
जय जय 'राधेश्याम' विहारी जय वृषभानु दुलारी॥

नाटक की लय नम्बर २२८

उत्सव कथा का निशदिन पल छिन,
दिन दिन हमेशा क़ायम रहे ।
सज्जनों का आना सदा शुभ हो,
आनन्द का पाना सदा शुभ हो ॥
सदा शुभ हो, सदा शुभ हो ।
आज आनन्द का वक्त मिला,
ज्ञान का सूर्य यहाँ पे खिला—
वक्ता खुशी और श्रोता ख़ुशी हो,
यह ही जलसा ख़ुशी का दायम रहे ।

ग़ज़ल सोहनी में नम्बर २२९

जन्म वह किस अर्थ का है देह वह किस काम की ।
रट लगाई है नहीं जिसने हरी के नाम की ॥
अन्धकार अज्ञान माया स्वप्न में आते नहीं ।
जिनके मन में रम रही सूरत मनोहर राम की ॥
जिनको ईश्वर ने दिया है प्रेम भक्ती का प्रसाद ।
उनको कुछ इच्छा नहीं इन्द्रादि के धन धाम की ॥
प्रेमहै मेरा पिता और भक्ति मेरी मात है ।
यह जुगल जोड़ी है मेरे हृदय के विश्राम की ॥
मैं सदा सेवक रहूं और वे सदा स्वामी रहें ।
आरज़ू हर रोज़ है बस यह ही 'राधेश्याम' की ॥

गाना नम्बर २३०
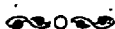
ओ प्रेम ! मुबारक हो, तेरी साल गिरह है ।
उलझे हुए हृदय को, यह जञ्जाल-गिरह है ॥
अब और गिरह देने को आई है गिरह यह-
या शुभ-गिरह के आने की यह फ़ाल, गिरह है ॥
भादों के महीने में ही, दौं तन में लगी थी ।
बरसात ही में आग हरे बन में लगी थी ॥
मैदान था, या प्रेम का मन्दिर था वो मुक़ाम-
यह चश्म-जहां नाथ के दर्शन में लगी थी ॥
क़िस्मत से मुसाफ़िर की वो पैवस्ता होगये ।
बारह महीने क्या हुये पौ बारा हो गये ॥
हम हार गये, हार गले का बना लिया-
सब राज़ उसी रोज़ से दर परदा होगये ॥
वो तीर चले हैं कि क़लम चल नहीं सकती ।
ताले पड़े हुए हैं ज़ुबां खुल नहीं सकती ॥
यह फ़र्ज़ है कि दिल की लगी, दिल ही में रहे-
वो कील गाढ़ दी है जो अब हिल नहीं सकती ॥
ओ शौक़ ! आये साल यही मस्त बू रहे ।
ऐ राधेश्याम ! मुझको यही जुस्तजू रहे ॥
मैं तुझमें रहूं और तू आंखों में मेरी हो—
देखूं जिधर, निगाह में-सब तू ही तू रहे ॥

हिण्डोला नम्बर २३१

हिण्डोलना में फिर झुलियो महाराज !
प्रथम दशा हम सबकी देखो, राधावर ब्रजराज !
भाई-भाई लड़े मरत हैं, कठिन समय है आज !
प्लेग, कालरा इधर सतावत, उधर न मिलत अनाज !
जहां नित्य झींकना पेटका और वस्त्र पर गाज !
तहां तुम्हारे राग भोग का सरे कौन विधि काज ?
आरत हम सब शरणागत हैं, हैं दिन दिन मोहताज !
प्यारी संग झूलनो झूलत, तुम्हें न आवे लाज !
नाथ वेग पतवार हाथलो, बूड़ो धर्म्म जहाज !
'राधेश्याम' ग़रीब हैं हम सब तुम हो ग़रीबनिवाज !

ग़ज़ल नम्बर २३२

बिहार भूमि अपनी देखने को,
बिहारी फिर एक बार आजा ।
बहुत समुन्दर की सैर करली,
अब अपने मन्दिर में यार आजा ॥
बिगड़ रहा है वतन यह तेरा,
उजड़ रहा है चमन यह तेरा ।
हर एक दिल को, हरएक गुल को,
है तेरा बस इन्तिज़ार आजा ॥

न अब वह दर्शन, न वह सुदर्शन,
मसान सा हो रहा है मधुबन।
सुनादे फिर अपनी वह मधुर धुन,
ओ मुरलीवाले मुरार आजा॥
है जंगे कुरुक्षेत्र आज घर घर,
अनेक अर्जुन से अब हैं कायर।
यही समय है दे अपना लेक्चर,
ओ गीता के लेक्चरार आजा॥
यह धाम है लीलाधाम तेरा,
यह देश है 'राधेश्याम' तेरा।
सुधार इसको, संवार इसको,
न देर कर बेक़रार आजा॥

जन्माष्टमी का भजन न० २३३

जन्म क्यों व्यर्थ लिया, सरकार?
लिया जन्म ही था तो जगका, संकट देते टार।
मधुर बांसुरी बजा प्रेम की, फैलाई गुञ्जार!
फिर यह डायन फूट रही क्यों, बोलो नन्दकुमार?
कंस और शिशुपाल के वध से, हरण होगया भार?
उनके तुल्य यहां फिरते हैं, कितने दैत्य अपार!
अन्न नहीं है, वस्त्र नहीं है, छाये प्लेग, बुख़ार!

'जन्माष्टमी' तुम्हारी का फिर, कैसे हो त्योहार ?
नहीं टरा है भार भूमि का फिरसे हो अवतार ॥
इसी लिये तक रहे एक टक, 'मोहन' कारागार ।

आरती गान नं० २३४

जय जगदीश हरे, जय जय जगदीश हरे ।
अखिल लोक के स्वामी, अति आनन्द भरे ॥
दानी, दीनानाथ, दयानिधि, दीनबन्धु, दाता ।
हम सब पुत्र तुम्हारे, तुम हो पिता-माता ॥
अशरणशरण, अमर अविनाशी, अज, अंतर्यामी ।
हम सब दास तुम्हारे, तुम सब के स्वामी ॥
गिरा-ज्ञान-गो-तीत, गुणाकर गुणनिधि, गुणखानी ।
हम सब शिष्य तुम्हारे, तुम गुरुवर ज्ञानी ॥
'राधेश्याम' प्रभो, परिपूरण, प्रकटत पर काजा ।
हम सब प्रजा तुम्हारी, तुम हो महाराजा ॥
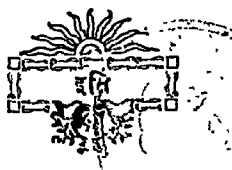
वीर अभिमन्यु

(लेखक-प० राधेश्याम कथावाचक)

बम्बई की "न्यू अलफ्रेड नाटक कम्पनी" का यह लोकप्रसिद्ध नाटक है। इस नाटककी बदौलत कंपनीने खूब धनार्जन और यशार्जन किया है। हिन्दीमें अपनी शान का यह पहला ही नाटक है जो पारसी नाटक-मञ्चपर खेला भी जाता है और पञ्जाब विश्वविद्यालय की "हिन्दीभूषण" तथा "एफ़, ए" परीक्षा की पाठ्य पुस्तकों में भी स्वीकृत हुआ है।

संयुक्त प्रान्त के शिक्षा-विभागने भी अब इस नाटक पर दृष्टि डाली है, और इसे अपने 'ऐङ्गलो वर्नाक्यूलर तथा वर्नाक्यूलर स्कूलों में पारितोषिक देने एवम् लाइब्रेरियों में रखने के लिए चुना है।

हिन्दी के मशहूर अख़बारोंने भी इसके लिए बढ़िया बढ़िया रायें दी हैं। देखिएः-

सरस्वती—"नाटक में वीर और करुणारस का प्राधान्य है।"

विजय-"नाटकके पात्र आदर्श हैं। कविता रसीली और मधुर है।

भारतमित्र-"वीर--अभिमन्यु हिन्दू आदर्श को सामने उपस्थित करनेवाला नाटक है।"

ब्रह्मचारी--"रोचकता और रसपरिपोष का तो यह हाल है कि पढ़ते पढ़ते बीच में छोड़ देना किसी विरले ही पुरुष पुङ्गव का काम होगा।"

आज-"अपने पुरखों के गौरव तथा कर्त्तव्य परायणता का चित्र उत्तम रीति से खींचा गया है।"

सनातनधर्मपताका-"इसके पुरातन भाव और नई पद्य रचना से हिन्दी साहित्य के प्रेमियों को अवश्य ही यथेष्ट लाभ पहुँचेगा"।

प्रताप--"स्टेज पर सफलतापूर्वक खेला जाचुका है,हम लेखकको बधाई देते हैं"।

प्रतिभा-"नाटक बहुत अच्छा है। बड़ी सफलतासे खेला जाता है"।

तीसरी बार दस हज़ार छपकर तयार हुआ है। दाम १) रु०।

पता-श्रीराधेश्याम पुस्तकालय, बरेली।

'श्रवणकुमार'

(ले०--प० राधेश्याम कथावाचक)

(यह नाटक पञ्जाब विश्वविद्यालय की 'हिन्दीरत्न' परीक्षा की पाठ्य पुस्तकोंमें चुना गया है और संयुक्त-प्रान्त के शिक्षा विभाग द्वारा 'एङ्गलो वर्नाक्यूलर तथा वर्नाक्यूलर स्कूलों' की लाइब्रेरियों में रक्खे जाने एवम् पारितोषिक दिये जाने के लिये स्वीकृत हुआ है)

"श्रीसूरविजय नाटक" समाज के स्टेज पर खेला जानेवाला यह वह नाटक है जिसकी तारीफ़ लिखकर नहीं हो सकती। जिन्होंने उक्त नाटक समाज में जाकर इसका खेल देखा है वे ही जानते हैं कि यह नाटक क्या चीज़ है।

दिल्ली के दैनिक "विजय" ने इस पर यह राय दी है:-

'नाटक मनोरञ्जक और शिक्षादायक है'।

मथुराके मासिक पत्र "गौड़हितकारी" की राय है:-

'इस पुस्तक के पढ़ने पर श्रवण बालक के विचारों का, उसकी मातृ-पितृ-भक्तिका वह चित्र हृदय पर खिंचता है कि जिससे चित्त गद्गद् होजाता है'।

काशी के दैनिक पत्र-"आज" ने राय दी है कि:-

'इस नाटक के नायक रामायण वर्णित प्रसिद्ध मातृ-पितृ-भक्त श्रवणकुमार हैं। और उनकी आदर्श मातृ-पितृ-भक्ति तथा उसके परिणाम ही इसमें दिखाये गये हैं। कविरत्न जी को नाटक के रोचक और परिणाम--कारी बनाने में अच्छी सफलता हुई है। अपनी ओर से उन्होंने जिन पात्रों की कल्पना की है उनके चरित्र नाटक की उद्देश्य सिद्धि में पूर्ण रूप से सहायक हैं अर्थात् उनके द्वारा माता पिता को सेवादि से सन्तुष्ट रखने और इसके विपरीत आचरण की भलाई और बुराई का चित्र दर्शकों के मन पर अधिक स्पष्ट रूप में अंकित होजाता है।

श्रीसूरविजय नाटक समाज बरसों से इस नाटक को बड़ी सफलता के साथ खेल रहा है। इस नाटककी भाषा साधु और ओजस्वी है, पद्य भाग भी अच्छा है।

यह नाटक चौथीबार छपकर तैयार हुआ है। दाम ॥।)

पता--श्रीराधेश्याम पुस्तकालय, बरेली।

(ले० ... म कथावाचक)

"राधेश्यामकीर्त्तन" भजनों की पुस्तक है। इसके भजन बड़े ही मधुर और रसीले शब्दों में रचे गए हैं। जहाँ कहीं भी हार्मोनियम और तबले पर यह भजन गाए जाते हैं वहां सुनने वाले तसवीर होकर रह जाते हैं। बड़े बड़े कठोर और शुष्क हृदय वाले भी इन भजनों को सुन कर पसीज उठे हैं। ईश्वर प्रार्थना; विद्या की महिमा, संसार की असारता, प्राकृतिक दृश्य, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, नीति, सदाचार, कर्त्तव्यशीलता, पातिव्रत धर्म आदि नाना विषयों पर सुन्दर भावों से भरे हुए मधुर रचना वाले, अनेक भजन इस पुस्तक में मिलेंगे। यह भजनों की पुस्तक लोगोंने इतनी ज्यादा पसन्द की है कि थोड़े ही समय के भीतर इसको छै दफा छपवाना पड़ा है। दाम ।।)

भक्त-स्त्रियां।

(ले० श्रीप्रियम्वदा देवी श्रीवास्तव्य)

लीजिए, अपने ढङ्ग की निराली, और शिक्षाप्रद पुस्तक। यह वह पुस्तक है जिसकी एक एक प्रति प्रत्येक हिन्दू सन्तान के घर में पहुँचना चाहिए। माताओं और बहनों को पढ़ने के लिए अच्छा साहित्य प्रस्तुत करने का जिन हृदयों में उत्साह है उन को सबसे पहले इस पुस्तक पर ध्यान देना चाहिए। पुस्तक की लिखने वाली देवी जी हिन्दी संसार में विख्यात हैं। पुस्तक का विषय उसके नाम ही से प्रकट है। टाइटिल पर सुन्दर और आकर्षक एक तिरङ्गा चित्र भी दिया गया है। मूल्य ।।)

द्रौपदी लीला।

(रामायण के ढङ्ग पर महाभारत की एक कथा)

पाँचों पाण्डवों की प्रेयसी रानी द्रौपदी का कौरवों की भरी सभा में पापात्मा दुःशासन के हाथों से जिस समय चीर खींचा जाने लगा था उस समय की दुःख और दर्द से भरी हुई घटना का इस पुस्तक में उल्लेख है। पं० राधेश्याम जी की यह सबसे पहली कविता है। दाम =)